Chap-3

तृतीय अध्याय

कृतियाँ और कृतिकार
बाहुल्यः— प्रस्तुत प्रवचन के बारे में ही मक्खलाल की समुद्र परम्परा पर

लड़ौम में विचार करते हुए यह तय किया जा हुआ है कि नामाकार शृंखला मक्खलाल उन रचनाओं के प्रकाश स्थापन के रूप में हिंदी में कर्म काय्य के बन्धनों का नाम नहीं है जिन्हें मक्खलाल का गुणगान, उनका व्यक्तित्व परिषय क्षेत्र उनका नामकरण किया न दिया रूप में प्रस्तुत किया है।। मक्खलाल, तथा उनके सन्तानों रचनिता नामाकार रचनाओं के समें रूप में पुर्वक प्रवचनम् बयानों के बन्धन के विचार किया जा हुआ है। अतः प्रस्तुत विख्यान में इस परम्परा में नाम साधी समस्त शृंखला तथा उनके रचनिताओं का सप्तक परिषय उपस्थित किया जाता।

विषय-प्रवचन के बन्धनी इस परम्परा की कोटि में नाम साधी रचनाओं की जो सूची दी गयी है उसमें से शब्द-रचनाओं वेदुङ्ग बने है। तत्त्वक उनके वेदुङ्ग ने प्राप्त होने वाले लेखों में हम विश्लेषण रक्षित किया विचार है।। उपलब्ध रचनाओं तथा उनके रचनिताओं के वेदुङ्गसे पूर्व है, लड़ौम में, निम्नलिखित विख्यान सूची को तय कर लेंगा जानकार होगा—

(१) मक्खलाल की परम्परा में अनेक पृष्ठ लिखे गये जिनकी सूची प्रस्तुत प्रवचन के प्रयास विख्यात में दी गयी है। इस सूची से प्रकट है कि वे रचनाओं के प्रकार की हैं—

(२) हिंदी की मौलिक रचनाएं,
(३) टीकाएं और शुद्धावाद,
(४) हिंदी हटाने भाषाओं में प्राप्त होने वाली प्रयास रचनाएं और,
(५) हिंदी काहित्यरचनाएं।

(२) मौलिक रचनाओं की हराै समा को हृदय में बांटी है— एक जो वे रचनाएं जो सामूहिक विशिष्टता व पर बाध्यार्थित नहीं हैं किंतु मौलिक व दृष्टि में प्राप्ति विशिष्टवाद सम्मिलन के वक्त के और वक्तियों का पुरात्ता लिया गया है। इसी प्रकार के वे रचनाएं हैं जिनमें विशेषता के ग्रन्थों के वर्णन को प्रतिपाद करना गया है। इसी रचनाओं में "मक्खलाल" के ग्रन्थों का सम्पूर्ण पालन दुसरा है।
(3) - ये रचनावें प्रायः हय्यम, दोहा और चौपाई शैली में सिक्स है जो मनोक्रान्त की एक तोपकईश शैली कहीं जा सकती है।

(4) - हन रचनाओं का वामाफिक और साःष्ट्रूतिक विविषाक वन्यायन में विषिष्ट योगदान रहा है क्योंकि विवेकन प्रस्तुत प्रभाव में स्वतंत्र हुप के परवत्रों वन्यायों में किया जाता है।

(5) - पूर्ववतीं वन्यायों में यह निषिद्ध किया जा चुका है कि मल्लकारितात्मक रचनाओं में इसे ऐसी रचनाएं भी है जो एक-एक मतलब को लेकर लिंगी गयी है। श्री श्री कांस्तिन दुसुम निरस्तिक "तसुपु श्री कांस्तिन, ऐसी ही रचना है जिसमें कवियों के जीवन में प्रभावित होने वाले वनेक मतलबों और विषिष्टों का प्रभाव दिया गया है। प्रकाशान्तर से यह रचना वन्याय की परिषद में नहीं भागी क्योंकि इसमें नामावधारी का वापस या शैली नहीं मिली। ऐसी प्रकाश एक-एक मतलब के विश्व की लेकर लिंगी गयी वनेक रचनाएं हिन्दी तथा हर हानिकारक के काष्ठों में मिली है। ऐसी रचनाओं का वन्याय की परिषद के साथ की है।

ऐसी प्रकाश "प्रकाशान्तर" में श्री विवेकन हरिने कवियों का श्रीकृष्णु प्रस्तुत करने से पूर्व वामा में नामावधार कृत मज़ीपाल, भ्राताकृत मन्नादादारी और मारतेन्दु के "उचारार मज़ीपाल" से योगावाश दाबे-डिवास कृतांचा उद्घाटन किया है। किन्तु यह भी उल्लेखनीय है कि जहां विवेकन कवि कांस्तिन वनस्पति उपकुल रचनाओं में नहीं मिलता, वहां श्री विवेकन हरिने ने त्यस्त उसकी जीवन में संबंधित तत्त्व भव्या घटना के बाराक पर हैं का निर्माण भी बड़े बड़े किया है। सिद्ध हुने और संस्था छूटे निरल है।

वह इसकी भावना वरी जित्या है। बाद गलने का वरी वनस्पति हरिने कवियों जैसे स्वतंत्र के वनस्पति की परम्परा में नहीं रसा जा सकता। फिर भी ऐसी कवियों के वरी जित्या जैसे स्वतंत्र को एक छोटी से छोटी बहुत कहा जा सकता है कि उनके द्वारा वनस्पति के लिए जाने काली एक स्वतंत्र साहित्यिक प्रमुख की लघु किया जा सकता है। इसके विश्वास भी लेकर की यह संभावना है कि ऐसी रचनाएं "भिन्न-भिन्न-भिन्न" विश्व एक बहुत-भिन्न कार्य संरक्षण का हुप भी धारण करें किन्तु इसके लिए स्वतंत्र लोक और नूतनता की शैक्षा है।
की दृष्टि से सम्प्रभु नहीं किया गया है। इस परम्परा में प्राप्त होने वाली मौलिक रचनाएँ तथा टीकाएँ और ब्रजाद का परिचय संबंध में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

क्रिहिन्दी की मौलिक रचनाएँ

-----------------

6- मकनामाली - नववासः

प्रस्तुत 'मकनामाली' के रचिता बोस्वासी हिन्दुरिखें जो के शिष्य श्रीहिंदु महद्वास जी हैं। इसका प्रथम संस्करण सन 1650 ईंदन में होिक महद्वास द्वारा प्रकाशित किया गया था जिसके सम्पादक साराजयकुमार जी हैं। 'मकनामाली' का रचनाकाल शात नहीं और न ही स्वयं ऋषि ने अनुवादित किया है। इसके दौरान राजनीति जीवन राम व उनका साहित्य में इसका रचनाकाल सन 1650 ईंदन माना है जिसके दौरान बशीर महद्वास का संस्करण प्रकाशित किया है।

हाँ जीवनदेव ने महद्वास का रचनाकाल सन 1655 ईंदन माना है जहाँ यह कहा है कि मकनामाली में नारायणदास (नामदास) का संस्करण होने से यह रचना महद्वास के तुरंत ही सम्पन्न पत्रिका लिखी गयी होगी। इस प्रकार मानते हैं जीवनदेव जी की नारायणदासीय रचना कहीं तक उग्रित है कि तथा द्वितीयतः महद्वास का रचनाकाल सन 1645 ईंदन माना है जिसमें कई वास्तविक रचना ज्ञात नहीं कहीं जा सकता। इसके विषय में द्वितीय श्रीहिंदु ने बताया है, यह साहित्य से विचार कर इसका सम्प्रभु है। नववास जी ने बसकी रचनाएँ में भी से केल चार

क्रिहिन्दी की मौलिक रचनाएँ क्रमशः संख्या 12 का सन 1650

6- ज्ञेश्वर- हाँ राजनीति द्वारा 'यतीन्द्र'-श्रीहिंदु नववास और उनका साहित्य (प्रकाशित)

सनंतर के प्रारंभिक अंश। वरन्त्य का भव्य शाल खिलाया

---नववास चुट श्री बजारिया लीला तथा पपाती-२० प्रेमालीलीला-पु.२२४, ईंद १५४
और “रहस्यमंजरीलीला” का सं 1658 विषो में लिख जाने का
उल्लेख है। इसके प्रकार है कि भुवनाक्षी का रचनाकाल-लाता 50 वर्ष
अध्याय 1655-1658 विषो रहा है। “मक्कानायाबली” में “मक्कामल”
का उल्लेख होने है पी यह स्पष्ट है कि इसकी रचना सं 1650 विषो
(मक्कामल का रचनाकाल) के पश्चात लाता 1660 विषो के लाता छह होगी।

“मक्कानायाबली” में छत 147 दोष हैं जिनमें 123 मक्काश्च का
पुनित स्मरण है। इसके प्रणाली का उद्देश्य, कवि के अनुसार, मक्काश्च का
यह वर्णन है क्योंकि “बुर्टे” को निश्चित यह है क्योंकि मक्काश्च के यह के प्रति है श्रीकाल है।
जो मक्काश्च से मक्कानायाबली का वर्णन होकर सुनता है, उसमें भक्ति तो बहुत ही
साधारण है साधारण है हरि है उसके उपासना होते हैं। “पिस मक्कानायाबली ने बत्तवार दीया
होकर “हिते” जी का एकांकर नाम स्मरण बख्ते किया तो उसे हिते जी बपना
लेते हैं”। जो ऐसे प्रभु का स्मरण नहीं करता, वह मुखस्त है और यह इन
संसार में देख-समकाल बपना हुरा करता है। इसीलिए कवि ने सेरिलिकों का
स्मरण करने के साथ उनके परिक्रमण तथा अन्य सम्प्रदाय के मक्काश्च का यह
वर्णन किया है।

“मक्कानायाबली” के 123 मक्काश्च को दक्षिण में रखा जा सकता है:-
पोरायिक और ऐतिहासिक।
(क) - पोरायिक मक्कानायाबली में मक्कामल की माति पोरायिक
काव्य की एक विस्तृत वृत्ती नहीं मिलती। कवि ने
hसमे केलू शुक्ल, नारद, उद्व, जनक, ग्रहलाल और सन्तादिक नामक 6 पोरायिक
मक्काश्च का पुनित स्मरण किया है।
(ख) - ऐतिहासिक मक्काश्च :- इन ऐतिहासिक मक्काश्च की संख्या 117 है जिन्हें दो
उपकार में रखा जा सकता है: कवि और इतर मक्कानायाबली।
(ग) - मक्कानायाबली इसमें लक्ष्म 72 कवियों की नामांकी है जिनमें है
16 कवियों का वर्णन नामांकी विचार में नहीं है, श्रद्धा
कवियों का नाम-स्मरण नामांकी के कविया है। इन कवियों
कवियों के नाम इस प्रकार है:- भव्य चित्र, लिहारातिन,

1 - सबसे से है उनके नाम का वल की उख्तार।
दोहा चीपाई कह भक्त उपर चार।। वही, 20 रहस्यमंजरीलीला
रसिक मुकुन्द, तेज्ञानवदास, मनोहर, वाकृरुण, नागरीवास, विहारीवास, खान, मुकुन्द, चित्तामणि, नवल, कस्तकी, सरस्वत, नागरीवास, मायावदास, रामदास और नारायणदास (नामाख).

(2) - हरा मुकु - मफनामाहली में वरिष्ठ पेडिहासिक - मफन -कवियों के वरिष्ठ मार्ग ४५ मफन मकों का भी ज्योति स्थायित है। वे मकु मन विचित्र सम्प्रदाय के मभादी हैं। किन्तु इनमें से ४५ मकों की मफनाहली महामध्यका है। इन सम्बन्ध के रूप में उनका वरिष्ठ हो चुका है। इन सब को मफन मकों की मफनाहली यहाँ प्रस्तुत की जा रही है: - राजनाथ, नाराजन, श्री विलास, जनाथ, श्रीजनद मुकु, महाकुण्ड नन्दी, नानक, श्रीद, वाणिज्य, मोहनवास, दुःख, गोपालसार, बुद्ध गोपालकैदी, वैष्णव, बुद्धवास, नागर, हरियास, नानिदास, महान भक्त, रायग्राम, हरियास, दुरुप, विद्या कथान, रायवास, ब्रह्मचरित गुरुवारवाली, धीमूल, महापति और गोपिन्ददास।

कालम के दृष्टिकोण से यह मफनाहल की परम्परा की प्रथम रचना कही जा सकती है। मफनाहली रायग्रामसम्प्रदाय के प्रर्थक श्रीहित दरिबक गोपालसार के शिष्य थे। वे वहीं से कितने सम्बन्ध में रायग्रामसम्प्रदाय के मकों का सारण पताकास्त। यहां है किन्तु विचित्राचारीमप्रदाय, वस्त्राध्याय, चैतन्यमप्रदाय तथा रामनाथ-सम्प्रदाय, तारकम सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय, सही सम्प्रदाय मानक के मफन-साक्षात्तों और कवियों का उल्लेख होना से इसे साम्प्रदायिक दृष्टिकोण पर नायागित नहीं कहा जा सकता।

2- श्रीनाथ की कथा:- श्री म-रसिक बनकू मैथवाद से-

प्रस्तुत श्रीनाथ की कथा के तेजक मैथवाद की है। इसका प्रथम संक्षेप श्री रायग्रामसंकीर्त, श्री व्यासपीठ, दुरुप, श्री दुरुप से संव दो २०२२ में प्रकाशित हुआ है। मैथवाद संगीत का जीवन चरित कहाँ है।

2- मुकुन्द - मफनामाहली, दोहा - संव - ६९०-६९४।
परन्तु बन्तःसालय से यह सिद्ध है कि महाप्रसु ज्ञानेव उनके कुलुक थे 4 और स्त्र्य लेकर राधिकानाय का शिष्य था 2 बन्तःसालय से यह भी प्रकट है कि रचितार्थ अन्वर या अन्वर राज्य का निवाही था 3 किस ग्रंथ का रचनाकाल सं 6450 वि 13 से लेकर सं 16450 वि 17 तक है किन्तु ग्रंथ की रचना सं 6450 वि 18 में हुई जो कि निम्नलिखित बन्तःसालय से स्पष्ट हैं।

(1)- यह वर्तमान तीत तिथि सौकेस धी पतिः।
शावण शुक्ल एकादशी, मुख्य वेष्णवदास 11। - पृ 30, दोहा 65

(2)- संवत सौलह से वस्त्री मात्रा मास विचित्र।
वह चौरंज मध्यमा तिथि वेष्णवदास पतिः। —पृ 41, दोहा 61

(3)- श्री गारकेन नाथ की, तीता अस्तित्वाद।
संवत सौलह से श्री, गार वेष्णवदास 11। —पृ 906, दोहा 62

वर्षविकास की दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ का नाम प्रमुख हैं जो निम्नक हसके प्रेमा प्रतीत होता है मानो हसके तिथि क्षया का चरण निकाय गया है।
परन्तु तथा यह है कि हसके "श्री नाथ की क्रता महात्मा के पश्चात् पौर्ण्य वाचन की जीवनिपर योग और दोहा श्रेद्ध में प्रस्तुत की गयी हैं कितने नाम इस प्रकार हैं - रामरायासु, मार्कण्डेश्वरी कृष्णाके नाथ, वल्लभाप्त और श्री विकटनाथनाथ। इसके पश्चात् प्रस्तुत में वो लघु रचनाएँ - श्री नाथ की नाम "रामचंद्रेश्वरी का प्राभाव, " और "श्री ज्ञेयरामराय राधिकापरिवार 5 हैं। किन्तु वे रचनाएँ हमारे विध्वंस की परिप्रेक्ष्य में नहीं बाती। "श्री नाथ की का महत्व का एक प्रकार से हस रचना की भूमिका है।

6- श्री ज्ञेयरामराय महापुरुष वल को पैरे कुलुक प्रतिकाल ।
देवनाथदास-श्रीनाथकृष्णी की क्रता - पृ 42

7- श्री ज्ञेयरामराय प्रताप बल रामराय प्रसु काल।
शिशु राधिकानाय को लिखत वेष्णवदास 11। -वही - पृ 32 "वर्ष श्री प्रसुरामराय जी
चरित्र 306, दोहा 4

8- गंगवर राज्य तथा शिक्षक, पुत्र पतिय वेचक जुलारा। - वही - पृ 57
उपर्युक्त बच्चे कहाँ हैं तो रचनाकार विषयक निर्देशों से प्रकट है कि रचनाकार गौरवानी विद्वानान्य की का समकालीन है। अतः ये जीवन-चरित्र अध्ययनक गृहालेक्षित कह जा सकते हैं। उपर्युक्त पाठ क्षेत्र क्रमांक: ६८, ६६, ६७, ६२ और २२ पुस्तकों में विस्तार पूर्वक वर्णित हैं। इनकी कवितायुक्त उल्लेखनीय निजीभाषाओं में वर्णित हैं:

(१)- इनमें जन्म देख मृत्युपरान्त जीवन की क्रमिक घटनाओं का विवरण उनकी तिथियों के साथ दिया गया है।

(२)- रामचरित मानस की दोहा-चौथाई-शैली में लिखित होने के कारण इसमें नामादास कूल मुकुंद माल की शैली के स्वास्त नहीं होते।

(३)- इसमें जीवन-चरित्र विवरकसंहिता प्रमाणित है तथा यह प्रथम जीवनी-साहित्य की शैली में रचा जा सकता है।

(४)- रचनाकार ने बप्पि दलितों को प्रमाणित करने के लिए गर्तविवरण, रामायण के पदक अंतर्गत विस्तारसहित बूढ़ियां, जिन बूढ़ियां का नाम तथा रामायण का नाम प्रमाणित करने के पुस्तकों को उद्धृत कर प्रमाण पुस्तक बनाया है।

(५)- इस प्रकार यह अनेक संस्कृती का समाप्त हो जाता है जिन्होंने नियंत्रण पर रखी बनाया था।

२- सम्प्रदायविद्वद्व-मनोहरदास:

सम्प्रदायविद्वद्व ने रचित संस्कृत के दीक्षा के परिक्रमण में प्रवर्तित है। वह ग्राहक निःशुल्क संकलन १३७८ नंबर की प्रकाशन के साथ, उनका रचनाकाल बंगाली नेपाली भाषा के व्यवस्था अनुसार जाना जाता है।

१- वैश्वानारू-प्राचीनन्य की कथा, पृ। २-३
२- नहीं - पृट ६१ - ६२
३- नहीं - पृट ६३
४- नहीं - पृट २४
५- नहीं - पृट ५६
६- मनोहर दास - सम्प्रदायविद्वद्व, पृट ६२
में प्रसिद्ध गोपालदेव गौतमी के परिक थे श्रीराधाकुड्मी के बैठक
हुए। जो चतुर्थ सम्प्रदाय के कालियारि है। अपनी इस रचना के
92 पृष्टां ६१६ वन्दन है जिन्हें की सम्प्रदाय अन्न सम्प्रदाय,
ढूर सम्प्रदाय की वाचारियाँ की प्रामाणिक रूप से आत्मावासिक परम्परा
को उल्लेख है। इस लघु रचना के ब्रजीलान से सात होता है कि कथा की सजा
वृत्ति बताने किरण महाराज पुस्त बनाने की रही है। इसके लिए उसने पद्मपुराण,
श्रीमद्भागवत, महाभारत पुराण, नारदपरांत्र आदि के साथ को मुद्रा मिला है,
इस प्रेमी किन्तु ईश्वरादि कहने के परियों में प्राचीनम् वेदकाल को भी
गायक कहना है और उसकी प्रामाणिकता को स्थायि पर स्वीकार है।  
गायक कहीं कहीं गायकवादकार के वाचार की भूमिका से उद्भव किये जाते हैं।
लेकिन हम होते हैं भी नन्दीकाराणी की मौलिक प्राप्ति के वाक्य भी उद्भव किये जाते हैं।  
इस जैसे में उल्लिखित सम्प्रदायों का हितिकास व परम्परा निम्नलिखित
प्रारम्भ है।

(१) - श्रीमद्भागवत - चन्द - जिथक्रित - शाक्तीक - गोप - वैभवश्री - गोपालुति -
श्रीनाथ - पुरुषोत्तम - राम भ्रात - जाधु - राधामुख - भक्ति -
नीरवान - रामचन्द्र - रामनाथ - बन्धुसन्द - कबीर - सुका -
पद्मावत - तरारि - पीपा - वाचार - गोप - प्रेमौति -
अन्तरांतर - कृपावत प्रायोगिक - गोप - कृपावत - खुदाल - नामा - चन्द -
वैभवश्री - गोपाल - वाचार - पश्चाप - रामांश - 
रामांश - माता - माता - माता - माता -माता -
कुमारिन्द - विश्वानंद - विश्वानंद - विश्वानंद - विश्वानंद -

२. - प्रेममय भविष्य वाचार अनुष्ठान अवसंग नामक गौतमी,लक्षारण २०२६ नंबर १,२।
३. - कृष्ण वाचार हसनी कुंभ गोपाल, धर्म भूत भूत जन्मत।
"मक्का माल नामम रचित, तारे जन्म लिखा।" -वही, पुस्त ३३, हैं सं २०-२०।
४. - मक्का माल बलभीकम्, नाना विचित्र सं३३। -वहीं हैं सं २०-२०।
५. - मक्का माल नामम रचित, तारे हसनी जन्म।
"तारे लिख तो देखियाँ, का कुंभ नियोग।" -वहीं पुस्त ६६, हैं सं ५६।
६. - कृष्ण कुंभ ६७, हलस ६०-८० तक।
७. - कृष्ण, हैं ६३, तथा ६४ और ६४ के बीच का रली।
वनमन-द - जावीदाय - कर्मोपिन्द। इस परम्परा में मद्रमार के नाम ग्राम्य होते हैं। अतः यह परम्परा ग्रंथ प्रणेता जाती है।

2. प्रकाशदाय: नारायण - श्री - नारद - वैद्यास - मायावायार - पदमाय - नरहिंद - मायू - ज्ञात्यार - श्रापिर ज्ञानीरिश - विपासिंध - राजकेश - अन्य ज्ञानीरिश - प्राक्षल्य - तीनवास - क्षेत्रियता - मायावेन - इत्यादि ग्रंथ शक्ति - नीमानन्द। नित्यानन्द-श्री कुंवाराय - हेमकिन्नर, गौतमाय - मायावेन - शुभाचार्य - केशवकाशिरी।

3. विश्वासवारी सम्प्रदाय: नारायण - रूढ - विश्वद्वारी - शरणारायण - कितृदाय

4. सनक सम्प्रदाय: नारायण - हंस - सनकामिञ्ज - नारायण - निर्वाचनत्व - श्रीनिवास - विश्वाचार्य - फुलाचार्य - विलाशाचार्य - स्वामिनारायण - मायावायार - बलभ गाँवार - चंद्राचार्य - स्वामिनारायण - गोपकस्वार - कृष्णचार्य - हेमचार्य - वृंदावनचार्य - श्रीमण्डल - प्रकाशमुद्रा - हरिव्यास - श्रीमुद्रा - हरिव्यास - श्रीमुद्रा - हरिव्यास - श्रीमुद्रा - हरिव्यास - गीता: वृंदावनचार्य। इत्यादि ग्रंथों, पाषाण, भौमीराम। पाषाण: हरिव्यास - नारायण दाय - वृंदावनचार्य। सौभाग्य - आर्यरामवाद - नारायण दाय - वृंदावनचार्य। सौभाग्य - आर्यरामवाद - नारायण दाय - वृंदावनचार्य।

अन्तिमतः

इन सम्प्रदायों में उल्लिखित ग्राम्यारों में से ही ग्राम्यारों तथा उनके धर्मस्वरूप शिष्या का उल्लेख मकमाल में नहीं मिला। किसी भी यह कृति सम्बन्धित मकरे के जीवन-पुत्र व्रज पर एक गाय घटना कुछ उनकी प्रधान विशेषता के लिए मत के प्रस्तुत करने हैं किंतु सम्प्रदाय का उन्नी क्षेत्रिया परम्परा को एक सुद्धा स्थायित अनुक्रम या प्रस्तुत करने के कारण इसका बहुत नष्ट भांति है। इसके लिए ही मकमाल के मकरे के तत्त्विक जन्म मकरे, सौभाग्य श्रवण ग्राम्यारों से सम्बन्धित वृंदनारों के कारण यह रचना मकमालकी विश्वास-स्वस्तु को एक हीमा तक वाली बदाती है।
रसिक अन्नयान - मायात्मकाः

रसिक अन्नयानः के रचिता श्री भक्तिदुर्गिनः हैं। नामादास जी के सुधारार मायात्मक निभायतः के पुत्र थे। १ द्विदार्शी जी ने हन्तः बागे के बुध का मुख-मंदिर तथा रसिक और गोकृत्वदेव जी के बधिराम जी हरिदास का शिष्य कहा है। २ होतार ने नन्ती सौ एकवर्ष में उपस्थित माना है और हन्तः मायात्मक नाम से सम्बन्धित किया है। ३ होतार यतीन्द्र ने बपने शौच-प्रकारः श्रीसिद्ध दुर्गास संग उनका साहित्यः में इनका जन्मकाल सौ एकवर्ष के लागु माना है। ४ होतार यतीन्द्र का पता संस्कृतः है क्योंकि मक्खाल में भावत सुंदरः का स्मरण किया गया है। मक्खाल का जन्मकाल सौ एकवर्ष के लागु है। भावत सुंदरः जी के पिता श्री मायात्मक निधियान्तः मृत्यु के शिष्य थे। भावत सुंदरः जी ने रसिक अन्नयानः के मंत्राकारणः में प्रति खेत्रः निधियान्तः दोहा का समर्थन करते हुए कहा है कि श्रीहरिवर्षी के प्रतापचकः के कारण वह अन्य चाहा (रसिक अन्नयानः) का भाग करता है। हाकी सम्पूर्ण है कि रचिता श्रीमलः प्रदाचिनाः श्रावणः था।

रसिक अन्नयानः का क्षण-विश्वास राधावल्समः श्रीहरिवर्षी गोकृत्वायी तथा उनके शिष्यः का कारण है। इस पृथ्वी का वारा-श्री वरिष्ठः के बन्धक मिश्यः राजा-राजेराजः के चरित्रः से हुआ है। वरिष्ठः शिष्यः के शिष्यः के बाद उनके सुधः के शिष्यः का पूर्वांश स्मरण किया गया है। कुल मिलाकर इस कृतः में ६५ रशिकः का वरिष्ठः वरिष्ठः है जिसमें ३३ कालः के नामावली नामादास विरचितः मक्खाल है जी गयी है जिनके नाम इस प्रकारः - सुधः जी, कामल, हरिदास व्यास, कर्मी जाहेर, यक्तीराव, नर्वाह, क्रुदुरःवाह, व्यक्ती जी, हरिदास तुलायारः, वड़ैन, हरिदास बुधः, गोकृत्वाह और मायाचित्नः सरसवली। इनके विचित्र स्मृति रसिक अन्नयानः।

१- नामादास-मक्खाल-प्रकारः १५३
२- द्विदार्शी मक्खाल महिवर्षीकरिता-विष्णु ६२७
३- श्री फिकोरिलालः - प्रियाशुल्लक हिंदी साहित्यः का ग्राम्य प्रतिसाह, पृ५६७, प्रवर्तकः ६४७, प्रकाशक हिंदी प्रतापः भूलावली, वाराणसी।
४- होतार ने वाराणसी श्रीसिद्ध दुर्गास संग उनका साहित्यः २० श्रीराम-मक्खालः का रात्रिहासिक व्यक्तित्व ५ (प्रकाशित)।
वर्षित २२ मकर्न के नाम यह प्रकाश हैं :- क्रीष्णदास, नाहरमल, बीठलास, मोहनदास, नवलास, परमाणुवदास, दायोदशान्द्र, वृद्धवर्धास, विहिंसाश, लालसाही, दायोदशान्द्र, झुपास, नागरीरास, मातारी, कल्याणा पुजारी, श्यामसाहि बुंतर, कन्ही स्वामी, रसिकधार, मोहनदास, दायोदशान्द्र, महरणी।
कस कि किन्तु हरू विजेंद्र स्नातक ने शनी सहित प्रथम में केवल हिलवारिक्ष, दायोदशान्द्र, दास शेवक, हरिराम व्यास, चंद्रशेखर, झुपास, नेहीनागरिक, कल्याणा पुजारी, वनन्द वली, रसिकधार और फुत्तकादल का जीवनपूर्ण प्रस्तुत किया है। श्रेष्ठ मकर्न के संग्रह में ये मौन हैं। जबतक यह निःसंदिग्ध रूप से नहीं जा सकता है कि प्रस्तुत रचना रायावल्ल्ल सम्प्रदाय और उसके साहित्य विषयक बयान में शनी महत्वपूर्ण तत्त्वों को प्रकाश में लाया है जोखिम दूरी भी अवधित के स्वरूप भी तक धूलों ही रहते हैं।
हरे ग्रंथ में रसिकधार चरित्र वास्तविक रूप में लिखा रहे हैं की कारण श्री लक्ष्मारायण पुरोहित ने हरे ग्रंथ के श्री गोकुलनाथ गोस्वामी का नगरीय कृष्णदास की वास्तविक परिस्थिति में माना है। जो ही, यह मकर्न की परम्परा के वनलद के धीरे ही चरित्र साहित्य का ऐसा अत्यंत ग्रंथ है जिसमें रायावल्ल्ल सम्प्रदाय की परिस्थिति के ऊपर और निर्देश का हितिस्पर्श प्रस्तुत किया गया है।
रसिक वनन्द मासे का रचनाकार ऐसा विवाहित विचार है। रचनाकार ने यह ग्रंथ के रचनाकार पर वो प्रकाश कभी डाला है नहीं। एतिहासिक अवस्था सूचन प्रस्तुत किये जा रहे हैं।
(६) रसिक वनन्द मासे की समाप्ति गोस्वामी दायोदशन्द्र के शिष्यों के चरित्र के साथ हुई है क्योंकि रचनाकार ने यह प्रकाश कहा है।
रसिक वनन्द के विवाह निवास श्री दायोदशान्द्र।
रसिक वनन्द के लिए विवाह निवास श्री दायोदशान्द्र।
कहकर कहते हैं सूत्र स्तों, उनके गृह तो गुंद।
-- पूरा शंखा ६५

---
रसिक वनन्द मासे - सम्पादक - श्री लक्ष्मारायण पुरोहित, इं. भूषण-पूरा ६५, प्रथम संकरण, २०१७ वि.स., भूषणप्रकाशन, फुलवान।
२- गोस्वामी ललिताचरणश्रीरक्षितोदयसह गोस्वामी सम्प्रदाय योग साहित्य-पुस्तक, प्रथम संस्करण, साठ० २०१४ वि.से, केंद्र प्रकाशन, वृंदावन।
राजनामाली "फलमल के बाद की रचना है क्योंकि लब्से नामादास का उल्लेख है। स्पष्ट ही भावत सुखित नामादास के जीवन वात में मकर के रूप में प्रविष्ट भी हो गये होने अन्यथा मकर मात्र उनका उल्लेख न होता।

(२) श्री लक्षिमकाश्यप पुराणित ने रसिक नान्धनामल का रचनाकाल त्र००६५६६ और १६७० चित्र के मध्य मात्र है।

उपाधि का यह निष्कर्ष निकलता है कि "रसिक नान्धनामल" का रचनाकाल सं ७०६१ चित्र बास पास और सं १६७० चित्र के पूर्व सं १६७५ चित्र के लाभ मात्र जा बनता है।

"रसिक नान्धनामल" की विशेष उत्तमी प्राप्ति निम्नलिखित है:

(१) लब्से सं ५६५९ अष्टांत श्री किताबकार के दुन्वैन ग्रन्थ में लेख सं १६७४ चित्र वर्ष की श्री किताबकार के प्राभूत, श्री दामीनदिनज गोस्वामी के निर्देशानुसार लक्षावलम बन्मराय का अनुसरण दर्शाया है।

(२) से लिए निर्देश के आधार पर श्री किताबकार के रसिक नान्धनामल का आदर्श दर्शाया जा सकता है। जो रसिक-मकर मात्र के ख्या में दूर हो गया है। श्री भावत सुखित ने मकरों के वर्णन में संकालेव राजीवी रहितात खुद को भी दूर हरे में रखा है। यही ती कि रचनित ने मकरों के जीवन की घटनाओं को प्रमाण-पूर्व संबंध में उनके संकाल में उसी स्थान निधित्त है जिसे मकरों के जीवन का पंजारित करने में हहारा भिलाई है।

(३) वानिष्ठित उत्तमी वात यह है कि वह मकरमाली परम्परा में और राजावल्लभ-बन्मराय का एक प्रामाणिक और लोककृपया ग्रुप है। किन्तु भिन्न-बन्मराय के बाद अक्षित वर्ष के संबंध में यह का नामादास का अन्य अनेक कृतिकारों के सामग्रियामध्ये रचनाओं प्रस्तुत की है, उनके प्रवर्तक का यथेष्ठ निर्देश हस्तरचना में नहीं।

लक्षावलम प्रस्तुत यह हस्तरचनाओं का यथेष्ठ प्रस्तुत होता है। इसके प्रवर्तक यह यथेष्ठ निर्देश हस्तरचनाओं में हस्तरचना का यथस्थितिक पुष्टि में किया जायेगा।

६- रसिक नान्धनामल - सं १३ लक्षिमकाश्यप पुराणित - ३० तुम्खा-पृष्ठ-६२, प्रथम उर्माखण, २०१७ चित्र, बैंडु प्रकाशन, दुन्व।
\textbf{फलक्माल - जर्गा} :-

प्रस्तुत फलक्माल के रचनिता जर्गा है। जर्गा जी ने कई वात्तिक-विवाहित बोझ उलझिए नहीं खिया है। राष्ट्रवादी कृत फलक्माल भे इनका परिया दो बुद्धत्व में दिया हुआ है। तबक्कर जर्गा की दादुवंशिय से और वे तीन तीन शहर से बिनामात्म गये तथा वहाँ से विवाह भे महबूब बाबा का ईश्वर की मात्रें भे खर्च गये। वे संस्था वे उदयसर रहे और उन्होंने परसराम सरयावाद की लेखिका (श्रद्धायाओं की सूची) का प्रचार किया। \textsuperscript{2} राष्ट्रवादी की दादु जी के 52 महत्त्रान्त भे इनका स्मरण किया है। तबक्कर इनकी स्थिति बदली जी के बाद है। \textsuperscript{3} इस उदयसरण भे यह स्वयं सिद्ध है कि जर्गा जी की राष्ट्रवादी कृत फलक्माल के रचनाकाल सन् 1974-75 की अपने मक्खल के रूप में प्रतिष्ठित हो गये थे।

दादुवंशिय जर्गा की मिस्रित फलक्माल दादुवंशिय सरयावाद की प्रतिदृष्टि नीर श्रद्धायाओं से दमक्त मुखस्त है। इसका प्रथम उभरोन राजस्थान प्राचीन प्रवासिय भीमदेव सरयावाद, जोधपुर वे सन् 2029 विषो में प्रकाशित हुआ है। यह राष्ट्रवादी कृत फलक्माल के प्रकाशित संस्करण के पृष्ठ संख्या 1274 से 1276 पर दिया गया है। यह प्राचीन पत्र संस्करण रचना अपने के रोज चोपां में चढ़न में लिखी गयी है। \textsuperscript{4} इनों की सुलभ संख्या 66 है जिनमें लाख 362 मक्खल के नामों लेखे है। इस नामांकी का दो श्रीरण्यों में वर्तमान किया जा सकता है एक तर पुरातात्त्व संस्करण चलने दादुवंशिय संस्करण। (४)- पूरातात्त्व संस्करण- हरीके 32 नामांकी में वर्तमान मक्खल की संख्या लाख 176 है। तथ्य कथी ने यह स्वीकार किया है कि हरी मक्खल के प्रति कथी की अदा भी \textsuperscript{5} जिनें लाख से नामांकी रहे जा सकता है।

६- पूरातात्त्वक मक्खल- हरीके संख्या लाख 66 है। यह नामांकी मक्खल जो वास्तव रहकर है।

\textsuperscript{1} राष्ट्रवाद - मक्खल - इंड ५६५-५६६, पृष्ठ ६५६, प्रथम संस्करण, २०२१ विषो
\textsuperscript{2} प्रकाशक राजस्थान प्राचीन प्रवासिय प्रवासिय, जोधपुर।
\textsuperscript{3} वहीं- इंड ३६६-३६७, पृष्ठ ६५३।
\textsuperscript{4} वहीं, द्रष्टत्व- जर्गाण्डु मक्खल, चोपां संख्या 33
(१) - तुम्ही सन्त:- हन दुर्गी मंत्री की संख्या २४ है। इनके नाम इस प्रकार हैं:-
झाँल, खुश, वैल, वाहारी, फरीद, हाफिज, झसा, झुआ, दास, रावि, राजा, राजी, दिलाम, समन, शहावाज, शेख, मन्दर, शल्काद, शनलाख, राजी, महाबुद, रूहा, कामाक्षी बंजारी, विश्वा बनदलसाह। हन तुम्ही सन्तों की नामांकी देने के बाद कवि ने कहा है कि "एता विद वण्णीहर तुम्ही सन्त जानियो गावै।"

(२) - दादुपौरी वन्न:- हन वन्नों की संख्या का मात ६४ है जिनमें से राम, हरिवाल, धरिवाल, रामदास नागी, राघो, शेख, गोपाल, हरिवाल, तखी, किसनदास, कल्याण, तुलका; जो हत्यादि सन्न दादू के क्षेत्रीया सन्न कहें गये हैं। दादुपौरी वन्नों का नामोलख ३४ चीपाईया में है।

पुर्ते के विन्यास तीन चीपाई अदालतों में मंकमाल के लिए की प्रसन्ना और उसके महालय पर कवि ने अपना मत प्रस्तुत करके देखा है कि हन मंकमाल में विज्ञय सन्नों के अतिरिक्त और भी सन्न हुई होगी। लेकिन कवि जिन साधक और सिद्धों को दुनाहू है उनकी नामांकी इसमें की है। किसके लिए जान की प्रशंसा उसे अपने युक्ति प्रस्तुत निमित्त है जो कि

6. जगा - मंकमाल, चीपाई सौ ६४।
7. "युक्ति युक्ति - माह वर भूल हुआ। तिनके न्याय घाय पर भूलहुआ।" वही, चीपाई सौ ६८।
प्रायः मक्खलाल की मौत की है । अन्याय कृति के बदलाव जन्म-जन्मान्तर के हुंकांकों का विनाश, उस की प्राप्ति तथा नवाचन से नुकसान में तीन सुफल पड़े-फुटे से प्राप्त होते हैं ।

इस मक्खलाल की कविता उल्लेखित विशेषताओं निम्नलिखित हैं:-

(१) - यह वाद्यकृति - सम्प्रदाय का प्राचीन मक्खलाल है जिसे सूची मात्रा कहा जा सकता है । इसमें राक्षस - सावधान की मस्तिष्क की प्रस्तुति का संक्षेप - मात्र के विशेषण कोई उल्लेख नहीं है।

(२) - कवि ने उसी भी उल्लेखित विशेषताओं को अक्षराक्षक नहीं हैं-यथा, पथ-पूज्य का झल करता है तथापि बन्ध सम्प्रदाय के फलकों को भी कवि ने महत्त्व दिया है।

(३) - इस मक्खलाल के अनेक नवाचन संस्कृत में मक्खलाल के नाम निर्देश हैं जिनका उल्लेख उपर निक्षेप जा हुआ है।

(४) - वन्दन उल्लेखित विशेषता यह है कि इस वर्णन की रचनाओं में हे यही रचना सूचित है तथा अर्थ उल्लेख मात्र का प्रतिनिधित्व धारकों को मक्खलाल के स्वभाव में प्रकाश में लाती है।

6- मक्खलाल - सौन्दर्यः-

प्रत्यक्ष मक्खलाल के रचनात्मक सौंदर्य की है । इन्होंने अपने जीवन पर ढूढ़ कहीं नहीं कहते । राजनाथ जी ने ' मक्खलाल ' भें इन्हें दास्तांशी बताये हुए क्रिकेट के भें उनकी प्रतिशत होने का उल्लेख किया है । इन्होंने अत्यधिक विधि से व्यू होने का यथार्थ निष्कासन किया तथा उनके प्रस्ताव का प्रणाली निष्कासन निष्क्रिय दीवार और सफ़ा का गुण-वर्णन के साथ साथ, योग और वैद्योग्य की मस्तिष्क, वाचा, कृत्रिम की अद्वितियाँ के वर्णन के पश्चात् हादसामंतर गोपाल प्रतिमा से कवि की ज्ञान प्राप्त होना निरंतर निर्देशित किया गया है।

इस वर्णन से निष्कर्ष निकलता है कि उन्हें राजनाथ जी के मक्खलाल के रचनात्मक तकनीकी बहुत प्रकाश, चौपाई चौपाई 66 !

2- राजनाथ - मक्खलाल, केंद्र सं ५०६-५०९, पृष्ठ सं २३५-२३६, ग्रंथांकन, २०२१, प्रकाशक राजस्थान प्राचीन विवेचना प्रतिष्ठान, जोधपुर ।
रचना के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं और वादा जी के लिखि थे। इनका रचनाकाल ज्ञात है। राजवाड़ा जी ने इनका मृत्यु स्थान "कारणवा" होने का उल्लेख किया है।

“चैन हूँ मकमाल का प्रवास-संस्करण राजस्थान प्रायम विषय किया प्रविष्ट्यात, विकुरु द्वारा सं २०२२ में प्रकाशित हुआ है। यह प्रकाशित इसे राजवाड़ा-कृत मकमाल के पृष्ठ सं २८० से २८६ पर विचार किया गया है। इस साल युद्धीय मकमाल में ६६ हज़रत में जिनमें संभाषण १४५ मकरां की नामावली की गयी है। ये मकर प्रायमः निरूपण तात्कालिक भी है। तत्कालीन कवी की आलोचना स्वीकृति है स्पष्ट है कि उन्हें अपने साथ तक के प्राचीन संस्कृत काव्यों को इस रचना में स्थान देने का प्रयास किया है। इसमें विविध संतों को निर्माणित वाणी में रचा जा सकता है।—

(१) पोराणिक मकर जिनकी द्वितिया लाभा १५० है।

(२) देशिलिचक मकर जिनकी द्वितिया लाभा २६८ है। इन मकरों के चार उप-श्रीराम में वानी है जाता है।

(३) सिद्ध और नाथ परंपरा मकर जिनके नाम महिंद्र, गोरख, बड़उट, सिंघ गोरखा है। नामावली जी ने इन नाथों और सिद्धों का स्वरुप नहीं किया है।

(४) वार्षिक संस्करण—इसमें वार्षिक संस्करण की प्रमुखता नामावली मिली है। ये संस्करण हाल सं १४५ हैं जिनमें से वार्षिक, गरीबवास, ज्ञानवार्ष, नारायणवास, ठाकुरदास ज्ञान के संबंध द्वारा ठाकुरदास ज्ञान के नामार्थभाषा किया गया है।“ चैन जी जिनके पूर्व गायक हैं। और सवन के नाम कुल है—से स्पष्ट है कि कवि का

— राजवाड़ा—मकमाल, धर परिषिद्ध २, हाद सं १९०२, पृष्ठ २७९।

— प्रथ्याय कवि के उद्देश्य स्पष्ट रूप से हैं।

— कविता जो हेतु प्रतिज्ञा ग्राम के नाम से सम्बन्ध है।

—— चैन जी कृत मकमाल—हाद सं २।

— वही, हाद सं ४६।
उद्देश्य हन सन्तान का नामोलेखमात्र करना था। यह नामोलेख प्रस्तुत मंकमाल के हिन्द से ६१ से ६२ तक में किया गया है।

(७) - खूबी मंकमाल के हिन्द संख्या ३६ से ३२ के प्रथम चरण में लाभ ६६ खूबी मंकमाल का नाम स्मरण किया गया है जिनके नाम यह प्रकार है:-

व्याव, वाचिक, विराषम, बिंकर, गलश, फरिङ, हात, शेष, वहावाद, लहत, वाहिन, वाहिन, दीर्घ, लांग, काजी, महास, चावन।

(८) - चतुर मंकमाल - इस ग्रंथ में लाभ ६० मंकमाल, दादहार को झोंक कर, चित्रव दृष्टवाद द्वितीय द्वय संभेदित हैं। इनके नामावली ६१ भाँति कथापू खंडे झन २४ से ४० तक में ही गयी है। इनमें इतिहासित मंकमाल का स्मरण नामावर्तित मंकमाल में नहीं हैः-

विनादाव, रक्षावर्त, गल गता, दूरिया, दोका, संजित, ब्योक्र, सीना, रचना, परारू, गीत, दुनटह, प्रत्यु, महादेवा, खुम, खुम परमानद, सूत, सु, तापिया, शैक्षिक, सार, नाकेल, उदालक, हादी, धार, नानक, लहंदेन, वहन, विनादाव, मारल, का-हा, टोली, चत्राव, चार, माराज खोती, नरहो, चाँदरी।

चतुर जो कुत मंकमाल की कल्याण स्तरीय विशेषताएं इतिहासित हैं:

(९) - यह मंकमाल इतिहास ओर चौपाइ - इतिहास में लिखा गया है। इसमें २२ वर्षा ओर ३६ चौपाइयाँ हैं।

(१०) - इस ग्रंथ के दादहार का हतिहास प्रस्तुत करने में पक्षिप पहायता मिली है।

(११) - रचनाकार ने मंकमाल की रचनाओं का भी कल-तत्त्व उल्लेख किया है ८ ओर खूब चतुर के निवास-स्थल के लौट भी दिये है।

(१२) - चौपाई उल्लेखित विषयात्मक यह है कि इसमें कवि के गूड़िन-विस्तार का परिचय द्वारा है। इनमें ओर सिद्धांत के मंकमाल के बीच में बनान इतिहास रचनाकार महात्मा

6 "फूका - प्रहलाद परिवारीता।" मोहिनिवेन्द्र 'र्ग्यान मन' हीता।

"बढ़ी - चौपाई १०३"
योगमायी बाक्क और मक्के दोनों के बीच की निवास के रेखा की मिटाना चाहता है।

7- प्रतिपादक प्रतिपादक, अयुर के राष्ट्रीय संग्राम 2120 के पत्ते सं 486-486 पर हरिदास निरूपित 'राजस्वार प्रतिपादक' की प्रति सुरक्षित है।

इस ब्राह्मणीय रचना में 49 गुंडे हैं जिनमें केवल दोहा - इत्यं यशी को बदलना गया है। इसमें हरिदास के रचनावाद का कोई निर्देश नहीं है, परन्तु प्रस्तुत गुंडों के पत्ते सं 486 पर इसका लिपिकालापक उल्लेख हस्त स्क्रिप्ट है:

निराकार जीवी स्थः का शिष्य वसवी वारुद्धाचार की। वसवी
वारुद्धाचार का शिष्य वारा बलवारीवाद की। का शिष्य वारा झीलकाल की।
का शिष्य वारा स्यूमवाद की। का शिष्य वारा नारायणवाद की। का शिष्य वारा
क्षोभ की। का शिष्य वारा महीराम की। चांगुनिरिया लिन का शिष्य
वारुद्धाचार बह वाणिनाजज वर्षं वारसी निन पोही लिखी वारा वाले।
मुल बुक मार्फ़ कीजो। लिखी हो बुक कर। बारी प्रौढ़ विचारिन।
हुम्ब चारी स्वस्त। ती बुनरे मारे। वारी चिनारी जारी कारार मोरी कलकत्ता प्रणाम है।
ञुत। कारार कै पुरांत नामाध्यमन 123.146। मह बंदी
नौमी वारा वक्तवारा ता निन पोही वृहुण मह। वारुद्धाचार राम रे।

तस्मां इसका लिपिकाल सं 1446 विश 5 भाषा कृप्णा 8 रचनावर
तथा लिपिकाल वारुद्धाचार की वक्तवाली की है। प्रस्तुत गुंडों के दूसरे पत्ते सं 1446
में 43 भाषाओं हैं, जिनमें बीस्वंती रचना हरिदासकृत 'निर्देशित' है। निराकार
ही लिपिकाल की इसके लिए में बुक सस्त्र वारुद्धाचार का लिपिकाल सं 1446 विश 5 भाषा
की मुक्त विरावली का निर्देशित है।

हरिदास का जीवन-कृति बालक है जिन्हें बन्ता-वृत्ति द्वारा उनका वारुद्धाचारी
नारायणाल का शिष्य होता प्रकट होता है। चमक के स्फुरण में यह विवरण
इस प्रकार हैं:-

'वारुद्ध दीन द्वारल प्रस्तुत भावादि बताया। लिन से लादी मान्य वृहुणिका
वर्ण पाया। वारुद्धाचारी नारायणाल उच्चरण हैं सब। लिनका शिष्य है
हरिदास। लिन पुष्पी विचार मानवत। नरिलिंग रहत है तथापि देवी उपक्षेत्र।
रायवरस जी के बन्दूक नारायणाण्डाण जी सुन्दरदास जी के पाँच प्राधान्य शिष्यों में से एक थे। वे पाँच शिष्य प्रथित थे। सुन्दरदास जी का जीवनकाल सर्वधर्मविश्वास में रहा था। नारायणाण्डाण जी ने सबसे पहले बहुत संप्रदाय जी खुद के हाथों से सीखा था। नारायणाण्डाण जी ने तनातनात के सच्चाई के लिए मनुष्यता की तरह सबसे अधियोग से आयोजन किया। नारायणाण्डाण जी ने अनेक चर्चाएं की जिनमें से कई नए समय का प्रतीक बन गए।

नारायणाण्डाण जी के नामांकन विशेष रूप से हिंदी शिक्षा में किया। वे अपने विद्यार्थियों के लिए तत्कालीन विद्या की समस्त जीवन की कहानी एक अलग आयोजन के रूप में समर्पित किया। उन्होंने कई प्रकार के नामांकन के लिए इस प्रकार के प्रेम निर्विरोध और विद्यार्थिक से इसका साधन है। इस विद्या की विशेषताएं इस प्रकार हैं।

(1) कविता ने इन प्रकार के संबंधित चिन्तामणि में उनके विचार जीवन की कहानी एक अलग आयोजन

8- सुन्दरदास के, विषय पाँच प्रथित हैं।

9- सुन्दरदास के, विषय पाँच प्रथित हैं।

10- सुन्दरदास के, विषय पाँच प्रथित हैं।
घटना का वर्णन किया है। साथ ही, शुभ मंकरण की जाति के पूरे दुःख
चित्रित है।
(2)- यथापि किव दादूलाम का शुभान्तर था, तथापि उसने इस मंकरण विषयक
में किवी साधुदास पवित्र की व्रजना न करके माननीय, वारकर, अज्ञात,
अस्तुक्षम, नामशीर भावि समृद्धयान के मंकरण का स्मरण के किया कथा है।
(3)- यह नामालाम के मंकरण का श्रीलिखि पर लिखित न होते तुर भी उसकी
परम्परा में लिखित एक स्वतंत्र व्रज है जिसमें मंकरण का यस्वकार्य है।

8- मंकरण - राघवदास

राघवदास ग्रन्थीत मंकरण राजस्थान प्रायः विषय विषयक प्रतिष्ठान,
जिथने दे सं 2021 वि.सं में प्रकाशित हुआ है। इनकी मंकरण संगीत रचना
प्रस्तुत ग्रन्थ की दृष्टिकोन के पृष्ठ सं 30 दे 'च' पर प्रकाशित है कितने नाम 'वाणी
की बाणी' या 'राघवदास जी की बाणी', 'ग्रंथ कथा' नीती, 'ग्रंथ
निस्तारणी', 'ग्रंथ सिद्धान्त ग्रंथ', 'ग्रंथ उत्पत्ति स्थिति' निस्तारण है। राघवदास
की का जन्म माल एक चित्तावन्य सिद्धान्त है। जन्म सायं दे 'स्तवविनीत्रीक
कोई सहायता नहीं मिली। बन्य सायं दे केवल राघवदास जी का पीपार्शी
और चारू गीत भी उत्पन्न होने का उल्लेख मिला है। 8 श्री भारती नान्दा
के शक्तार इनके पिता का नाम हरिराज तथा माता का नाम रतनारायण था।
कदः देवो वस्तवविव ये दादू जी का प्रमाण शिष्य परम्परा में हरिवास (हरियारी)
के शिष्य थे। हरिवास जी प्रहलाददास जी के शिष्य थे। ३ हरिवास जी
ने मंकरण विषयक की प्रणववी दी थी। ३ राघवदास जी के उल्लेख प्रहलाददास जी

6- 'पीपार्शी चप्पल मैंसैं। हरित हरित की नेंरा उपित।
मंकरण कुमल जलित हरणी। वानि जै पुष्पधरण वाणी। २०१।
--- राघवदास-मंकरण, पृ २५६।

2- वाही, इन्द्रज्य - मुम्बुक, पृ ३ 'धर'।

3- हरित पूर्ण अर्थ पायेगा, उपम कीन्है देख।

जन रामी का रामभि है, जंत से जा प्रेम। १२०। वाही, पृ ३
कामस्थल राजाद के निकट "घाटे" है। श्री कारचन्द नाहटा ने राज्यवाद जी का घाटे है उपर " चाल जाने का उल्लेख किया है जहाँ उनका समाधिस्थल है।

राज्यवाद श्री कारचन्द नाहटा के टीकाकार श्री चुदराव में कहा है कि फिर प्रकार नामात्म जी की श्रीकृष्ण जी से उपर अंदाज ने अधिकार की प्रतीति मिली उबी प्रकार राज्यवाद जी का उपर लाय जी के ने वहीं तार की रचना की प्रतीति है। राज्यवाद जी ने वंश के बन में इसका रचनाकाल के अभाष कहा किया है जो इस प्रकार हैः

"संगीत श्रीकृष्ण श्रीतियाँ बदल वहीं, राष्ट्रो विषय किया विषय।"

तिथि वृक्षिण श्रीतिया बदल वहीं, राष्ट्रो विषय विषय।

दक्ष सिद्धांत रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि किया है।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।

परन्तु जिन्हें भी इस पर उपजहां के राष्ट्रो श्री राम जी के शुभ फल वहीं तिथि वहीं ।

यदि रचना का श्री राम सनं का शहीदा।
हरिकृष्ण सं १७१५ वि ० में गढ़ी पर गाड़ी ने जिनका निधन ६ अगस्त, सन १६५५ दो वर्षात १७२२ वि ० में हुआ। परन्तु राघवदास के शतकवियाद के हन्द में उनके राघव ने दाप नहीं सिकाल। यदि इस विषय के प्रमाणिक मान लिया जाय तो राघवदासकृत मंकमाल हस्हरङ्क का रचनाकाल सं १७१५ वि ० के परस्पर तथा हरिकृष्ण के निधनकाल सं १७२२ के बाद अवृत्त होता है। किन्तु इस पल के मानने में एक बात है यह भी होती है कि हरिकृष्ण के परवर्ती भाषावर युद्ध व वर्दान्त गुजरात जिनका निधनकाल ज्ञात: सन १६५५ है और १७०८ है, का उपयोग न होने दे यह हन्द प्रसिद्धि प्रति होता है सत: प्रसिद्ध मंकमाल का रचनाकाल सं १७१५ वि ० की बाहर बुझला गृहीता शिक्षामा जा सकता है।

इस ग्रंथ में चारामः युग के महतों का वर्णन किया गया है इस वर्णन के लिए कवि ने साती, दोषा, हर्षी, निलाञ्जनी द्रव्याएं बृहें शुभ्र हर्षी, मनाहर, शरदलिखा, शरीर हर्षी, शंभाल, निशानारी, शौर्यादि और दंडक कहला हन्दों का सुभूत प्रयोग किया है। किन्तु कवि ने दर्शन को 'युग्मति होड़रा' मानते हुए यह बात है कि महार, वर्ष और हुक योग स्वभाव, सुखद भाव नहीं होता है, शुभ्र श्रेष्ठ महामति होड़रा गृह्य को जिनाधि क्यों जाना है ३। यह कहा तरकीब निकलक निदेशन का योग, हन्द हन्दों की संख्या है। विकृत नहीं है क्योंकि इस ग्रंथ के परिशिष्ट ९ में बृह धार और जोड़े गये हैं और दूर योग में कही कहीं हन्दों की संख्या की वास्तविक शोर और अवधायन बुझल है। इस में लाख ७५० महतों की नामांकन बुझ्ले है। ते महतों

6- Sri Ram Sharma - The Religious Policy of The Mughal Emperors , Page 165-166.

2- श्रीश्रीवाजीलाल श्रीवास्तव-शास्त्राली भारत, पृ ५४७
3 राहात-रामालाल, छ ४५३, छ ४५६
1- नारायण प्रकाश परिक, कर्म ५०, सं २००५, भक्ति, लोमिष्पूरा

४५३-५०, का ग्रंथ-कार्य ४३६, प्रकाशन नामकरण प्रकाशनी समिति, काली-
कथा में रस जा धारण है। पौराणिक वाद एवं भविष्यकाल। प्रस्तुत ग्रंथ में विभिन्न पौराणिक महाकाव्यों की संख्या लगभग 255 है। शेष का 445 भविष्यकाल की महाकाव्यों का निम्नलिखित उप-श्रेणियों में रहा जा सकता है।

(क) - विविध सम्प्रदायों के शास्त्रीय और उनके शिष्य - प्रशिष्य:

सबसे श्रेष्ठ सम्प्रदाय, विश्वविद्यालयी सम्प्रदाय, जिम्मेदार सम्प्रदाय, माध्यम सम्प्रदाय, रामानुजी सम्प्रदाय, कैलम्बु सम्प्रदाय, पुरुष-प्रमाण, राधाकृष्ण सम्प्रदाय, रसिक सम्प्रदाय, डॉ. वाराकरी सम्प्रदाय तथा नानक, कवि, डा० दास० निर्मली पंक में शिष्यों और प्रशिष्यों के विवरण हैं।

(ख) - इतिहास के ज़रिए:

इस ग्रंथ में इतिहास में इस की कहानियाँ का जीवन हृदय में दिखा गया है। उद्धृत किए गए सम्प्रदाय के वर्तमान स्थान नहीं ईर्षित किए गए हैं। इस उद्देश्य के लिए - शंकराचार्य, तुलसीदास, पुरुषोर्त, ज्योतिर्लिंग, रामानुज, नारसिंह, महौलादास।

(ग) - सम्प्रदाय, योगी और नायिक:

रामायण में 28 योगी और नायिकों के लिए 88 संयासी महाकाव्यों का पुनरुत्थान आया है।

(घ) - बोध, सुख, और संघीय भवन के पक्ष।

(ङ) - सम्प्रदायों के पक्ष - इनकी संख्या लगभग 605 है।

इसी के सामान्य दृष्टिकोण में इनके रूप में उपयोग माना जा सकता है।

(च) - रामायण के नायक और रामानुज सम्प्रदाय के बुद्धान्वितों का वर्णन बहुत अधिक सम्प्रदाय = रामात्मक सम्प्रदाय = के वर्णन है।

दार्शनिक मतवाद के वृद्धि काल के दौरान इन्हें एक रूप में उपयोग माना जा सकता है।
(2) विश्वस्वामी सम्प्रदाय के मंत्र वर्णन प्रस्तुत करने वाले सम्प्रदाय, भक्तिमार्गी सम्प्रदाय और दर्शन राजकीय बाह्यिक सम्प्रदाय के साक्षरतापूर्व पर्व की मिलकर हैं। इसके भी युवराज के मंत्र तथा मंत्र के कविता नसरीमीकरण का उल्लेख भी है।

(3) माध्यमस्मृति के बन्दूक कहते हैं वस्तुसम्प्रदाय और राजकीय सम्प्रदाय के अनुसार य सम्प्रदाय का युगल स्वरूप है। इन मंत्र तथा कविताओं के नाम इस प्रकार हैं: रूप-वनस्पति-श्रोत गोरस्वामी, श्री गोरस्वामी, श्री गोरस्वामी, प्रजाधिकार-दृष्ट अवधारणा। सामाजिक दृष्टि से इसका उल्लेख मुख्यतः जीवन-पृथ्वी धर्म के अन्तिम है।

(4) निम्नलिखित सम्प्रदाय, राजकीय सम्प्रदाय तथा राजकीय सम्प्रदाय, भक्तिमार्गी और विश्वस्वामी सम्प्रदाय के बुध मंत्र को निम्नारंभ सम्प्रदाय में रखा-गया है। इसके नत होता है कि कविता तथा मंत्र के प्रति बढ़ा है किन्तु उनके समक्ष विश्वस्वामी सम्प्रदाय का विवरण नहीं।

(5) प्रस्तुत ग्रंथ में राजकीय नामक, वांदु, निरंजनी पैरे के वर्णन के साथ नामक, विष्टकोर और उसी व्यक्ति का वर्णन अत्यंत है जिसका उल्लेख नामांकन जी के मंत्र में नहीं है। इसी तीर्थ राजकीय ने वांदु सम्प्रदाय के दृष्टिकोण (वाहार्थ) को प्रस्तुत करने में विशाल तन्मयता विवरण है।

(6) प्रस्तुत ग्रंथ मंत्र तथा नामांकन के परम्परा में लिखा एक स्वरूप ग्रंथ है। यथाप्रति इसमें नामांकन विनिमय मंत्र में मंत्र के नामांकन भी हो जाने है तथापि यह ग्रंथ उस परम्परा को विकास की पिता में से जाता है।

(7) राजकीय कृत मंत्र मंत्रालय पर एक स्वरूप पुस्तक भी लिखी गयी है जिसके टीजाक को चिन्ह दर्शाता है। इसका वर्णन इसी वस्त्राय के परागी स्वरूपी के में किया जायेगा।
6- रसिक विलास - साहित्य 

वास्तवरूप विशेषतः रसिकविलास का एक हस्तलिखित प्रति छापनकार, गोविंद (मदुरा) में सुरक्षित होने का उल्लेख व्रम्म दीर्घ तथा धीर साहित्य में किया गया है। उन्होंने एतत्रिधिक जो विवरण किया है उसके बावर पर यह रचना का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह ग्रंथ कितने, हस्ताक्षर इन्होंने लिखा गया है जिनकी संख्या 250 है। अतः भाषक के मुख्यार संस्कार इसका रचनाकाल दापक इतिहास प्रारंभ है:

"संवत समझ कोठनी पारी हैं, माह बुधि सुकुल फौंट पौंछी बुझाई हैं। भिन्नकरिता रिसुराजजू की सापा हो, भावों प्रसा गुरु हरि धर्म पुरान बुझाई हैं। रसिक विलास नाम गुरु-विभार बहुत, सुने किया भ्राम भाद्र शति सृजनार है। तांत्र मन माधे साहित्य बनाइं, पारी हरित-असुरमार, जनकार शिष्य शांत है।"

तांत्रिक इसका रचनाकाल इस 1745 विक्रम की सापा सुभद्री 5 शिष्य है। वर्षीयशिष्य की इक्ष्ण से इसमें उत्तर केशीय महात्मा स्वामानन्द शाह उनके शिष्यों का कराना किया गया है और स्वामानन्द शाह के प्रति उन्होंने शाहार बिचार का साधन की है। इससे अनुमान होता है कि वे स्वामानन्द शाह की शिष्य परम्परा में हुए होंगे। हालांकि इस ग्रंथ से स्वामानन्द शाह की भूमिका विशेषतः रसिकविलास-रसिक ग्रंथ का कराना किया गया है। उन मध्ये में उत्तर केशीय में किया प्रारंभ फैलन्न मत का प्रारंभ किया और अपनी मन्त्र भावना के प्रभाव से हैं कि वे समकालीन बनकर कार्य किए, हन सक्ति विस्तार पूरक करन हस ग्रंथ में हुआ है। श्रीपर्व इसका नाम रसिक विलास है, तथापि कहीं कहाँ पर रसिक मंगल नाम भी लिखा भिक्ता है। इसके 250 इन्होंने वर्णित मंगल की हुल संख्या कितनी है।

6- प्रमुखाल मीतल - चैतन्यमत और अक-साहित्य, पृष्ठ 264 - 266, 434।
और वे मकर किन्तु बाल तक के हैं, एकदूर्विषिक्षक कोई उलझ श्री मीलल ने नहीं खिया है।

प्रस्तुत रचना के ब्रजवस्त्र यह कीर्ति लपिण्ठ प्रशंसा के वायकर पर आशी के प्रकाशित "गौराण्ड" (के अन्यान्तिक पत्र) के वर्ग ९, संख्या १-४ में "रसिकविलास" नायक गुरु की प्रकाशित हुआ है जिसमें हस्त १५६ हिन्दु है। इसके लिपिकार लिपिकार गुरु के ब्रजवस्त्र कोई उलझे नहीं हैं। तथा यह अपूर्ण है। इन हिन्दुओं में ग्यामान्द जी की शिष्य परम्परा के मकर के ——

स्यामान्द — रसिकविलास — खियर — दरिया — दामोदर — फित्तामति —
वल्मीक — उदय — मधुक — जातिस्वरपति — पूृणोचन — शान्ति — रायमान्द ——
के वित्तरिक रसिकविलास, वैष्णव राजा भक्त, नरसिंहरू का राजा उद्वेदाय, गोपालबाबा, यवनराजा, स्यामान्द, मीमांसा पीठ, तीन ठाराय, बलायवाल, केशवान्द, दरिक, विजयपुरान, गौराण्ड, शलेश का राजा, जटेराय, रसिकरम्भादास, गोरू बावशाह और गोरू साह के राजा के वर्णन भी प्रस्तुत खिया है।

प्रस्तुत रचना के वायकर पर यह और जा सकता है कि यह मकमाल जी की शैली पर तथा ज्ञानाधार में लिखा रचना है जिसमें परिच्छेद के साथ वैदिक सम्बन्ध के मकरों का वर्णन खिया गया है। हाँ रत्नागिरी के ब्रजवस्त्र ग्यामान्द जी ने ब्रजवास्त्र में रहकर जीकोस्वामी जी से वैष्णवशास्त्रों का शिक्षण प्राप्त था और उद्वेदाय में वैष्णववर्धन का प्राप्त खिया था। इनके गुरु गौरीदास पीठ थे।

१०— रसिक अन्त्य — उद्वेदाय —

उद्वेदाय के श्रीनिवास जी के ब्रजवस्त्र में श्री श्रीदास की एक रसिक के उद्वेदाय जी की की रचना है— "रसिक अन्त्य" और "रसिक प्रकाशित। "रसिक अन्त्य" इस प्रकाशित के पुढ़त बंद० है और २० तक खिया गया है, इसके बाद दो गुटाओं में "रसिक प्रकाशित। है खिया

६— हाँ रत्नागिरी— १६वीं शती के हिन्दी और काशी के वैष्णव रवि, पृ० ५४।
उल्लेख परवती पुष्टि में किया जायेगा। इसी रजिस्टर के पृष्ठ सं 23 वें 605 पर नामवत स्रोत देता रसिक अनन्त मात्र भी हैं। वे दोनों रचनाएं गूल रचना की प्रतिलिपि की परवती प्रतिलिपि है जो कि रचना के कार्यक्षेत्र मान भें प्राप्त होने वाले विषयमय तत्त्वावधाय निम्नान्वित निर्देश वे प्रसारित हैं।

"संबत १६८०। भिक्षु ज्ञान ज्ञानी श्री रामदासी की श्री वृंदावन मध्ये श्री नन्दराम पीठ जी के बाग में। ज्ञ श्री राधे। श्री चाप वृंदावन - पारिवार, ज्ञानी जी की करीबी में श्री पारिवार स्वामिपति गोस्वामी (पर्यंतप्राप्त) श्री श्री १०५ श्री महत्त्व पीठ श्री श्री कल्याणदास जी महाराज के पदपुजारित पं १२ रामदास ने भिक्षु हरियाली जी माणवण सं २। वं २० वर्ष २०६६ किरातमौद्र की लिखित।

"सं प्रिय राधिकायम।"

इस रचनाकाल ब्रजात है मात्र उत्साह जी के रसिक परवती नामक गुप्त बाल मुहित कुल के रसिक अनन्त राधे के बाग नर प्राप्त है जिसके यह तो स्पष्ट है कि इनकर रचनाकाल रसिक अनन्त मात्र के पश्चात रहा है। रसिक अनन्त मात्र का रचनाकाल लागू १६७४ विच अनुमित है। श्री वासुदेव गोस्वामी ने रसिक अनन्त का रचनाकाल सं २०२८ विच माना है। ज्ञान उत्साह प्रमाणों के कथा में इसे अनुमानित ही रहा जायेगा। श्री वासुदेव गोस्वामी जी के बारे उत्साह जी के कथा थे।

रसिक अनन्त भी मृकृतं का वर्णन है जिनके नाम हरिवंश, नराधम, नृपति, वीरलाल, व्यास, हरिदास, वनान, कृष्णदास, प्रभोधानन्द, नाहरशंकर, नीलकंठ, मोहनदास और देवक है। यह वर्णन होठा-जीपा-शाली में प्रस्तुत किया गया है। कथा प्राय: राधाखंड सम्प्रदाय के प्रथम गोस्वामी हितारिक जी के।

8- रसिक अनन्त - उत्साहाय, हस्ततम गुरु, पृष्ठ सं १०५।
2- वासुदेव गोस्वामी - मूलकवि व्यास जी, पृ ०
3- वही, पृ ०
रसिक परिचय - उत्मदा मँ

पिछले पृष्ठों में यह कहा जा चुका है कि उत्मदा की की रसिक परिचय के लिपिकार पृष्ठ रासिकाध्यात्मक अभिलेख 2019 में अध्याय-उपकल हुई है। यह रचना दैनिक दृष्टि में है जिसमें रसिकों की नामांकन देने के साथ श्री रिहत जी के जन्म और निवास काल का उल्लेख किया है। यह

६- भावत दुहित की रसिक बनन्यामाल - सम्पादक लिखित प्रशाद पुरा हिंदित,

इष्टत्त्व दुहितका, पृष्ठ ३३-३४।
नामावली कवि ने पंक्तिपुंडित कुत्ते रसिक गन्नयामल ने राधायर पर की है।
इस स्तुति को स्वयं कवि ने स्नीकार करते हुए कहा है कि रसिकों के नाम,
पिनका उलेल जी सुंदर ने फिरा है, उजमदास जी ने इन्हें एक स्वातन्त्र पर एक
कर फिरा है। स्वयं कवि के शब्दों में—

"छति दृश्यन की परवर्त, मागत धूलित बलान।
ज़रा अविनयत एक ठाँ उसम चीने धान।" 

उपरोक्त कथन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कवि का उद्देश्य मकरार
के नामों का संग्रह एक ही स्वाति पर करना था जिससे उनका स्वर्ण एक सुंदर
में देखने पर एक साथ किया जा सके।

Value विश्वास की दृष्टि से इसमें ३२ मकरार की नामावली भिली है
जिसमें से पूर्ववाले के विश्वास श्रेण मकरार की नामावली मागत धूलित कुत्ते
रसिक गन्नयामल के बख्शार है। परम्परा ने रसिक गन्नयामल के पाँच
मकरार—हरिदास उलासार, कर्मदीवार, प्रभासदास वैकार, मागती और
कल्याण पूजारी—का उलेल उजमदास जी ने प्रस्तुत रचना में नहीं किया है।
बलतु इसमें रसिक गन्नयामल के ३२ मकरार की नामावली भिली है। इस
परिचय की बच्चे और लिखित विषयात यह है कि इसमें गोस्वामी दिबरकरण जी के जन्म-
काल तथा निकाश कंसतु के उलेल के बाद उनका लिङ्ग-महल बादश में निवास का वर्णन
भी किया गया है।

5— सबसे पन्द्रह से रसिक उनका वैश्वादा।

सुन्द महादेश प्राप्त हित पूरा रत्न बिलास।
वर्णा बलिदण व्रजांन जान्या। प्राप्त वास वन को मन मान्यो।

सबसे स्वातंत्र वन को मन मान्यो। मानव यथािल धनं जान्या।
प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।
प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।
प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।

— सबसे पन्द्रह से रसिक उनका वैश्वादा।

प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।
प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।
प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।

— सबसे पन्द्रह से रसिक उनका वैश्वादा।

प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।
प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।
प्राप्त वास वन को मन मान्यो। मानव मन वर्षी बलि रंगनीय।

— सबसे पन्द्रह से रसिक उनका वैश्वादा।
नागरी प्रचारिणी समा, वाराणसी, वे प्रकाशित कोझ रिपोर्ट में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रंथों का व्याख्यान किया गया है (१६५६-४३५) प्रथम भाग १ के संख्या १०५ ' से पृष्ठ ११२ तक दुकानम है। किन्तु नागरी प्रचारिणी समा में दुकानम कृत मण्डल की कोई हस्तलिखित प्रति प्राप्त नहीं है। बल्कि प्रस्तुत विशेषता-नोटिफिकेशन के आधार पर हमारी ज्ञानार्थ है। इस मण्डलम में १४३ पत्र हैं जिन्हें प्रति प्रति २३ हैं परन्तु यह प्रदान किया गया है और हमारी परियोजना (ब्रह्मपुर) ५५५ है। इस विषय में क्रिया की लिपि केवल और नागरी है। लोकप्रिय रिपोर्ट के संकड़ में हमने उपलब्ध हस्तलिखित प्रति जिला वाल्ड्रा के संकेत पर निर्धारण उपलब्ध था। पात्र (२) हमारे वेब साइट - विषय का चरित्र है। हमारी अभी केलेंद्रिक के चरित्र से हुआ है जो इस प्रकार हैः

"चेतन भारत भे एक घायली। महा परम पढा न जानी।।
कर्म हर हीन कर बस्थाना। देश वोडेशा के वोडेशा नाला।।
मानो लोक तह ज्ञान वह जाह।।
हां धीर सिद्ध है।।
वेवार्या प्रेम लेई भागें।।
भारत मांढ़ मांढ़ एक भागें।।

"नुका पढा हरी को रक्षा।।
भारत वोडेशा दीड़ारणा।।
जब तम घड़ वें घड़ शवा।।
दर्शन के पात्र संक्षेपरिता।।
वोडेशा में मर जो कोई।।
र के देश नीवाहन हो।।"

७३- लोक में उपलब्ध हस्तलिखित प्रति का व्याख्यान किया गया है (१६५६-४३५) प्रथम भाग, पृष्ठ ३८५-३८६, ज्ञानक १०५ ' स ', प्रकाशक नागरी प्रचारिणी समा, वाराणसी।
चेतनामा प्रेम जो परवरी नशोदिश।
लागी भाव कौर शम नीचे लागी पैठ।
गावही पद चेतन के लोग।
करही भाव मानही भरा मोग।
वडिशा देश महत जो गोर।
शैल वेदनौ मए खीणा हों।
चबस बच दे घर-घर दुःख मानही यून गावही।
घरम पूंच दे चीत न होलावही।

चेतन और नीतवानन्द ऐ नही गए न होँ।
और जो सम जन घाये रहें जहाँ जो की लोग सो।

(अपूर्ण)

लोक रिपोर्ट मे इसकरत कृते पुपपारी मुख्य का विवरण भी नाम्न होता है जिसका रचनाकाल सो १७२६ वि० है है।

संस्कर संवर से छोड़ा। हृत सन तथा झूल चारिशा।

'पुपपारी' मे वन मे 'श्री युष्म देव की बस्ती' के बनातः

वनना युष्म मुकुदवास के संबंधित किया है। जिसके अन्त है कि वे मुकुदवास की के शिष्य थे।

नाट मुकुदवास युक कर।

जीन्द की वरन मारी हम धर।

(ड)ग दर लोग भरे ठेकार।

देखात दरक पाप भर जाय।

क्षेत्र किस्त जो गोरोणा का नानीक का व्यास।

तब किल्ले जा हरन के प्राप्ते - मुकुदवास।

- लोक में उपलब्ध हस्तलिखित गुरुओं का गठरहस्य कथा संकल्पक विवरण (६४५६-४३८०)

- प्रथम मान, मृ० ५०, प्रकाशक नागरी प्रवारिणी समा, वाराणसी।

- वही, पृ० ३७ - ३८।
श्री परशुराम चुँबूँदी ने इन्हें शिन्नारायण का गुण माना है और
शिन्नारायण का जन्म काल उनके व्यक्तार सं १७४३ है। ४ इसके साथ ही वे
मकसुमिरिणी की को इलाके के प्रभुपक्ष गुण के रूप में जतन्त्रित के व्यक्ति पर निर्दिष्ट
करते हुए हन दोनों वस्त्रधाराओं को निर्मित करके बड़े रहते हैं। ५ इनकी प्रमाणिति
वरन, वाराणसी के सौभाग्य में ग्रंथाक ५०६ के पत्र सं ३०-३३ पर इलाके के
कविता सुरक्षित है। सिन्नु इनके इलाके के जीवन का प्रस्तुत करते थे। कोई सहायता
वहीं पिल्ली। जो भी हो, 'पुजुपावती' के रचनाकाल के इलाके का
सं १७२६ वि.स. 10 तक जीवित रहना सिद्ध होता है।

63- मकसुमिरिणी - प्रमाणारूप:

"मकसुमिरिणी" के रचयिता श्री प्रमाणारूप की है। बावा कृष्णानाथ के गद्यांग के राजस्थान नामक गँगा भें बुद्ध।
बापके पिता का नाम बाबुलवे, माता का नाम गंगाबाई तथा गुण स्वरूप अदाकार थे। बापके जन्म सं १६४० वि.स. 10 के लाखा वि.स. 10 है।
प्रमाणारूप श्री के पर्व ग्रंथ उपवन्ध है जो प्रकाशित थे। इनमें नाम है
प्रकाश के स्वरूप: - मन्नाची, चांदक, मकसुमिरिणी, मकसुमिरिणी, मकसुमिरिणी, मकसुमिरिणी, और राधिका मोहिनी। ये सभी रचनात्मक प्रमाणारूप की ग्रंथावती की
नामक ग्रंथ में संगीत हैं। इसके प्रकाश का प्रमाण कृष्णानाथ, धुमस्वरूप, सहरा
निवासी है। प्रस्तुत ग्रंथावती मकसुमिरिणी "पृष्ठ २९ से ३६ पर
विक्रय गया है, इसमें रचनाकाल का कहीं भी उल्लेख नहीं है। राधिकामोहिनी
बापकी शिन्नारायण रचना प्रस्तुत होता है। विख्यात रचनाकाल संवतः

6- परशुराम चुँबूँदी-उच्चरी भारत की सन परम्परा, पृ ६३६, द्वितीय संस्करण, २००२ वि.स., प्रकाशक प्रेस लीडर प्रेस, हल्लाबाद।
7- इंगो होके, पृ ६१०।
8- प्रमाणारूप की की प्रमाणारूप - जैसे दे शरद दे पृ ६०६, प्रथम संस्करण, २००१ वि.स., प्रकाशक कार्यक्रम कृष्णानाथ, धुमस्वरूप, सहरा।
9- वहीं, को शब्द, पृ ३।
5- वही, पुस्तिका पृष्ठ - ३।
१७६४ वि.स. है। ७ ब्रजस्वल इसलिए रचनाकाल ३० श्रीमद वि.स. है तथा नामांकन का साधन है। "मकसुमिरिवति" में मकस्माल में नाम भक्ति के नाम का ज्ञान उल्लेख मिलता है। यदि मकस्माल के मक्खन के पुराती के रूप में हैं तो इसमें ३३५ स्थानीय हैं। रचना के बन्ध में स्वयं लेखक इसके महत्व को इस प्रकार उल्लिखित किया है:—

"ये ब्रज मक्खन नाम उठे गये। रस का ताति मो यह भये।।
श्रीमल राधारमण पुजारी। भान दी सों में उरानारी।।
मक्खन नाम सुमिरी अली। पदल सुनह बारी ही रस सीनी।।
प्रात पड़े मक्खन के नाम। तौ उर फली स्थाया स्थाय।।।
मकसुमिरिवति सुमनरकार। प्रीत्यादास स्तन पद रच धर।।।" ॥

संबद्ध "मकसुमिरिवति" में मक्खन के नामांकन लिखे हैं, जिसके उनके जीवन के कारण प्रकाश नहीं पड़ा। "भक्ति-रसविज्ञान" में मक्खन के नामांकन के साथ उनके जीवन के सम्बन्ध में निर्देशित विक्षेप हेतु लिखा गया है किंतु परिणामी पुस्तकों के अन्तर्गत विचार किया जायेगा। फिर भी, मक्खन का स्वर्ण करने के लिए 'मकसुमिरिवति' का नाम रचना महत्वपूर्ण है क्योंकि यो वस्त्र में सभी मक्खन का समृद्ध हो जाता है और यह वह जय को समृद्ध हो जाने वाली प्रजनना में लिखा रद्द है।

प्रीत्यादास जी ने रचना के बारे में फलहाल महादर्शक बनाए रखने का प्रयास किया है। उसके प्रकट है कि कोई गद्दीय प्रेम विश्वास के सम्बन्ध में मक्खन का समर्पण किया है।

---

१— संवत १८२६ सात है, तब तक श्री वद्भु चार।

tिथिः त्रितिया चैत्रामुशी, नामामी सत मणिवायार।।

— प्रीत्यादास जी की प्रवत्तिः, पु.०९०, हृद ५०४।

२— यही, पृ० ३६, चोपाई संख्या ३३६-३३५।

३— भक्तिवद्वारवर्त्ति महाप्रभु चैत्यकुमार।

— यही, पृ० संख्या ३६, हृद ६।
शादार्शक स्नायु करना उनकी धार्मिक वास्तव का महत्वपूर्ण अंश है। वर्तमान समय है सम्प्रदाय के विकासियों के हस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी हर्षकी रचना की गयी हो।

२४- मक्कन विचाली - अंबरदास :-

श्री अंबरदास प्राप्तित मक्कन विचाली की दो हस्तलिखित प्रति जटा तो ४७३। २९ और ५६२१२९ पर नागरी प्रतिवेणी समा, वाराणशी के प्रसंजाल के सुविधामें दर्ज है। जटा प्रथा ४७३१२९ में तब ४ पत्र हैं जिनमें यह मक्कन विचाली लिखित है। यह मक्कन विचाली शास्त्र होता है किंतु इसमें प्रति देखिया का कहीं भी उल्लेख नहीं है। इसके बत्तिम पत्र पर अंबरदास का उल्लेख और इसके स रचनाकाल ग्रन्थ लिपिकाल का इस प्रकार विवरण दिया है: ।

इति श्री अंबरदास मक्कन विचाली समा। मीता पीत सुधी तृते जुल्लास तो ५५०६। ।

यहाँ इसका रचनाकाल पीत सुधी तृते जुल्लास में ५५०६ दिया है।

सुधी ५५०६ क्वातित हस्त का उल्लेख नहीं हो सकता। क्यों कि प्रति देखिया प्रभाव में संवत्त योनि बने है जो जटा प्रथा ५६२१२९ में यह रचना पत्र सो३३२५ तल पर है। यहाँ इसका रचनाकाल का उल्लेख नहीं है, किंतु इस जटे में नया रचनारी भी है और जटे के बत्तिम पत्र पर, जिस पर योनि बौँकियार नहीं है ज्ञान के बखार हस का पत्र ५५ होता है, इसके लिपिकाल और लिपिकाल का उल्लेख इस प्रकार है:-

इति लाव मोहनराम श्री राम - - - - श्रावश बनी ६ - - - ५६२५

स्पष्ट ही इसके प्रति देखिया लाव मोहनराम श्री राम है जिन्होंने इसे सो३३२५ विवेक के श्रावश बनी ६ की लिखा। इसके शास्त्र पर यह प्रभाव किया जा नीलामितवादी की क्रृत्वाली - भूमिका, भूमिका, वास्तविक, अंबरदास, ३६

२-अंबरदास - मक्कन विचाली, पत्र सो३, हस्तलिखित प्रथा ५६२१२९, प्राप्ति स्थान, नागरी प्रतिवेणी समा, वाराणशी।
सकता है कि 'भक्ति खिदावानी' का रचनाकाल सं १७०६ दिसंबर होगा। और बीच का जन्म १७०२ दिसंबर होगा। 'बृहदराजा' का जन्मकाल सं १७०५ दिसंबर होगा। ब्राह्मणिक भक्ति भक्ति का रचनाकाल सं १७०६ दिसंबर होगा। निष्क्रिय निष्क्रिय रूप से नामा जा सकता है।

इसमें प्रथु की महिमा के बाद २००५ पौराणिक मधुरों का समर्पण किया गया है जिनके नाम इस प्रकार हैं:— धिनामुख, वनप्रसाद, भोजण, विदुर, मुकुन्द, और सुमित्रबी। इसके बाद कृष्ण की महिमा के परवाह ने क्रिया में क्रिया में रैतिक प्रकार का यह वाचन किया है। यह वर्ण मातृकाठार्य नहीं है। शक्तिके रूप में, व्रज में और कवियों के नाम इस प्रकार है:— दृश्यवास, रामानन्द, पीपा, विज्ञापन, वरदास, नामदेव, कवी, कृष्णासव, मधुकर, मीरा, गोस्वामी। इसमें विकारण मंगल रामानन्द विकारण कर्ममें सम्प्रदायकार्य है और इस कृष्ण मंगल अवधारणा के कारण जिसे यह भूमान नियम जाता है। इसके साथ-साथ रामानन्द-सम्प्रदाय का नाम आरोह रहा होगा। स्वयं हरभजन ने आगे बढ़कर 'रघुनाथ' और 'रामनाथ' में अपनी अद्भुत चर्चा की है। इसके निर्मलितक शब्द इस्तेमाल है:—

इस उद्देश्य में निर्मलितक कान्तिक तथ्य प्रकाशित होते हैं:—

(१)- लेखक रामनाथकुमार मंगल रहा होगा और यह किसी परिसर का शिक्षक था।

२- इस्तेमालितक हिंदी पुस्तको का विषय कविता — वन, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, लेखक के शब्दावली का उल्लेख मात्र है।
(२) भुक्त-फल की प्राप्ति की शाकाहार्य से उपकरण ने मकार के यथागतान को इस रचना का प्रतिपाद बनाया है जोकि रचनाकर नाम है प्रीतमप्रत्येक विश्वासी है।

अतः, इस के सविस्तर विवरणात्मक विश्वासी है। मकार के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं कथा उनके सर्वोच्च दृष्टि तक प्रकाश नहीं पड़ा।

64- महात्मा — ज्ञाताद: —

प्रस्तुत महात्मा के रचिता वाद्यकाय श्री ज्ञाताद चारणा हैं।

ये दातृशारी श्री दरनाथ जी के शिष्य थे। 6 ज्ञाताद जी के पिता श्री जगद महाराज में जीवन के निकट माता का नाम के की दृष्टि वांचा के चारणा थे।

ज्ञाताद जी जोधपुर नरेश विज्ञानी जी के समकालीन थे। इसका प्रमाण श्री उत्तराधुं उज्जवल ने इस प्रकाश किया है।

उस नरेश ने सन 1896 में पीकरण के बीर उद्धिमान व सुभद्री ठाकूर देवीसिंह जी गायत्री चार जेन सरदारों को किले पर ठोसा देखा पकड़ते थे और मर्म दिये। तब देश के ऐसे प्रमुख नेताओं की त्यारी मार्ग तथा मार्गवाद भी सोर सरदारों में मकर फूट झाला कर देश व राष्ट्र की हानि करने के लिए। सरदारों के बने पर ज्ञाताद जी ने महाराजा विज्ञानी जी की उनके समकाल उपालम्ब रूप राजस्थानी पाण्डव में एक गीत (काव्य) युगाय दिखाय महाराज बनना दूषित हुए परन्तु साथ व जाति दे चारणा होने के कारण दोष यथार्थ नहीं दे बसे पर हताश बंकुच कहा ' जाप हो गए तो न होती स्वरूप नहीं गया।' बताया है वेश्वर भूपन के हेतु गृहस्थ का कांग्रेस होड़कर बांध द्वार फिर भी जाति के चारणा है। इस नरेश की गायत्री में निष्कर्षक कार्य कार्य ज्ञातत्त्व कहने चाहते होटल-होटल नहीं होड़ा। उस समय ज्ञाताद जी वृद्ध थे।

6- नाम महात्मा चारणा जय, हमाराई किशोर निहाल।

दुश्चिरां गुरु हरनाथ दू, दाँदी दीनदया। — ज्ञाताद-महात्मा, 90036, 9012, 15, संवाद चारणा कृप्ति उत्तराधुं उज्जवल, प्रयोग संस्करण 1956 निती, महामहो ।

2- वही, प्रभातव देवाडी की प्रस्तावना, पृष्ठ 5।
स्त्रोः, अभ्यास का उपस्थतिविकाल से १५५६ मिनट तहत रहता है। इन्होंने अपने 'भाटमाल' के रचनाकाल का निर्धारण नहीं किया है। बुद्धानाय: इसका रचनाकाल से १५५६ मिनट लगा रहा होगा। इन ६२ पुकारीये पुस्तक में अभ्यास के ६ महत्त्वपूर्ण कालों का जीत है जिसमें पौराणिक और ऐतिहासिक महत्त्व कार वर्णन किया गया है। इन पुस्तकों की कल्याण अध्याय २१ और २३ है। पौराणिक महत्त्व कार के नामली प्रायः नामावरिकित भाटमाल से मिलते-जुलते है। ऐतिहासिक महत्व कार के नाम इस प्रकार हैं:- सेन, दास, कचिय, सुरालसिङ्ग, चाँद, नागदेव, निलोकर, धारणा चोल, नखी मेंदा, नीर, बामल, बुकेक, जयदेव, रेदाल, चिरायत, बिराय, नै बैमल, मालेव, करमा वाटी बुर, घाट, मानावल भाटमाल। इनमें से दास, दुरालसिङ्ग, निलोकर, धारणा चोल, नखी मेंदा, बुकेक, चिरायत, बिराय, मालेव और करमा-वाटी नामक महत्त्व कार का उल्लेख नामावरिकित 'भाटमाल' में नहीं है। रामचंद्र ही कवि ने अपने समय तक के राजस्थान के महत्त्व कारों का यह भाटमाल में स्थान किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम भाटमाल में ४ दोहे और ६६ रामकवि हैं। भाटमाल दिल्ली में ३ दोहे, २५ विन्यासी और १ कविता; भाटमालविद्वान में ४ दोहे और ८ विन्यासी प्रायः भाटमाल कृति में २५ अन्त, है। भाटमाल पंचम नियांकनी कविता है जिसमें लिखा गया है जबकि अन्यम भाटमाल गीत शैली में है। चाराण कवि उदयराम उन्नतकल ने पुस्तक के प्रस्तावना में कहा है कि "मे प्रथम भाटमाल जी ने तो चुरूँ महात्माल के २५ बेहद अधिक लिखा जो हमारे दस्तमाल का लिखे गए। प्रथम भाटमाल के बा० २० अन्त और चुरूँ महात्माल के ६६ अन्त होना कही जाते हैं। जिनके लिए वे मार्गदेश में मारी जाते के अनेक के कविता और अन्य सजनों में पूछताछ की और गधियों में भी गया पर्यंत प्राप्त नहीं हुए, बल जो मिले ही ही लिख गए हैं। कवि ने सबसे पुकार में बयान करने का निर्धारित किया है और अनेक पृष्ठों की रचना भी की है। इस पुस्तक की कल्याण प्रायः प्रस्तुत कविताओं निम्नलिखित है।

(१) - इसमें कई ऐसे महत्व के कविताओं के विषय में परिचय मिलता है जिनके लिए अन्य महत्व सम्पादकीय -

1- अभ्यास - भाटमाल, संपादक उदयराम उन्नतकल, इतिहास सम्पादकीय - प्रस्तावना, पृष्ठ ८।
उद्वाहसमारण - सुवासनिष्ठ, विलोकन, चारण, चीसू, विद्रोह, चिरिया, कर्मचारी, मालदेव। कवि ने महाकाव्य के कृति महाराज के साधारण परिचय दिया है।

(२) - कथन समाप्त शेष कथन लेखक के निर्धारण से कवि की कृत्ति का परिचय मिलता है।

(३) - कवि ने प्रत्येक महाकाव्य के जीवन की किसी एक वैलिक्षित तथा महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया है जिससे यह प्रकट होता है कि मारवादी के द्वारा महाकाव्य का सबसे उदार होता रहा है। स्वयं कवि ने मारवादी का प्रारंभ --- खिय माता का वारणा मारवादी दुर्ग --- शब्द द्वारा प्रत्येक महाकाव्य के साधारण परिचय किया है।

(४) - इत्यादि वरिष्ठ महाकाव्य और कवि रामानुजमण्डल, वारकरसम्प्रदाय, रामसैनी सम्प्रदाय, कविता विभिन्न सम्प्रदायों के अनुसार हैं। ऐतिहासिक महाकाव्य में नामांकित वरिष्ठ महाकाव्य की महत्त्वपूर्ण निर्माणता केल सृजन भी होते हैं।

(५) - राजस्थानी मारवाड़ में सहायता नरेश वाली यह एकमात्र रचना है।


dhitarashikanamavali shreeshit chandralal

"dhitarashik namavali" के रचयिता श्री श्री दिष्ट चंद्रलाल है।
यह रचना श्री दिष्ट हरिबंध गौतमजी रचित "श्रीहित चौराही" में पुस्तक संख्या ६२ और ६३ पर दी गयी है। इसका विषय संस्कृत विद्वान जेम्स प्रकाश, बृद्धि वादने संस्कृत विद्वान विद्वान धर्मेन्द्र प्रकाश एवं विद्वान निर्माण श्री हरिभान जो भारतीय संस्कृत विद्वान है। श्री तिरुत्रि नाम के रचनाकाल से पूर्व महान्योगक नामकारण विद्वान है। श्री तिरुत्रि नाम के रचनाकाल से पूर्व महान्योगक के नामांकित नाम हैं। श्री तिरुत्रि नामकारण के सम्बन्ध में श्री तिरुत्रि नामकारण के नामांकित नाम हैं।

६- श्रीहित चौराही, पुस्तक
कान्हर स्वामी, प्रवृत्ति, कथांगण, तलक्वामी, दामीवर, पुंकुर, पुनर्विहित, हरिदास, काव्यवर, राधिकादास, हरिभाषण, मोहनमालिकादास, द्वारिकादास, दुमरुख स्वामिलाल।

ये सभी मंगल राधावल्लभ सम्प्रदाय के हैं। नामों से स्पष्ट है कि इसमें मंगलादास से वितरिक्त उन सभी मंकों को स्थान दिया गया है जो कि राधावल्लभ सम्प्रदाय के बढ़ताएं। इस प्रकार यह साधारण सिद्धांत दुर्गिणिकौण्ठ पर शापारित नामावली है और मंगल की परम्परा को एक सीमित परिपूर्ण में तथा एक विशा विशेष की बौद्ध अभाव करती है। काव्य की दुर्गिण से प्रस्तुत रचना का कोई महत्व नहीं है।

१७- मंगल के नामावली श्रवणा भाषा वहाँ वहाँ । - गरीबवादः

गरीबवाद कुल  मंगल के नामावला  नामक हस्तलिपिका क्रेसी नागरी प्रचारिणी समा, वाराणसी के संग्रहालय में उपलब्ध हस्तलिखित पत्र है। इस ग्रंथ के पत्र सौ २० से ३० तक वर्तात दोन पत्रों में लिखित है। इस रचना में रचनाकाल और लिपिकाल का कहीं भी उल्लेख नहीं है। लिपिकाल के समकालीन ग्रंथान्तर में  मंगल वहाँ वहाँ देते हुए इस प्रकार कहा है:-

"चतु वी जस्तोस मंगलारवंद नागरी प्रचारिणी जी के मंगल वहाँ वहाँ संग्रह समाप्त बस्य रण सत्य राम राम।"

इससे माना होता है कि वह रचना के नामकारण के सम्बन्ध में एक निविदा मंगल नहीं पहुँची था जबकि प्रतिविम् प्रतिविद्या की कृपा के कारण एक रचना दो नाम बने या प्राकृतिक उपलब्ध हो गये हैं। इसी तरह मंगल उपलब्ध हस्तलिपिका प्रथम का ब्राह्मणाणि क्रामिक लिखित है। प्रथम भाग के ब्रजकार

१- गरीबवाद - मंगल के नामावला, पत्र सौ ३२, हस्तलिपिका, ग्रंथांक ६५५, भाष्य-स्वामी - नागरी प्रचारिणी समा, वाराणसी।

२- लोक में उपलब्ध हस्तलिपिका हिन्दी ग्रंथां का ब्राह्मणाणि क्रामिक लिखित धनु १६४१-४३, प्रथम भाग, पृ २४६-२५०, प्रथम संस्करण, २०१५, विद्र क्रामक नागरी प्रचारिणी समा, वाराणसी।
व्यवस्था निपितलाल १२६२ वि.स ८५४० वि.स १६४ वि.स के वक्तात हैं, किन्तु एल्ड़ग्र्स्वायक कोई प्रमाण नहीं मिलता। बाद में दस ८५४० वि.स १६४ वि.स के बीच की प्रतिलिपि अविचारः रूप से नहीं कहा जा जा सकता।

यह रचना पवनस्वरूप है, किन्तु दोनों भाग और उनकी संख्या का कोई विवाद नहीं है। एकलकारणा में लिखित इस रचना भर मकर्ष का नाममात्राधीन विषय गया है। जिनकी संख्या २१ है। इन्हें हम काढ़ी में रख सकते हैं:-
पौराणिक शैल शिक्षार्थी। पौराणिक मकर्ष में कल्पना के गुर्गः तालीक लक्षण का नामविलक्ष है। ३५ मकर्ष की यह नामावली नामाबिबंधत मकर्षाल शेष के वागः पर ही है। वेश ६२ मकर्ष कल्पित है। इनमें ६३ ऐसे मकर्ष की नामावली भी है जिनका स्पर्श नामावला ने मकर्षाल में नहीं किया है। इन मकर्षों के नाम बहु प्रकार हैं:-

नीयानव, नानक, दादू, वावन, क्योल, सूर्यभ, मुहूर्त, नामावला, देवल, जैत्याल, दूलावत और क्षेत्राल।

ऊपर दिया गया विवेचन से यह स्पष्ट है कि यह रचना मकर्ष की नामावली प्रपन्न करती है तथा ऐसे मकर्ष बहु और कार्याल के जीवन द्वारा संदर्भ प्रोज़ा में नहीं बांटा। इस रचना के द्वारा क्रिया का उद्देश्य पालिकाप्रमाण में मकर्ष के यासितान हार्दिक पाठकों को वाम पद्म की प्राप्ति कराना रहा है। किन्तु कहीं संन्यास के नाममात्राण के साथ इन्होंने बन्द राम और कृष्ण मकर्ष तथा कान्तकों को कह दुयाधि में रहा है। ऐसे—रामावंि, रामायण, तुलसी, महावल, नामावला, क्षेत्राल, सूर्यभ, परमात्मन्दिराल, विज्ञापन, हरिवंि गोस्वामी, गोराक्षाले शादि। स्पष्ट ही क्रिया के इनके यद वर्षान में इस निर्देशाला को जायार बनाया है।

9- सजिलू देव देवी देवी श्रीराम ब्यापार सहित मनावो।
कव्य नान श्रीराम तलाक गार अथवा पावो।

—— गोराक्षाला मकर्ष के नाममात्रा, पत्र सं ३०,
भक्तिविनोद - किशोरकुंड विभागाधिकारी:-

भक्तिविनोद के रचित दी वृत्तांत है| इसका नाम जानकर वाहन की परिक्रमा भी निर्देश है| जा-जीवन-साहित्य विभाग में सम्पूर्ण जानकर नामक के पुस्तकें थे| संचालक इसी कारण हमें जानकर वाहन का परिचय विस्तार के साथ दिया गया है| परिक्रमा के साहित्य से यह प्रमाणित है कि मकर नहीं प्रमुख वे मिश्रित महिमा के वार्तन के उद्देश्य से इसकी रचना हुई थीं—

भक्तिविनोद नाम लेख राजा| मकर नहीं मुहिमा कह भाषा| परख परे सपनाशह पावा| वेदिते ते बहुरि फायन चलावा| काया जार्त कर ही ना| चरणजाह पर परख की न्हा| यह अपराध सुधिफ कर मन भाग| तकही भक्तिविनोद वनाह| ॥

पद्मिनि सुनिश्चित जो कोई| मकर विनोद गर्ये यह| मला ताक का होह| कठिन कर नष्टार्थ सब| ॥

होंदों निलोकीनारायण दीर्घित के वस्त्रार में जानकर वाहन की परिक्रमा के ठीक सहित शास्त्रियों में उपलब्ध है—भक्तिविनोद और 'जानकर-साहित्य की पुस्तक'। होंदों दीर्घित के लागे चलकर यह मैं कहा है कि इन दोनों प्रकाशियों में केवल नाम का भेद है—'भक्तिविनोद' का प्रकाशन लखीमपुर प्रेस से सन १९४४ वि.स. में हुआ| वृत्तांत के शीर्षक पर जवाब दुल नहीं कहा जा सकता।

परिक्रमा के बारे में बापका जन्मस्थान बांडाकी का बीड़ा गांव है| दुल समय बाद बाप बीडा होरटका कोठा में रहने लगे| नाम जानकर वाहन के समकालीन और

6- वृत्तांत - भक्तिविनोद - हृद ६४।
7- वही, हृद ६६।
8- होंदों दीर्घित निलोकी नारायण - परिक्रमा साहित्य, पृध्विन ७०, प्रथम वसंतक, १४५०, प्रकाशक निलंबितानल्य हिंदी पुस्तक, लक्ष्मण प्रि०।
9- वही, पृध्विन ७१।
रामेश्वर के शिखर थे। हन्नोने गये गुथे गे ग्रंथ से रचना के गाजा प्राप्त की थी। इस ग्रंथ की रचना जातीय साहित्य के अनुरूप के ३४ वर्षों बाद सं ६४६८ वि.से की वैशाख चुरुला सप्तमी को सम्पन्न हुई।

श्री बौयानाश कुमा मन्नि विनोब के रचना के दो प्रशंसक ब्रज बाने जा सकते हैं: एक यह कि जातीय साहित्य का चरित कर्मव और उनकी साहित्य तथा इसे नामाजित भक्ति क्रम से प्रभावित हैं:-

"तव सिवः - दुःखरि को समुकायी। कीड़ कीड़ मक्खि जलत सब बायी।।
वजन पाप पापी तजन जाहि।। राम मक्खि तचक रहत सो नाही।।
राम मक्खि तस माहिन नहीं हैं।। पाप पराह दुःख ती गैह।।
मक्खि मर हैं कला घनेर।। राह गर्मी सब नहिं टौर।।
जल भार जा आगान चरान।। तौळे सम्पा के भक्ति चरान।।
रामेश्वर नाम नाम भक्ति माहिका।। तेहिमा मक्खि महिमानाला।।
समर जाता जा जीवन चर्चा।। नाम तिनकी फिरती ज्ञान।।
रामेश्वर सह कर दाया।। तबर बौद्ध यह ग्रंथ ज्ञाता।।
सत्य दया पैदा हिंदाए जीन्दः।। श्रद्धा के हुक्क यथान के दीन्दः।।"

बन प्रशंसा यह उठता है कि एक ही 'त्यक्ति' एक ही रचना की दो अलग नामिते मे किस प्रकार प्रत्साह कर सकता है? इस प्रकार का कहतुत्कारता गद्दाभाविक ही कहा जाता। जातीय साहित्य का परिचय नन्द सन्तों की तुलना में अवधारित विस्तार से किया किसी तिलकार के कारण संभव है कि नन्द परिचय सन्तों की कौटियों में एक रख किया हो और द्वितीय हह से परिचय मानना चित्त की सीमा तक वनिय भी नहीं होता। परन्तु हेड़ो दीर्घालक का परिचय पिछला जनन माहिर से अस्तुत्व प्रतिव दोहा है। अन्याय रचना के उपरि उदयन से प्रकट है कि किव का उदेश्य जातीय साहित्य के साथ-साथ नन्द समर का यहोगना भी था। पूर्वकी पृष्ठों में दिये गए मल्लने उदयन जगत कृति रंगक नन्द के - और 'रंगक परिचय' में भी इस प्रकार के वर्णन होते हैं ज्याँकी यहाँ कवि ने सीक्षित हरियल की कार्यन

---

९ - कवि, पृष्ठ ७२।
राजस्थान प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक
चर्चा है। इस ग्रंथ में लिपिकार लिपिकार का तत्परता है। उनके अनुसार राजस्थान
प्राचीन सिवा प्रतिष्ठान, जयपुर के विभागाध्यक्ष ग्रंथ में
भूगोल सौ ७४।६६४।५६४ पर पारसरामकृत पंक्तमाल की एक

परवारम विराजित मक्खल मक्खल के नामस्मारणमात्र है।

इस चार-पाँचवीं सेठक प्रति के 62 झूठों में लगभग 335 मक्खल की नामात्मक प्रस्तुत की गई है। समस्त मक्खल तथा सदस्यों को कविता ने पूर्ण मानते हुए उन्हें महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। कवित के शब्दों में—

ि जिन राज जीर्ण गांवाणी \ । जिन कार शैल किया जाया करी नारे निराकारी \।

उद्वाह प्रसवाधिक दृष्टि का अगाध सुन बांधा \। सफल बन भी आप बा मारें \।...

मक्खल दुनिया गर गावी \। जो जीती तो दुर्स न बाचें \। उन की राम मक्खल इतिहास वरीयण समाप्त। \। "--पत्र वर ५५२।

इसमें वरीयत मक्खल पौराणिक और इतिहासिक है। पौराणिक मक्खल की संख्या 62 हैं जबकि इतिहासिक मक्खल लगभग २७२ हैं। हैं संख्या ३४ तक पुरातात्त्विक मक्खल का उल्लेख है। पर्याप्त इन मक्खल में नामात्मकता तथा वक्तावाद प्रसारण की जूती भी है जो गई है। शाय इन्हें में वरीयत इतिहासिक मक्खल को कविता तथा हरायर मक्खल की अणुरी

भर मक्खल के संग परम गति पाए। समक हुआ अब जानी। फार्टिक तिमिर घट भी उजा। संस्कृत प्रसारित निःशंक तिहाणी। परवारम परमकरति के बुध। कवि न साहित्य कुंज यथिहाणी।

वहीं, पत्र संख्या ४५०।
परन्तु इसे मंगाव तथा कहियों के बीच पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। अतः यह सुविचार-मात्र है।

20- भगत पटीली - लेखकाम:

राजस्थान भाषा किया प्रविज्ञान - विषयामूर्ति ग्रंथ संपूर्ण, अध्याय के
हस्तसंस्करण ग्रंथ क्रमांक 68 में 44 रचनाएँ संपूर्ण हैं जिनमें क्रम दर्शा 4 पर
समाप्त विचारित 'भगत पटीली' और क्रम दर्शा 50 पर हरिदास कुल
'मातविदाली' भी प्रदर्शित भावण हैं। 'भगतविदाली' के संबंधित नियोजन
परवतीं' 'मूर्तियों' में प्रस्तुत किया जाता था। उक्त हस्तसंस्करण प्रेमदास का लिपिकाल
सो 10846 विश्वास बहुत ज्यादा ऊँची तथा लिपिकाल दारुबीती बाबा संतोष-
दास जी के शिष्य रामजी जी हैं। १ 'भगतपटीली' प्रस्तुत उपकरण के पत्र संख्या
68 से 24 तक में दर्शित है जिसमें एक 27 लेखों में लगभग 20 मंडलों का विषय
वर्णित है। परन्तु रचनाकार ने अपने जीवन से संबंधित काही संरक्षित नहीं किया
है और न उसके रचनाकार का ही उल्लेख किया है। कुछ विद्वान भाषकों दादू
का शिष्य मानते हैं २ और कुछ निरंजनी सम्रास्य का दादू

eवरथेर संस्करण में नामक्रम भविज, रेवतिक, दादू, पीयांग, बंत, सुन्दर, रामांकुल, इलोचन, फरीक्षेण, गोरी, महर्षी, नारायण, सुमेत, संधर,
स्पष्ट ही कवि ने ऐतिहासिक मकरण और किवियों के बारे में व्याख्या की है। इस कथा के उल्लेखनीय विषयों में यह है कि रचनाकार ने मकरण और किवि की निष्कर्ष प्रति पत्ना का उल्लेख किया है जो प्रायः पूर्णिमा महामात्रा पर ही आचारित है। नत: यह ब्राह्मण पत्ना होते ही का एक परम्परा में बनना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

26- मकरणकिवियों - हरिवाला:-

राजस्थान प्राचीन चित्र प्रतिष्ठान, जयपुर के हस्वन्त ग्रंथ -
ग्रंथालय में प्रथम 2 की रचना संख्या 20 से भिन्न हरिवाल विशेषतः विद्वानों की कुछ हस्वन्तिक ग्रंथ प्रति गुटका संख्या 68 में पत्रों 1552-1558 पर वर्तमान है। यह गुटके में 400दिन रचना है। पूर्विक विवेचन के अनुसार इस गुटका का वर्तमान संस्करण संपूर्ण 1686 विंदु तथा लिपिकार वाञ्छितों को लिखना में जो के पश्चिम रामबाण जी हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ का रचनाकाल ज्ञात है और रचनाकार का जीवन परिचय ही मिलता है। रचनाकार ने इस के विषय में संख्या 68 में जो वातावरणिक उल्लेख किया है उसे भी उनके जीवन पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। यह उल्लेख इस प्रकार है:-

"वाजी संतर सेव विरह गुप्ता सुभুषिण गाथे। भाववकल्प भवान मुगल का पावित्र लल। हरिवाल हरिवाल वचन पलक हाथं में पाश। जाति वान राधे नहीं। हरिवालस्त्र के दास।।13।। हरि भाविनवाली संगृहाः समाप्त।।।।" 

-- पद संवदास

यह रचना श्रीदासाचार्य कोटी है जिसके 87 कन्दों में कविता, रेडास, नातक, जीवनकथा, जीवन, बतायें, वय और वैन का यथार्थता है। हरिवाल, जीवनकथा और बतायें के महत्वपूर्ण श्रेणी विषय में ऐतिहासिक हैं। इन सभी कन्दों के वर्णन ने कवि ने इनके जीवन की एक पत्नी का वर्णन किया है। वैसे कविता की महार के मरने की घटना तथा रेडास की गणना स्वरूप की घटना बाद भाद। इनके ऐतिहासिक वर्णन के जीवन पर कोई विषय प्रकाश नहीं पड़ता।
फलनामाकरी - मानवतासिक

प्रस्तुत "मकनामाकरी" के रचितवा श्री मानवतासिक है। इसका प्रकाशन श्री कृष्णदेव वाजपेयी के अनुसार मानवतासिक जी निम्नलिखित सम्प्रदाय की श्रद्धारी शाखा हरिवाली-शाखा के मुख्य कवियों में से है। हरिवाली शाखा के मुख्य कवि इस प्रकाश हैं ।

श्री-वाजपेयी जी के गहनी सम्प्रदाय(निम्नलिखित) के महात्मा लाल नाथनाडू के शिष्य बनाते हुए कहा है कि "इन्होंने जन्म सन १९६५ (१९७३ ई०) के लगभग बाद में जन्मा है। इनकी रचनाओं में जो पद, हँसी, कविता आदि के रूप में है, प्रभा तथा वेदांत भाषां दोनों मिले है।" स्पष्ट है श्री वाजपेयीजी का मंद जनगणति पर आयोजित है। "शिक्षा के मकनामाला कार गोरखनाथ कलम के अनुसार मानवतासिक जी कृतियों में अपमेय हुए। मकनामाकरी का रचनाकाल वाजपेयी के रचनालेख के वर्तमान मानवतासिक जी कृतियों में लोकप्रिय हुआ।" निम्नलिखित मकनामाला का रचनाकाल वाजपेयी के रचनालेख में उल्लिखित है:

मकनामाकरी में उल्लिखित-मकनों की नामकरण हेतु प्रकाश हैः-

6- कृष्णदेव-वाजपेयी-पु० २५८-२३०, वानवारि संस्करण, २००५ नैन, प्रकाशक वानवारि संस्करण, प्रभाग।

2- कृष्णदेव-वाजपेयी-पु० २५७-२३१।

3- वाजपेयी, पु० २३५।

4- मालबाद-विचित्र श्री मानवतासिक अनुपम गति।

निर्मल कविता निशाचर नाशु वर्ण न पुनर्न्वीकरण।
बानी ज्ञन की निम्न भवन बन्यापूर्ण पीयरी।
सूर्य हाँसाताली सो रसिक वर्ण प्यारी।
बानी ज्ञन सो भान्न ज्ञान सुखमारी।
श्री वन-दास नाम रचित टदूंटी स्पष्ट निवास वर्ण।

यदुनारायन-रसिकभाषक माल हँसी स० ५
(२)- पौराणिक मंत्रः-

गणपति, वस, महेशं, शेष शामी नारायण, लक्ष्मीकिं, नारद, बास्त, सुख, वायु, श्रवरिः, स्वप्न, वर्षी, विद्व, विद्वाने, गोपी - गोप, द्रापु, कृति, पाण्डव, उच्च, चित्रकृति, गृहलाद, विनीतिका, चित, जागतं, हुड्ड, गोपी और गुह।

(४)- ऐतिहासिक मंत्रः-

विष्णुस्वामी, निम्बार्क, माध्य, रामाधुर, तालाचार्य, धूरदास, द्वारक, ज्ञानदेव, ज्ञानसन, वस्त्राय - ज्ञानदेव, ज्ञानसन, गणाधर, नारायणधुर, गवारय, ज्ञान, धूरदास, वल्लभाचार्य, रसका गुरु जात, निदानन्द, बुद्ध, महाभुज, नृत्य, गोपाल, राजचार गोपाल, महाभुज, रूप, वनातन, व्यासदास, हरिभेंग गावस्वामी, हरिवास, विद्वान विमुक्त, नारायणदास, वल्लभ, तान्त्रिक

स्पष्ट ही इस नामाकरण में उन पपों का स्पर्श भी दिया गया है जो नामाप्रि यह मुक्ताल में नहीं है। जिनके नाम इस प्रकार हैं:- धूरदास, ब्रज का गुरु जात, नारायणदास, तान्त्रिक, नारायण, नृत्य, विमुक्त, महाभुज, वल्लभ, भूपेति, गोपाल। काव्य की दृष्टि से इस प्रकार के अनेक महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं है।

२३- मुक्ताल - रामदासः-

रामदास अग्रदास के रामदास जी महाराज कूल मुक्ताल वान-दास, वीराने दे सो २००७ में प्रकाशित 'श्रीपारशर्त' नामक मृत में दृष्ट सो २००७ में ९५० तक पिता गया है। श्री परशुराम चुन्नी के ब्रजार रामदास की का जन्म १- परशुराम चुन्नी की - उच्च भारत की सन २००७ परम्परा - पूरे ६५०।
सौरव १७४३ की फाल्गुन कृष्णा १३ को जोधपुर राज्य के वीजयकोंर नामक गाँव के मैथवाल नामक वांछात के श्री शालिन के घर होने का उल्लेख किया है। ३ रामदास नीलीत-बेहामा शाला के बुल प्रवेशदर्श हरिरामदास की के शिष्य थे। हमने अपने गुरु से रामभान की दीपावली सं १५०६ शिव २० की भैरवा दाता एकादशी का प्राप्त की। इसी पदना के उल्लेख रामदास की के शिष्य श्री चाल्माल ने अपने मक्कमाल में विषय है ३ जिसे श्री ब्रजवल्लभारण ने प्राप्त सरलवाल कृत भक्तमाल का रचनाकाल मान किया है ३। प्रस्तुत ग्रंथ में रचनाकाल का निर्धारण नहीं है परन्तु श्री पारशुराम चतुर्वेदी के शास्त्र शारणमा में हमने अपनी गहरी ज्ञानमा में सं १५३३ में स्थापित की और उनका निर्माण काल सं १५४५ शिव २० है। ३ जिसे अनुमान है कि इस मक्कमाल की रचना सं १५३३ शिव २० के पश्चात और सं १५४५ शिव २० पूर्व हो चुकी हो।

कार्यरतिक की दृष्टि से प्रस्तुत मक्कमाल के चौपाई, माही, नीरवारंग, और वृक्षकूपी हुन्नी में चारों दिशा के कहार-सत्तियों का पुनरूप समरण है। जिनकी सख्या लगभग २०५ है। ये मक्कान अकादमिक नामादास कृत मक्कमाल से कम हैं।

व्यवस्थामें दृष्टि से प्रस्तुत मक्कमाल के वालों को वो क्षेत्र में किम्बदन्ति किया जा सकता है: पौराणिक और ऐतिहासिक मक्का । क्षेत्र में विराजित पौराणिक मक्काओं की सख्या लगभग ४५ है। यह नामादास का नामाविश्वास का मक्कमाल है और वर्तमान नामादास में सीधा प्रवर्तक है। ऐतिहासिक मक्काओं की सख्या लगभग १३० है। ये सभी मक्का विविध सम्प्रदाय के वाचार विरोधी के होते हैं। इन मक्काओं में सं ५० के अंतिम सं ५० मक्का वै है।

जिनका समरण नामादास मे नहीं किया है। स्पष्ट है कि इधर को मक्का मात्र नामादास के पूर्ववर्ती काल के हैं और इनके समस्तीय का यह सर्वसमिक है। रहस्य न होगा:

६- श्रीपाठरान, ३० रामदास-मक्कमाल, पू ५२५, साली ६।

२- चाल्माल - मक्कमाल, भूम्प सं ४५६, हस्तलिखित ग्रंथ, ग्रामण स्थान - श्री सर्वाधिकार जानकी, श्रीनिवास, सु-दावन।

३- रामप्रभुसात्तव नर - मक्कमाल - मधुकरसात्तवी व्याख्या - ३० शुभिक, पुराण, ऊपर, कला, पू ६५५, पू ६५५, सम्पादक - श्री ब्रजवल्लभारण, श्रीनिवास, सु-दावन।

४- परशुराम चतुर्वेदी - दल्लोवर्तक की सन्त परंपरा, पू ६५५।
कि रामदास जी ने अपने समय तक के स्थायित्वनिर्धारित मंगल को इस मंगल में स्थान दिया है। इसके कारण इसका सूचनादाता विशेषता व्यक्त किया है।

1- यह चौथाई - साहित्य की धरार जैसी में लिखा मंगल नहीं है जिसमें राजस्वानी पाषाण का प्रयोग भी किया गया है।

2- हमें विषय तथा सन्दर्भ, वेष्टम्भ, मन्दिर, रामदास, रामायण, रामचरितमानस और रामस्तमल लीला के संबंध में ग्राह्य किया गया है।

3- रामदास जी ने इस मंगल में किशोर रामस्थानिक दृष्टिकोण के साथ वास्तव में बनाकर नहीं लिखा है। क्योंकि जैसे हमें कमाल, जयवल्ला, शेख, फरीद या खड़ाद का पुरातन स्मरण भी है।

4- कवि ने इस मंगल की जाति, स्थान तथा उद्योग की किसी महत्त्वपूर्ण वातावरण घटना का संकेत दिया है। फिर भी उनके जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

24- मंगल - तेलक श्री पालवालः

श्री पालवाल विरलित मंगल की एक हस्तलिखित ग्रंथि श्री प्रवक्त-शरण जैनदत्ताचर्य एवं श्रीनिबंध, पुन-बाने के उपाद सुरक्षित है। यह फिक युक्त के संग्रहीत है उनमें वन रचनाएँ। श्रीमद्भागीत मातृहु, प्रशनोर, मातृहु, शुक्र-वंभ, शुन्यदास, मा त्यों नाम संहार, हरिरामदास जी की गिरा रामदास जी जहाँं रामदासाजी महाराज की गिरा आपूर्वत्र भी संग्रहीत है। प्रस्तुत मंगल में यह युक्त है।

6- के बन्दर नामि हरि युक गया। मंगल कर बन्द भक्ष्या।

-रामदास-मंगल, पृ ६५४।

-थ-प्रावल-बन्धुका संग देशापति का भक्षा। -वहीं, पृ ६५४।

2- के कृष्णदास रामचुला गाया। वे गली का नवन्त कहाया। -वहीं, पृ ६५४।

- गाम संवर्तक बहु युक मिलिया। -वहीं, पृ ६५४।

3- रक्ता - तेलक राम मिलिया। नामा-श्रीपा हरि का दासा।

- देवल फेरु युक मिलिया। खान रूप छूँ मोजन पाया।

परता युक मिलिया। देवल श्रीपा नाम दे कीनी। -वहीं, पृ ६५४।
रचना है। इस ग्रंथ में सबूतित पत्र विद्यान नहीं है। फिर भी इसमें संबंधित
मंगलाल के द्वारा रचित काल शास्त्री निर्देश मिलता है जो इस प्रकार है:-

"कयुक्त पद रच विरोधी। वो भें हेरै विरोध। बालकाल की कन्ना।
राम राम महाराज। 167। हति श्री गृह मंगलाल सद्यूराणाम्। 168॥
इति मिति संयं 15। 16॥ मामा मात्रे शुन्क पदे। इति ॥ 16॥
हुआर। सर्पाण। राम राम राम राम। "—पर्व सं 60

इस चित्रण में प्रकट होता है कि इसके लिखन में दो वर्षों की अवधि लगी है।
सं 1562 चित्र का नाम लगा जाता पर यह ग्रंथ सं 1564 चित्र के वैशाल मात्र की
शुल्क पदा तब खरीदी हुआ गया। कवि रामदास ने शिष्य था जो कि रामस्वामी
रामदास के पौर्ववक्त होमीरामदास जी के शिष्य थे। वहाँसू कवि ने हुआ। संस्करण 1553 से
1567 तक रामदास जी की प्रस्ताव की है जिसके बाद शास्त्री बेघराता (जोधपुर) के रामदास
की चर्चा हुआ। सं 1562 में वह शुरू हुई। बेघराता में विषय प्राप्त, प्राचीन विषय,
विविध विषय का स्मारक दिखाया गया। श्री परशुराम
मुद्रकी ने रामदास का जन्म संयं 1543 की फौर्तिक कुन्तु 153 की जोधपुर राज्य के
श्री शाहुल जी के घर के वीरों के नाम और नाम जाति देखने के लिए उल्लेख निर्देश है।
उन्होंने अपने नक्सल से रामदास की चर्चा सं 1566 चित्र की वैशाल शुल्क एकादशी को प्राप्त की
थी। इस पत्र का उल्लेख प्रस्तुत मंगलाल में भी है जिसे श्री जुगलबल मात्रा 2
प्रस्तुत मंगलाल कुल मंगलाल का रचनाकाल मान लिखा है । कवि के शब्दों में यह कहा गया
इस प्रकार है:-

"समय गंगा प्रस्तुत। कह नव कौलिम वायुक। शुल्क पत्र कार्य कः।
किता रामदास तारा। स्नातक उद्धयान। पत्र संयं शुरू पद उरा।
शास्त्री भिम शास्त्री रामदास है आदरा। बदलके मितिवर महा
पालका था अयोग नित। मात्र कल भूणुम में। जयम वाहामारा नित। "

— हुआ। संस्करण 1553।

8- श्री परशुराम मुद्रकी — उदयभवान की संतपरिषद, मुहूर 670, बिहार तथाकारण 1962
चित्र, प्रौं मात्री भंडार, हलालाबाद।

9- रामकृष्णदेव गण — श्री मंगलाल मकरसाकित्वी व्यासा-प्रौं भूणिका-पूरा चीदं, तथा
650, प्रौं उपयोग की जात्वलमितरण श्री निन्दुक, जन्त्वन।
श्री परशुराम चुबूँदीः के ब्रजसार रामदास की ने सं १६३४ की फालू-
कृष्ण ८ को लेहापा में धर्मी गही स्थापित की थी और इनका निकास सं १६५५ की
वारेण्डू शृंखल ७ मंगलवार को छूक वर्ष की अवसंस्था में हुआ था। रामदास के ५२
शिख्य के जिनमें से क्यालवास इनकी गही के उपर:धिकारी हुए। लेहापा की गही के
उपर:धिकारी क्यालवास की की शिख्य - प्रशिख्य परम्परा रही है। श्री चुबूँदीः
के अनुसार क्यालवास की का संयुक्त १६६६ तथा निजिन काल सं १६५५ वि.स. है।
संबतः इनकी क्यालवास को बाद में 'चालवास' नाम दे अभिनिमित किया गया होगा।
यही चालवास प्रसिद्ध मन्मत्त के रचित है, जो ग्रन्थ की वाराणसी साधनों से बना है:

"राम महाराज की गुरुदेव की भविष्य। अथ ग्रन्थ मन्मत् लिखिये।।
साक्षी।।
नमो राम गुरुदेव की।। जन त्रिकाल के बैंद।। बिभय हर्ष भोजल करन।।
रामदास बानव ।।१।। गोहर की गुरुकदना।। नमो सत्त भगवत।। चालवाल
मन कर्म द्वारा मक्खि रिकसी ।। सोरा।। की गुरु दीन ज्याल।। बाद धौन
गान्द नाम।। बानक रिमल ख्याल।। रामदास महाराज धिन।।
चालवाल के हैं।। प्राणपत वापार है।। नाथै।। अनौ आवेद।। हरिदाक बानव फन।।
एक तम वायन करी।। रामदास गुर बाल।। मन्मत्त का बालपिये।।
कारणा
प्रियंद्रा सिंधाल।। ।।
हर समवाद धूम है।। हर्मण कारण-पोषे।। हर जन
लंब मुल है।। मेदना जीव का दीर्घ।।।
बशर्त विषय की दुर्गित से सम मन्मत के लमा ५६५ बख़्रों में लमा ६५०
मक्खी का सुनील बापार है। यह नमा विविध मन्मत की जती पर लिखित एक
वृद्धि ग्रन्थ है। किवा क्रमण, दीरा, सोरा और साका बख़्रों को वयने वर्णन का
माध्यम बनाया है। इन हंद्गळ की संख्या क्रमा: ५६५, ३५, २ और २ है। इनमें
विविध ग्रन्थ को वी प्रथम शीर्षकों में लिखा किया जा सकता है। (६) पौराणिक
मण और (२) ऐतिहासिक मण।
(६) - पौराणिक मण:- पौराणिक मण्डः नामाकी नामाक सूत मन्मत का
की ही माँगत विकित है जिनकी संख्या लमा ६५० है।

६- श्री परशुराम चुबूँदी - उद्योगार दी की संत परम्परा, पृष्ठ ६५०
२- चतुर, पृष्ठ ६५१
(2)- ऐतिहासिक मूलकः— श्रीलिंगकृष्णन मठकों की संख्या लगभग ५०० है। निश्चय ही यह संख्या नामादास के मंकमाल के अनुपातिक है। सच तो यह है कि मठकों की संख्या वपरिपक्ष है और तभी मठकों का पुनःस्थापन किया जाना भी अबत्त है। यही कारण है कि नामादास ने अपने सम्प्रदायी मठकों को भी मंकमाल में स्थान नहीं मिलाया है किंतु, वेदांत, लखंड-प्राप्त कवि और मठके मंकमाल में नहीं मिलते। किन्तु श्री थाल्बाल ने अपने सम्प्रदाय तक के अधिकांश मठकों को अपनी रचना में स्थान देना का प्रयास किया है। जो भी हो, हस्तंबर ऐतिहासिक मूलविचित्र सम्प्रदायों के बाहर और उनके शिल्प-प्रशिक्षण है। इन सम्प्रदायों का नामोलग करना बहुतायुक्त हो गया। इनके नाम ये हैं:— गोरखंडी, नाथ सम्प्रदाय, विष्णुसागरी सम्प्रदाय, रामान्द संप्रदाय, श्रीमत-यमल, लिङ्गासेन सम्प्रदाय, पुनिलाल, राधावलम सम्प्रदाय, दादूबेल, निर्मली सम्प्रदाय, जैन-रसलाम मंक-कवि और रामनवीरी सम्प्रदाय। अतः यह निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इनमें कवि की सामाजिक समुदाय नामक के अपेक्षाकृत वफ़ाद के सिद्ध है जिसके अभिवृद्धि हम अंक-कवि के वर्णविचार की विना उल्लेखनीय विशेषताएँ व्यक्ति कितिया है।

(1)- कवि ने मठकों के जनमस्तम्क बाद का निर्देश किया है।

(2)- यह नामादास के मंकमाल की मूलतंत्र दोहा का प्रमाण भी है।

(3)- यह विचित्र सम्प्रदायों के वाचार और मठकों के वर्णन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कवि ने इस मंकमाल की रचना की सामाजिक समुदाय के बाहर पर नहीं है। अतः हम सम्प्रदायों की उपर्युक्त सूची से प्रकट है कि कवि ने संदर्भ-विचारों, मठों के योगमणि नहीं हैं और मठकों के बारे में कोई विचार रूप पर नहीं लिखी है।

(4)- कवि रामनवीरी सम्प्रदाय का सज्जन-तंत्र धारा बनामिलके उसमें विचित्र सम्प्रदायों के मठकों के वर्णन के बाद अपने सम्प्रदाय के पक्ष का विश्वसूता प्रकट किया है। हमारे रामनवीरी सम्प्रदाय का इतिहास प्रस्तुत करने में प्रयोग सहायता मिलती है।

श्री थाल्बाल की कई कथाओं के प्राकाशित "सीपाठर्न" और सिंहराज (कीर्तिनार) से प्रकाशित "श्रीपाठर्नक" भी संग्रहित हैं। जिनके नाम "ग्रंथ कवियास्पर", "जन्मला" और "बदायु" कवियों हैं।
रामदेवी के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।

श्री पूर्णदासा के आनुवंशिक श्री पूर्णदासा के ने संचित था।
गया है। इसका उदेश्य नाम मजन की वनवना करता है। ५२ द्वारारां के नाम 
इस अनुक्रम में उल्लिखित हैं:-

अनन्तरान्नद, कबीर, कामचंद, सुजा, सुरसुरान्नद, विवाजर, पीपा, कुन्दवास, 
कीर्ति, लोलीस (लोली), जैं, वीरमलकारी, अरवां, अमुरारिर, परसुराम, ताहा, 
टीलीवाल, पुराण षराटी, देवल, नामा, सोंभा, जबाटी, नेना, कांडवास, जान, 
थाढी, हुज्जा, राधावलभ, गोजुल, सुदेश, हरिव्यास, बनीरसारायण, जोगवान्नद, 
जन भावान, गृंि, गृंि, रामराव, मायकारी, भुजीलाल, सामा, सुभीदास, 
भुट्ठा, भुट्ठी, चंद्ररागाल, निम्नान्नद, कमल, रामरामण, रामविर, चुङ्ख, वैतन- 
रायो, वनकटी और विनरी।

२७- अनन्तरान्नद- अनन्तरान्नद-

नागरी प्रथारिणी सभा, वाराणसी में ग्रंथक २८६१.६७६ पर अनन्तरान्नद 
विलक्षित गुरुभक्तिवदि ग्रंथ का अनुरक्षित है। इसका रचनाकाल 
सो ५७४ वि.व० के सामन वधी १ है। इस ग्रंथ का नाम, रचनीता तथा 
रचनाकाल विषयक जो उल्लेख दिया है वह इस प्रकार है:-

"हे ताल नाम अनन्तरान्नद ग्रंथ का तालवार जलनलाल जी कृत सम्पूर्ण व।
संवत ५७४ साल वधी २६।।।।।"

ग्रंथकार राधावलभभरायणुक्त था। ग्रंथारम्य में उसने "ैष्टिरिङा" 
का स्पर्श विहा है जिनकी कुमारी से इस ग्रंथ के प्रारम्भ की प्रेरणा लिखी:-

"की हरिसेत्ष कुमार मुक्त सिंग साधारण बाबू ए। घारी।।
अनन्तरान्नद के सरन की तीन महिला दिखाया।।"

वौह, सो ३, पत्र सो २।

इस ग्रंथ में पृथ १६० पत्र हैं, जिनमें ग्रंथकार ने लघुमा ५२ मकार्य का उल्लेख 
किया है। हर वह यह ग्रंथ ५ माग व मिश्रम है जिनमें "विलास" का गया है।
इन विलासों का मुख्यभाषा का वर्तमान शैल के नयन उल्लिखित रूप में प्रस्तुत किया है:-

"प्रथम विलास महिला हिन्दू का रूप है।
द्वितीय विलास महिला संज्ञाति नारे।।
तृतीय विलास महिला जन्मो जीत ध्यान।।

६- जलनलाल - संस्करण अनन्तरान्नद - पत्र सो २६०
प्यारी ओळ झुङ्गे झुङ्गे निर्जला गाय से।

पिन्ने ज्योखलि गरी झुङ्गे झुङ्गे झुङ्गे

झुङ्गे नहीं जहूँ भागिनी सौं सोमा मन लाई।

पिन्ने ज्योखलि गरी झिल्ल्यौ सने रहित झुङ्गे

तिनीकी बहुखाड़का बहु झुङ्गे मन लाई।

प्रथम ज्योखलि में श्रीभिकृति जी की स्थिति ३४ हज़ार ५०० रुपये और तीन दुग्धियाँ।

की गयी है जबकि द्वितीय ज्योखलि में श्रीभिकृति जी की लक्षात्मकता वर्धित है।

द्वितीय ज्योखलि के भारत में सनों दिखाया है जन्म स्थलाकारण के दो स्तंभ ऊँचे हैं।

हस्तक्षेप और श्रीराधेने केवल संभावित को दो स्तंभ हैं जिनका

अक्षरान्त फिर नहीं हैं क्योंकि ४-४ संख्या दी दर्शाई — यह संख्या ४-५ होनी चाहिए।

श्रीभिकृति जी की कंगाअंड क्षत्र प्रकार है: — नारायण - श्री - श्रीराध - कर्यकर्म -

कृषिकायक - वैश्विन्द्र - हत्यार - श्रीराध - गणारा।

ज्योखलि के तीन गुन -

केशवभट्ट, लालभट्ट और धिज्या भट्ट है।

विज्या भट्ट यह परम्परा श्लो प्रकार है —

विज्या भट्ट - हुलाज्ञ भट्ट - दिस्यारा भट्ट - जालप भिक्षु - वर्णीती।

ग्रंथ के पঞ्च\संख्या ५ पर हेम ७६ ५७ के बाद जालपनिव के दोपत दिये हैं।

इन जालपमिन के

7 पुस्तक श्रीकृष्ण के नाम श्री प्रकार है: — द्वारानाथ - पूरननाथ - प्रभाकर -

केशवलक्ष्मी - तिलोक - श्रीकृष्ण - घानयंजन।

प्रभाकर - भिक्षु ऊर्जार - जीवन भिक्षु। जीवन भिक्षु के चार पुस्तक - हिमकार,

भुक्त, परारथ और गजाय।

हिमकार - केशवानाथ - व्यास - गंगाधर - रघुनाथ-

देवीदास - पद्माकार।

व्यास भिक्षु के पुत्र हरिकेश है।

श्रीनाथ के चार पुस्तक - वनस्पति

कृषिकार, गङ्गीनाथ और मोहन हैं। तथा वनस्पति के अनुपाद, भिक्षुमलाय और

शिरिया ताबू है।

शिरिया ताबू के उदेश्य - ज्योकला और गुरुनाम तथा हृदयाचारण

से जीवन ताबू; ज्योकला बोला गुरुनाम तथा ममतियाल है।

अयुक्त प्रकार यह

द्वितीय ज्योखलि में श्रीभिकृति की कंगाअंड में तीन से ५० भिक्षुओं का नामांकल है किन्तु यह

कंगाअंड तब्दील है। स्कंध ग्रंथकार ने यह तब्दील को स्वीकार करते हुए लिखा है श्रीकृष्ण के चार पुस्तक - हिमकार,

केशवानाथ, परारथ और गजाय।

हिमकार - केशवानाथ - व्यास - गंगाधर - रघुनाथ-

देवीदास - पद्माकार।

व्यास भिक्षु के पुत्र हरिकेश है।

श्रीनाथ के चार पुस्तक - वनस्पति

कृषिकार, गङ्गीनाथ और मोहन हैं। तथा वनस्पति के अनुपाद, भिक्षुमलाय और

शिरिया ताबू है।

शिरिया ताबू के उदेश्य - ज्योकला और गुरुनाम तथा हृदयाचारण

से जीवन ताबू; ज्योकला बोला गुरुनाम तथा ममतियाल है।

अयुक्त प्रकार यह

द्वितीय ज्योखलि में श्रीभिकृति की कंगाअंड में तीन से ५० भिक्षुओं का नामांकल है किन्तु यह

कंगाअंड तब्दील है। स्कंध ग्रंथकार ने यह तब्दील को स्वीकार करते हुए लिखा है श्रीकृष्ण के चार पुस्तक - हिमकार,
हाँ यह हित प्रमुख की बायका हाँ हु जीनः। अवस्थि हे हन नाम ती।। बेसाधकी व्यषाण ॥१२॥।। बीशाधकी व्यषाण हे जीर सुरी हु वोः।। पाठ की मन तास के परस पुनीतास हाव।॥१३॥।
हित की बेसाधकी व्यषाण कीलास सम्पूर्ण ॥१२॥।
तृतीय विलासः में डेवन की कथा हे ला कुन्दवान तक की कथा विशिष्ट है।
यहाँ नरसिंघ शासन का चन्द्र का जस्ता १७ दौरों में है और गुरुकार ने पत्र सं ७२ पर नरसिंघासन के दौरान भी उद्देश्य रूप से हैं। तृतीय विलास में व्यतिशिष्ट, व्यापारी ग्रन्थ का स्नायु करने के साथ हित के संग चार के पार्थ भावों में विशिष्ट है। जिन्हें क्रमशः बालचरित्र, व्यत्िष्ट, तुलचरित्र, चुल्चरित्र और पंक्ति चरित्र उपशेषताओं में राखा गया है।। हीन अनुभूति: १२५ १६.२२ २२ और १४ दौरों हैं।। हित की तीन वस्तिकी व्यषाण के साथ तृतीय विलास का अन्त हुआ है।
— धर्म हिंदुस्थान कल्य जन्माल नाय।
धुपि प्रमाण पुरान मे डेवन कथा विलास।
डेवन ले लेकर श्री कुन्दवानन्तार की कथा अभिप्रय ॥। तृतीय विलास।।३१॥
—पत्र संख्या २२
चौथ विलासः में बुन्दवान नोभाक व्यषाण के चन्द्रक्षण सं ७२ तक १४ ग्रंथों
का नामांकन न है। ग्रंथों में कपस्ती (लमित, विचारा, विचार, नवां, काळी, अला, सुभान और बुधन) का व्यषाण तथा हित की कथा व्यषाण की रिखी है। यह व्यषाण
प्रथम के पत्र सं ३६ वर्ष में है।। पत्र सं ३६ में परिचय विलास बाराम होता है। इस में
ध्वनि हित की के दूसरे पाठार्थों की कथा रिखी गई है।। इन परिक्रमा की संख्या २२ है
जिन्हें तीन बार में रखा जा बलता है। (१) हित की के शिशु, (२) वधु वनचन्द के
शिशु और (३) गोपीनाथ के शिशु।। हित की के शिशुओं की नामांकी कार्य के
अन्तरे हित करार हें:— नरवाहन, व्यास, भोजवाला, नाइयम, वीरवाल, भोजवाला,
नवलाल धर, हरिवाल जलायार प्रमाण-रचना दुर्लभ प्रकृति सरस्वती, काम्बिकार, सेवक, स्त्रेष्ठ अज्ञात, काव्यस्त, गंगा जुणा बार्ष, हरिकेशवाल कायस्त, द्वानी हरिवाल, राजा गिरीत, भाव, अक्षांस।
श्री बनचंद्र के शिष्यों के नाम ये हैं:— चुलूण, नागरिवाल, भागमती, हरिवाल दूंर, गोकिन्दवास, कल्याण चुजारी, रवीसाहायूंर और मोहन माधुरीवास। कवि ने नागपौरा श्री के 4 देवकों का कर्णन किया है जिसके नाम सुन्दरवास, लालस्वामी, शुद्धवासुरींक और लामोरवास है।

उपरि वर्णित मकरों में के लामा 15 मकरों का पुनर्न स्तरण नामाविशिष्ट मकरमाल में है। ये नाम हस प्रकार हैं—नराधि, व्यास, श्रीदासतुलामार, प्रवोधानन्द चरस्वरी, कृष्ण बांसे, चुलूणवास, सफाई, गंगा—युनानवास, कृष्ण, धून, हृदराम दूंर, जावता राधौस और गोकिन्दवास। हस ग्रंथ की कर्तिका उल्लेखनीय इतिहासवादी निम्नलिखित हैं:-

(1) हसमें वर्णित मकरों का जीवनवृत मायवस्वितल कूल रसिक बनन्यमाले के निस्कारण पर है तथा यही कथा भी रसिक बनन्यमाले से फिरी जुली है।

(2) कवि ने ऐतिहासिक पतनारों द्वारा मकरों के कर्णन को शिक्षक ग्रामाचारिक वनाने का यत्न किया है। यह पतनारों से मकरों के काल-निघातक में सहायता मिलती है।

(3) ग्रंथ में बनलम्बलावसित के ऋषों वा जलप विन, दुरित-चतुर्थ, नराधि, श्री गोपाल बूडे के पद तथा प्रवोधानन्द बस्तक, श्री नागरिवाल के दोहे उद्दूत रहे हैं। ये उद्दोन मकरों के कवि रूप को प्रकाशित करते हैं।

(4) हसमें राधावल्लभ सम्प्रदाय के नाताययो और मार्करों का कर्णन होने से यह रचना मकरमाल की परम्परा की एक संग्रहालयिक विशेष की दिशा में विकास प्रदान करती है। इसके साथ ही राधावल्लभ सम्प्रदाय के दत्तहास के अध्ययन से यह ग्रंथ ग्रामाचारिक वामवीर प्रस्तुत करता है।

25—मकमाल महात्म्य: युन्द्वानवासी श्री वेदान्तवादः

"मकमाल महात्म्य" के तैको के वेदान्तवाद है। यह ग्रंथ " मकमाल-मककुरुस्तारावतिलक" के पृष्ठ सं ६५६ से ६५२ पर नियञ्जन्य है। इस रचना में रचनाकाल का कहर भी उल्लेख नहीं है किन्तु श्री रामकृष्णदेव ने नवीनित मकमाल में 'मककिस्तानिक व्यास' नामक अल्प के बना में प्रकाशवाद हूँ मकमाल—महात्म्य के प्रकाशित है। श्री गण नवीनित हस ग्रंथ के ब्रह्मवेदों के उपनिषदें तथा प्रथम संस्करण सं २०१० वि० में प्रकाशित हुआ जिसके प्रथाप सम्पादक
श्री वृद्धावनाथसे नीलिंजु ने की ज्ञातकूलकरण, वेदानाथचर्च पंचतीर्थ हैं।

इसमें प्रकाशित मंकामाल - महात्म्य व रूपकला संस्करण के उल्लिखित ब्रजशाली ने यह स्पष्ट कहा जाता है कि रूपकला संस्करण में प्रकाशित मंकामाल महात्म्य मे अद्यतन हैं क्योंकि इसमें होने वाले सौ 52 से 64 तक दोहा संतों 3 के बाद 8 संस्कृत वाक्य, चौपाई-युग रंग का पूज्य तथा चौपाई युग 30 नहीं है जबकि 2017 विद्यां दोहा संतों 9 और 2 नहीं है जो रूपकला संस्करण में है। वर्णितगांव उल्लेखित बात तो यह है कि रूपकला की को संस्करण में इसके रचनाकाल का कहीं उल्लेख नहीं है किन्तु इसमें रचनाकाल सं 6486 पिया गया है जो इस प्रकार है:-

"इति की मंकामाल महात्म्य संस्कृत वाक्य ग्रामजन मंकामाल महात्म्य विद्यां दोहा सं 6486 पिया गया है जो इस प्रकार है:-"

"इति की मंकामाल महात्म्य संस्कृत वाक्य ग्रामजन मंकामाल महात्म्य विद्यां दोहा सं 6486 पिया गया है जो इस प्रकार है:-"

"इति की मंकामाल महात्म्य संस्कृत वाक्य ग्रामजन मंकामाल महात्म्य विद्यां दोहा सं 6486 पिया गया है जो इस प्रकार है:-"

"इति की मंकामाल महात्म्य संस्कृत वाक्य ग्रामजन मंकामाल महात्म्य विद्यां दोहा सं 6486 पिया गया है जो इस प्रकार है:-"

"इति की मंकामाल महात्म्य संस्कृत वाक्य ग्रामजन मंकामाल महात्म्य विद्यां दोहा सं 6486 पिया गया है जो इस प्रकार है:-"
श्री राधार्मण्णा जी की म्यक्माल की क्या सुनायी थी । विराजमान प्रभु ने भी धर क्या की सुना था । प्रभु ने एक रात भ्रम स्त्वन में पुजारी जी के वित्तम्य व्यक्तवाक म्यक्माल की क्या सुनने की वात बतायी । हजार सून पुजारी के नेत्रों द्वारा भीरों वहन लगे । दिनकी घडन प्रियादास जी की टीका बाल की है । प्रियादास जी परिमज्जा के लिए जब जये जहाँ के होइल जा पहुँचे । वहाँ सन्त सेवी लालदास जी रहते थे । यहाँ म्यक्माल की क्या नीति के जिन्हे समस्त मदुख वनने थे । एक बार चौरा गाये और ठापुरा की तक की दूरा ले गये । प्रियादास जी ने जोचा कि हमारा चार्चव ठापुरा की को प्रयादास नहीं है वहीं तो चार्चव के साथ को गये हैं । तब प्रियादास जी स्वम्य व्यक्त रहे और वह चिन सुने रहे । तब स्वम्य प्रभु ने स्त्वन में चौराँ में कहा कि 'युक्त जहाँ' के वहाँ 'बलाधर्म', अन्याशा धुम बहुत दुःख पायेगे । हजार सून ने चौरा वर्षारा में अठे और वित्तम्य प्रभु की गाते, जबाते तथा सभी सामंजी साथ लिये ठापुरा जी को ले गये । प्रातः होते ही इसी दिन ने यह दूरा को सभी साथों से कहा । यदि वित्तम्य तयित हुए । चौराँ ने स्वम्य की घडना भी, हजार सूनों से कही । साथियों ने नामादास के इन बच्चों को सत्य पाना कि हित प्राप्त मदुख को प्रभु के युगा-प्रिय लक्ष्य है उसी प्रकार प्रभु को भी मदुख के युगा ध्यान लगाने हैं । घर ला कर उन्होंने ठापुरा जी का महोत्सव नवाया और कहा कि म्यक्माल की क्या के बावजूद स्वम्य हर हैं ।

रानादास जी म्यक्माल की प्रकाशित करने वाली एक क्या भी लिखी है — गृहकाया में व्यक्त में व्यक्त एक व्यक्त प्रियादास जी के वाल पहुँचा और उनकी पौधों लिखी की प्राणिक न । वह पौधों सिलाकर पर ने गया और अपने गृहकाया में लगा रहा । विन्दूम बम्य में यमदुल्ला ने झ उनके माफ़ कर दुःख मिया और कहा विन्दू हो गया निस्स दैल प्राप्त अधिक व्यक्त हुए । उस व्यक्ति ने अपने पुजा में बुले द्वारा कहा कि वह म्यक्माल की पौधी काल वहाँ हृदय पर रहे । पौधी के दूरपर पर रहे ही यमदुल्ला माफ गये और उस व्यक्ति के सुख है 'हरि राम गोपिन्द ने शरीया का उच्चारण हुआ । पुजा ने प्रकाश गोक्षर वहाँ सारा हाट गुहा, उच्च में उन्होंने जलाया कि यमदुल्ला ने झूठ माफ कर दुःख मिया, केवल हरिदास ने मेथा उदार किया । वह नामदेव, रेराज, श्रीर, चनाशेन, दीपा के नामों का स्मरण करते हुए कहने लगा कि में अब इन मुखों के साथ ही जाओगा, यमदुल्ला का सुख कर न देखोगा । देश कह कर वह
राम - कृप्या का उच्चारण करते हुए प्राण - त्याग कर ही में समाहित हो गया।
उसके पुत्रों को अन्यथा युवा हुआ।

हस प्रकार यह मक्खल के महात्म्य का वर्णन है किसी मक्खल की
लोकप्रियता का परिचय मिलता है ज्ञातक मक्खल के नायक पर मक्खल चरित्र की
व्याख्या तथा प्रवचन हुआ करते थे।

26- रशिक प्रकाश मक्खल - सुलभिया: -

रशिक प्रकाश मक्खल नामादाय। कुम मक्खल की जैसी पर लिखा
गया है जिसके प्रचारित स्वाभी जीताराम की है। इसका उपनाम श्री मुनि मात्रणार्था
भी है । ग्रहकार ने इस ग्रंथ में शालिवन्दन उल्लेख नहीं किया है । श्री बाबा की
रचितकारण की जी ने इस ग्रंथ के टीका में जीतारामकी का जीवन चरित किया है ।
टीकाकार के बुद्धि जीवाराम की नाम का जन्म कालदकारण में हुआ जिसके पिता की
शूरा दास जी बड़े सिद्ध फूफा थे । इन्होंने व्यक्तित्व और ज्योतिष का का
व्यक्तित्व किया । और ये नामादायी के बनतार थे। डॉ० बदरीनाथारामोत्तम
ने जीवाराम की को रशिक सम्प्रवाय में "द्वितीय नामधा" कहा है। जीवाराम की
जानकी घाट अयोर्या के प्रसिद्ध महत्त्व रामचरणादास की के लिखा थे।

ग्रहकार ने ग्रंथ के रचनाकार और रचनास्थान पर प्रकाश दालते हुए कहा है कि यह श्रमाध्यक्ष के स्वरूप स्थापन था जो ६३४५ विश्व में पूरा हुआ। । रुपका जी ने

9- जीवाराम सुलभिया - रशिक प्रकाश मक्खल - टीकाकार जानकी रचितकरण, पृ०२२, ३०१८ विश्व, प्रकाशक की लक्ष्य स्थापना, अयोर्या।

2- यहीं, पृ०३, हर २५६, ४३।

3- डॉ० बदरीनाथारामोत्तम - रामानंदस्मृतियाः और हिंदी साहित्य पर उसका
प्रभाव, पृ०३६-३६, प्रम लक्ष्य ६०५, प्रकाशक हिंदी परिषदौ, विभिन्न स्थान, प्रकाश

4- श्री गंगाधर सरस वाल सिंह निर्माण रामदास,
स्थापना नवरात्र निकृष्टम सौवर्ण स्वरूप स्वरूप
नवल मक्खल माला रचनी सबल तुलसी फूल ।। ३। ।
सम्पूर्ण वस्तु विविधप फसल यह ग्रंथ में पाया गया। ।
विनमर नमोल दीक्षात्मक प्राण नवल ज्योतिरंग। । ।
मानसित बुद्धिशाली नीतियों दिविसा किलिक।
नवलिस्तों के जन्म दिन दूसरे रशिक प्रकाश ।। ३१४- सुलभिया - रशिक प्रकाश मक्खल,
प्रथम का रचनाकाल संवत्त ६४२ वि.श. माना है जो प्रामाण्य है। इस प्रथम की धूमिका में इनके कर्मविवाचन पर लक्षित देख हुआ है कि इस यह प्रथम एक सिद्ध रास की मूल्य मंदिर माना जिससे जीवितारम्भ रहस्य का ब्रह्मण मण्डल हर हर रायपरिपाटी परिसार के लिए अनुमान रास साधन है। इस यथा है? रसिक सम्प्रदाय क्या है? अवरोध क्या है! रसिक-वार्थ सहायकों का स्वरुप क्या है? हन सभी विवाहों का विशेष विषयक रसिक प्रकाश मण्डल में मिलेंगे। वस्तुतः यह रसिक-सम्प्रदाय का एक प्रामाणिक प्रथम है जो जम्मू, दोहा और बदोरा है। इस तरह तुल हलों की संख्या २४२ है जिनमें लगभग २४० रसिक-मंदरों का परिसमित जीवन विषयक बिपरीत रूप में निष्ठा के साथ वर्णित है। हन मंदरों को भवोत्सव चार बार सात रात्रियाँ में राहा जा सकता है।

(क) - पौराणिक उपक्रम:
हस्तेन पौराणिक विश्वको भोजन नाला क्षेत्र लीन मंदरों का वर्ण जिनके नाम जन, दशरथ और चन्द्रकान्त है। जन चन्द्र के दशरथ के चरित्र हनके भाषाओं के साथ दिया गया है जबकि चन्द्रकान्त का चरित्र उसकी संख्याओं के पद्धत है।

(ख) - रसिक सम्प्रदाय के पूर्वकालीन परम्परा में आने यात्रा कार्यावलि:
हन साधृण के नाम

हरियाणा, रायपुर, रामनगर, अन्नपूर्ण, घृणाधार घर्षणी, श्रीलक्ष्मी और श्रीस्वामी।

(ग) - कथा:
हस्तेन लगभग ५० भक्तियों का जीवन वृत्त दिया गया है। हन सभी प्रामाण्य रसिक सम्प्रदाय के कथा है। हन भक्तियों की नामांकरण हस्तेन प्रकाश है: श्रीस्वामी, नाममार्गी, महात्मा, बालबल, महाराज, राम बसे, रामनिवास, भक्तिवन्दी, वैदास, रामचरणदास, चित्रिवंचि, प्रभागर, चन्द्रकान्त, रघुवरसर, जानकी प्रपन, भृगुराज, किशोरीरान्त, जानकी चरण, कुमार, विनािा राम, हरिनारायण, रामचरणदास, देवदास, जीवन राम, नन्दराम, रघुराम, देवदास, माधवदास, रामदासरामण, जानकरायण, स्थान, उदिन, किराण, साधु, जीवाराम - रसिक प्रकाश मण्डल - इस धूमिका, व्रत का ।

2. जीवाराम खसलिस्वामी - रसिक प्रकाश मण्डल - इस धूमिका, व्रत का ।
हरियाल, मोहनरसिंह, खाल-रसिक, विहारिणरवास, खिल झुन्दवास, हिलसेवक रुपलाल, मचल रसिक, उर्फ़ललाल, जनराजश्रीरांण, रामशास्त्री शंकरदास।

इसनु खिनवारदास, हिलसेवक और रुपलाल धार्मिकसाध्य के कवि हैं जिन्हें प्रथेकार ने रसिक सम्प्रदाय में मान लिया है। नामानाथ जी ने अब्बास जी का जीवनकृति लिखा है, हालांकि उनके उपरोक्त कवियों में से किसी का भी जीवनकृति नामाविरामित मंकमाल में नहीं है। बता: यह रसिक प्रकाश-मंकमाल की यह कवि-नामान्वली मौलिक कही जा सकती है।

(4) - मंकमाल: पौराणिक मंकमाल, रसिक सम्प्रदाय के पूर्वतीय परम्परा में वाले बाचकाओं और रसिक सम्प्रदाय के कवियों, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया था। उन्होंने इसमें लाखों रसिक-मंकमाल का चरित वर्णित करते हुए उल्लेख किया। इन मंकमाल में हमें केवल कृति, उपन्यासों की उज्ज्वल स्वरूपता नामानाथ जी ने बताया। मंकमाल इस ग्रंथ के नवीन हैं जिन्हें रसिक मंकमाल कहा गया है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रसिक प्रकाश-मंकमाल में रसिक-सम्प्रदाय का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ का यह उल्लेखनीय विशेषताओं निर्माणित है।

(6) - इसमें रसिक सम्प्रदाय के मौलिक सिद्धांतों का विशेष वर्णन किया गया है। यह वर्णन बन्ध्य नहीं भिलात था।

(2) - इसमें रामनाथ सम्प्रदाय और राधावल्लम सम्प्रदाय के मंकमाल और कवियों को रसिक माना गया है। जिसका कवि का सामस्मार्थयक बागुह रूप प्रदीप होता है। गृहिकार का उद्देश्य रसिक सम्प्रदाय का विवरण प्रस्तुत करना रहा है। इसलिए इस ग्रंथ मंकमाल की परम्परा को एक समस्मार्थयक विशेषता की सीमा में बाधित करता है।

(3) - यह नामाविरामित मंकमाल की मैतिष्क दस्तक और दोहा शैली में है और मंकमाल का युगलिन ग्रंथ तथा कालकृतिकार कवि के प्रमाण दिया गया है।

(4) - इस रचना द्वारा हमें बतीन कवि तथा उनकी रचनाएं प्रकाशित होती हैं। जिनका विवरण परवर्ती व्याख्या में दिया जायेगा।
नागरी प्रभारिणी सभा, वाराणसी, के हस्तलिखित ग्रंथों के संग्रहालय में ग्रंथ-संख्या ५४५ पर मक्खलमहालयम् नामक ग्रंथ दर्शित है।
यह लीलित और अनूठा प्रकार है जिसमें ग्रामिक पत्र नहीं है। इस पत्र संख्या १६ है।
विषय रचनाकार और लिपिकार शात नहीं और न ही अन्य साहित्य के इसके निर्देशों में जोई सहायता है।
लेकिन नागरी प्रभारिणी सभा, वाराणसी के प्रकाशित हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों का अतिव अवादिक विवरण „(१६२६-२८) „
के ग्रंथ-संख्या ९६६ „की „ पर साहित्यकार रचनाकार शात का नाम दशक ६४६ है।
जिसके अनुसार इसमें ९६ पत्र हैं, प्रतिपुस्तक कितने ६ लगा परिशोध (अधुनक) २६० है।
यह प्रति नागरी प्रभारिणी सभा में नहीं है अन्य ठाकुरमहादेवकिंद्र, ग्राम अरूली, 
ठाकुर परिसारके, जिसका प्राध्यापक के पास दर्शित है जिनका लिपिकार शात ६४६ है।
विषय रचनाकार शात का नामोलह यहाँ नहीं है जिनके भयाय में यह दर्शन है।
कि कुण प्रति है और भवन रचनाकार संदेख ६४६ वि ० है जो इस प्रकार है:-
प्रति- दोषा - „किलू न मानिय जह ते, लोि देवरि शवनाचारी।।
कुलू फल श्रीपति महे समय सभी दिखायि।।
अन भागवत युग्म बादुः कृ, लोि मन हराव।।
सुंदर तोक बृह भमुम्य, फल बास शक्ति।।
हरि श्री मानिय स्थिरं महालम महालम मानिय वेषालम वेषालम वृत्तियाहृति।।
हरि सुभ्रमु। १५४६।।
उपरूपका उल्लेख से रचनाकार का नाम मानिय वेषालम स्मृत्त है।
कवि- प्रकाश श्रीविष्णु की दृष्टि से इसमें मक्खलम की महिमा वर्णित है।
जिसे तीन व्यायामों में लिखा गया है। प्रकाश ५५ तीर कोक विवरण के अभी पृष्ठ ५४५ की „ में प्राप्त विवरण का तुलनात्मक परिशोध करने से जात होता है जिसे दोनों रचनार्थ एक है क्योंकि दोनों में प्रतिपुस्तक पक्षियों तीर शीतृय व्याय भी तीन है।
व्याय में सुरक्षित प्रकाश ५५ वाली प्रति में बन्ना है पत्र भी नहीं है जिसके तीतिय
व्याय भी अभिन्न है। वर्तु यह प्रति शूल न होकर प्रतिविन्दु जात होती है।
रचिता म प्रियादास कुल नामक रसबोलितोरिका के कविता सं ७ को पत्र संख्या २ पर भेजा करते थे नामादास और उनके मकमाल का परिचय दिया है। निकासा उद्देश्य पूर्वक न्याय में किया जा चुका है। यह दोहा-कोथाय तैरी में लिकित है। इसमें कुल चित्रित "रामचरितमानस" से यथातथ दृश्यात्मक भी दिखे गये हैं। उदाहरणार्थः

चित्र विवाद फिर मक्खी नहीं फेंधी विन द्रविण न राम।

३० गुप्त ७५, पत्र संख्या २४

इत्यादि, इसमें भी अन्य ग्रंथों की महत्वपूर्ण रचनाओं का महत्त्व वर्णित है।

कहना न होगा कि रचनाकार का उद्देश्य मक्खिप्रचार के साथ मक्खी के जीवन की घटनाओं को समझने वाले व्यक्तियों के लिए उन्हें दृश्यात्मक बताए थे।

इस रचना द्वारा नामादास से जीवन से विविध विषय महत्त्वपूर्ण दृश्यात्मक तथा उनके मकमाल तथा इकाइयों की संभावना विश्लेषण में प्रारूप होता है जिनका स्वीकार प्रस्तुत शोकपृथ्वी के द्वितीय न्याय में सिखा जा चुका है।

३६- मक्खी चरितकाली - लेखक कारण:

नागरी प्राचीन का समाबेस में उपलब्ध स्थलात्सिक प्रवर्तक (१८५९-५३ ई०) के द्वितीय भाग में संख्या शैल पर मक्खी चरितकाली का विवरण है जिसका लेखक कारण है।

इसकी प्राचीन नागरी आदर्शों से न होकर पृष्ट-पृष्टमुख के सम्मान, प्राचीन खेल के पास शून्य और इकाइयों का उद्देश्य होने के लिए उपयोगिता ग्रन्थ में सिखा है।

इस रचना में इस पत्र ४६ और विवरण पाकर उपयोगी है जिनका परिश्रम

(शुद्ध प्राचीन लेखक नाम

इस रचना का उपलब्ध स्थलात्सिक प्रवर्तक के पत्र सं ६० से हुआ है।

नागरी-चित्रित मकमाल के समाज में भी हम्या और इकाइयों में मक्खी के चित्रित दृश्य में बर्णित है।

इस ग्रंथ की प्राचीन विवेचनात्मक यह है कि इसमें पौराणिक चित्रों का साहित्य भाव है।

8- यह किसी खेलों में उपलब्ध स्थलात्सिक हिन्दी ग्रंथों का उद्देश्य विवरण है।
मकने के निवास-स्थान वादि निर्दिष्ट किये गये हैं। वे मकन श्रवणीय प्रतीत होते हैं। इधर ऐसे मकने का वृत्त भी इसमें वर्णित है जो उखान प्राप्त नहीं है।

उदाहरणार्थ- महाराजा लक्ष्मणसिंह (परदुर के राजा जो १५६६ के पूर्व कालमान थे), बौधुपुर के राजा बिहारबिहार (१५८४ चित्र में कालमान थे) और शिवराम मुद्रा (१५६७चित्र)।

इन मकने के कारण से यह बहुमुख है अतुलन है कि इसकी रचना १५५५वीं शताब्दी के प्रथम वर्षों में हुई होगी। इस विषय में राम अभाषा कृष्ण-मलित मानीं मकने को स्थान दिया गया है। होंगिपोर्ट के बनसार इसमें २३ से १२७ हुम्मा

अर्थात् १०० हुम्मा है, वाल्मिक २६ हुम्मा नहीं हैं। इनमें तीन नाम ऐसे भी हैं जिन्हें

रचनाता ने उनके मकन होने के लागू-स्वायत्त उनके क्रियात्मको की भी श्रीकार रखा है।

कहना न होगा कि यह पूर्वस्क नामान्तर कूल ' मकमाल ' में दुर्दिगौर होती है।

उन नाम स्थापन हैं।

(1) - जयनाथिन (प्रीता कुंज बिहार रक्षा रचना पद ठाने)

(2) - शिवराम मुद्रा (काठा रचना में नाम) और

(3) - देवकुल (पद रचना में नियुक्त)।

शीर्षी की दृष्टि से श्री नवासाचार्य जी की हीपे ' उदाहरण रूप में

उद्देश्य किया जा रहा है।

"श्री नवासाचार्य जी तेंजा देश गाही खुशा ।। परमार्थ

पद नियुक्त वापस हीत-कथनारे।। परिचित जा की

दिल दृष्टि नहीं दुग्ध सिद्धि \n
राज हो समान घर करत

विषय के भोज जात का श्रीमत

दुकानी ।। वहु दिनों सिद्ध होते संज्ञा चुन्न धारी खुशा ।।

श्री नवासाचार्य जी की किस गायी खुशा ।।"

वर्तमान, इस रचना का प्रतीपण मकनें का जीवन दृश्य मस्तु करना है।

अतः ऐसे मकमाल की परम्परा में बाने वाली रचना खुशा जा सकता है।

32- मकमाल - रामशिकारी - महाराजा रघुराजसिंह।

मकमाल की परम्परा में लिखा गया यह एक महत्वपूर्ण और वृहद्

वाक्य का गुण है जिसके सहित रानिया रिचार्ड महाराजा रघुराजसिंह हैं। महाराजा

रघुराजसिंह के स्वामी विशपानाथ के पुत्र थे और इनका जन्म संवत् १५५५ चित्र के कार्तिकमास भी
कृष्णपद ४ को हुआ। "रामरसिकावली" का रचनाकाल स० १६६४ यि है।

यह प्रथे लगभग १७०३ सन् के बाद से स० २०१३ यि म सीसी वार प्रकाशित हुया है।

यह प्रथे के गन्त में उद्धरणित है और झुलवास कूर व कपल झंझंगम निर्देश
भी प्रकाशित है। उत्तर चरित्र में लाभ ३० मकरन की क्रमार है, यह रचना
रामरसिकावली की पुरा कही जा सकती है। इसका निवेदन परवती पृष्ठों में
किया जाये ।

वर्म्पकाय की उद्धे से हम चारों दिशा में मकरन और किरियों
का व्याख्यान करते हैं - चौफा की खेली में किया गया है। यह प्रथे तिलक की प्राणा
कवियों को नामांकन के 'महिमाल' से प्राप्त हुइ है। कवि ने प्रस्तुत प्रथे के स्कम
का उल्लेख करते हुए लिखा है कि इसमें १३ चौफा के बाद दोहा है और कहीं कहीं
कहने - परिवर्तन हो जाते हैं यह प्रथे नवीन बन गया है। हम में यह खुद के मकर
कथित हैं कितने कितने मकर का स्वाप्न विषय है और कितने का लहू। नामांकन
कूग महिमाल और प्रणालिक कूर उनकी 'नरक विकाय विस्तार' के लिए मकर
का व्याख्यान लंबे समय में किया गया है, उसे यह खुद विकसित है वहक गया है। इन मकर
की कूग लंबे समय २६६ है जिन्हें पुष्पक पुष्पक अथवाओं में विस्तार किया गया है।
कितने-कितने सूत्रों में कई मकर का स्वाप्न एक साथ ही किया गया है। इन
कवियों के इन मकरों का स्वाप्न पूरा शीर्षों में किया है जिन्हें सत्यम, केताम, दामर खुद, कल्लुड़ पूर्वदीर्घ और कल्लुड़ उद्धरण नाम दिये है। हम में क्रमांक ५४, २२, ३०, २० और ४४० मकर
का जीवन युग विश्राम है। इन सभी मकरों की दो प्रथान
खण्डों में निम्नलिखित किया जा सकता है - पौराणिक और ऐतिहासिक मकर।

१- 'सहायता' के स्वीकार, वाद विशेष साध।
कृष्णपद ४५५ तिथि चौथ खुद, वासवदत्ति खुद।।७।।
—रघुङ्गसिंह-मकरमालारामरसिकावली, पृ०३०६५
२- 'विवेक उन्मल्ल सेवा', दस साहित्य सिलपर्व:
रचना रामरसिकावली कियों अंग्रेज अवक।।—वही, पृ० ६६
३- 'पूर्वार्थ उद्धरण जानलेख कल्लुड़।
लाम बाहरिन का, नामांकन उद्धर।।३।।—वही, पृ० ६६
४- वही, पृ० ६६
(१) — पौराणिक मकरः— पौराणिक मकरः में सतना, क्रांति और खापर यहा
के मकरः की जन्माता जाती है। रामकप्राकारी
में ऐसे मकरः की संख्या लगभग २०६ है। नामांकित भक्तिमाल में भी कल्लकुमा ये
पूर्वीय काल के मकरः की नामाकारी भी बड़ी मात्रें विस्तृत है जिसकी संख्या ६५ के
लगभग है। किन्तु महाराज रामराजसिंह ने इन मकरः का वर्णन किया है जो पौराणिक प्रथा
के बारे में प्रस्तुत रामकप्राय है।

(२) — शैवालालिक मकरः— रामकप्राकारी के शैवालालिक मकरः की संख्या लगभग
२६० है इन्हें हम वो कार्त् भी विवेक कर सकते हैं —
मकर और कष्ट त्वा केवल मकरः

(३) — क्षिप्रः— इसमें लगभग ७२ मकरः संख्याओं का जीवन बिंदु विरंचित है। नामांकित
भक्तिमाल का
होळुकर शेषा यही कष्ट नामाकारी मूल मकरमाल में उल्लिखित है। ये
नामांकित जी मकरमाल के सर्व-प्रमान टीकाकार हैं जिनका वर्धण पूर्वकों पृष्ठों में किया
जा चुका है।

(४) — मकरः— इसमें विस्तित लगभग १६५ मकरः की नामाकारी मिलती है। ये मकरः
विभिन्न सम्प्रदायों के अनुसार हैं। इन मकरः के वर्णन में कवि ने
चमत्कारपूर्ण घटनाओं को स्थान दिया है। जिसमें इनके चरित्र अति विस्तृत बन गये हैं।
इसके वार्तिका स्त्रोत की चुंबक प्रभावी अवशेषों का प्रतीत है।

(५) — इसकी दोहा — चोपाहः— इसी रामचरितमानस के स्वयं है। ज्ञात कि उपसेनके
कविता का प्रस्तुत है कि चोपाहः के बाद दोहा का भ्रमण करके भीतरी नहीं
है। इसके वार्तिका कविः, दोहा, चोपाहः, नृत्य यादि सरल खज
हंसों का चयन किया गया है जो पाठक के लिए बोधाम्य है।

(६) — भकि ने मकरः के वर्णन को प्रमाणित करने के लिए रामचरितमानस, शिशुमहिला,
मोरा के पद, मकरमाल और मकरश्रवोधकों के उद्देश्य प्रस्तुत किये हैं।
मकरमाल का यह प्रयास के बाद ब्राह्मण कुच अनुमान ही है किसी इसके
प्रमाणितका में किसी प्रकार की विदर्शनता नहीं रह जाती। किन्तु मकरः के
वर्णन में अलेक्लिक पटनालों का जन्तुकुल के बारे पर भी वर्णन किया गया है।
अलेक्लिक थथा चमत्कारपूर्ण पटनालों में किवदंतियों और दन्त कहानियों का
स्थान होता है। यही कारण है कि इन्हें बारा नागरण्य ही पालत ने इसे
३३- उपरचरित्र :- पुराण सिद्धि:-

उपरचरित्र के प्रणोदा राजा नरेंद्र महाराज रघुराजसिंह हैं
दक्ष रचनाकाल, वर्ण मार्ग के भाग्य पर, सं ९५२९ वि ५ के भावमय दुखना
सप्तमी गुर्वार है । यह गথं १०५ घटियों में है जो रमण माल रामरसिकाली से के
हृदयी वस्त्रकरण के पुष्ठ १५५५ से १६५६ पर प्रकाशित हुआ है । सर इमामगण में लिखा
यह गथं दोष-चोपाई-शेली में है भिन्न बन्त में एक वस्त्र-वनागारी है । और यज्ञवल
सौराष्ट्र का प्रभाव भी फिरा गया है । यह रामरसिकाली का प्रभावण कहा वा
सकता है ।

उपरचरित्र के मंगलाकरण के बाद कवि ने श्री कविर हनिकाय
पर बंधुशेष बनाया । कहते यह वेष-देव के राज्य राजस्तान के विज्ञान पिंडिया तक का वेष-
कृत प्रस्तुत किया है जो इस फिरार है—राजस्तान - कीरत राजका - विज्ञान पिंडिया -
रमण - वनपुर बुद्ध- मायाविश्व - बनकुल - बच्चुर - श्री वजीत - ज्योतिष - ज्योति -
विज्ञान । यह विज्ञान महाराज रघुराजसिंह के पिता और राजा दास की के विश्व के ।

२- त्यो बर्मी राम गाण्य श्री वासन-रामस्तान-द सम्राट ने कश्यप विभिक्षा पर उसका
प्रभाव, पू २५, प्रभान्त संकरण, १६५५ है, प्रोहित-वीर रिजाड़, तिवारिन्द, प्राय या ।

३- यह राम रसिकाली, चरित्र विभिक्षा ।
तल्लर्क प्रकाश हारपुर, कल्यन शैल प्रभान्त ।
कल्यन कृत वृक्ष फिरा पूरक उधर दोहे ।
तारदूर को वर्ग विक्षी, उंचर चरित वह होय ।

४- फिरा, पृ ३५४-५५
प्रियदास खुरात के निकट रामदुरा गाँव के निवासी विधि वामदेव के गुन हैं।

इस ग्रंथ में 30 मकरंद के कथाओं वर्णित हैं जिन्हें एक एक वेद्याय में रचा गया है।

बस्तु हमें 30 वेद्याय हैं जिन्हें वर्णित मकरंद के नाम वस प्रकाश है:-

प्रियदास, महाराज विश्वनाथ; घन गाँव, गोविन्द, गोपालसागर, बिठलिराम, आचार्य, उपरितारा, कन्हाबाबा, मुखचाल, श्रीदास, चंद्रकान्त, भानुदास, रामदास, अनन्तदास, दिलीप रामदास, रामदीपक, वीदास, हृदीरंजन, श्रीकृष्णदास, पंडरवार, वेदान्तकार, हिम्मतदास, पंडित, ज्ञातारी, भानुदास, श्रीकृष्णदास, रामदेव, रसुनाथदास (यहूदी रामदास, प्रकाश, वनस्पतिदास, नागासारा का भी लष्करा है) और प्रियदास।

इन मकरंद में वे ग्रंथकार ने प्रियदास, विश्वनाथ, गोविन्द, गोपालसागर, दिलीप रामदास, उपरितारा, कन्हाबाबा, मुखचाल, श्रीदास, चंद्रकान्त, भानुदास, हृदीरंजन, श्रीकृष्णदास, पंडरवार, वेदान्तकार, हिम्मतदास, पंडित, ज्ञातारी, भानुदास, श्रीकृष्णदास, रामदेव, रसुनाथदास (इनके वाय रामदास, प्रकाश, वनस्पतिदास, नागासारा का भी लष्करा है) और प्रियदास।

इन मकरंद में वे ग्रंथकार ने प्रियदास, विश्वनाथ, गोविन्द, गोपालसागर, दिलीप रामदास, उपरितारा, कन्हाबाबा, मुखचाल, श्रीदास, चंद्रकान्त, भानुदास, हृदीरंजन, श्रीकृष्णदास, पंडरवार, वेदान्तकार, हिम्मतदास, पंडित, ज्ञातारी, भानुदास, श्रीकृष्णदास, रामदेव, रसुनाथदास (इनके वाय रामदास, प्रकाश, वनस्पतिदास, नागासारा का भी लष्करा है) और प्रियदास।

(१) - रचनाकार ने मकरंद के कथाओं में उनका समय, स्थान, पिता-पितृत्व और ग्रेहवकाम हास्य विवाद सृजनात्मक दी है जिससे उनका शैतंत्रिक परिचारण करने में प्रयोग सहायता प्राप्त है।

(२) - इसमें यत-तत दुरसागर और उपरितारा के पद भी स्वदेशित किये गए हैं जिनके मकरंद का कृत्य मंत्र होने के बारे उनके कवि हर का परिचय भी प्राप्त है।

(३) - कवि ने मकरंद के कविता में चरित्राध्यक्ष रोमलाभुलाएम घटनाओं का स्थान भी विवादित है। इन मकरंद का उल्लेख रामसिकाष्ठी में नहीं है।

(४) - विवेक उल्लेखीय बात यह है कि हस्तों, लेखन यथा के रूप में हरिवाल हरिवाल यथा पर प्रकाश फैलता है। कवि महाराज विश्वनाथ का चूना था और महाराज विश्वनाथ तक की परम्परा उत्पल्प है।

प्रस्तुत ग्रंथ बतूँ १६६२ ई. में क्षेत्रवाण के, रिवाज़ वे प्रकाशित छुआ जिसका रचनाकाल सं. १६४९ मिला है। इसमें पीराधिक मकरंद के नाम प्रकाशित के २४ तथा २६ पुस्तकों में भी शामिल हैं। ये मकरंद के में जिन्हें महावर में सूरा की। दास, दास,

(५) - रसुनाथदास - नमक माताराम विश्वनाथ, २७ उपर्णिर, पूरा. ८५६।
किशोरि, व्याह, हुमला, वल्ल, प्रहलाद, उद्व, यहूदी, ज्ञानी, पुर्णरी, और कुंभकर, पांडव, शंकरिया, शुभ, चिंतार, मील, नारायण, सन्धार, भूमि, बृज, शरण, कौशिक, पराशर, मुनि, श्रीकृष्ण, विश्वास, हरी। इन पौराणिक मुक्तियों के 
विचार कि युद्ध-युग में होने वाले प्रशासन मुक्ति का सबूत भी दिया है परन्तु 
उनका नामोल्लेख नहीं किया है। जिसका कारण मक्कमाला-रामायणिक वाक्यों 
की रचना हो सकता है। राम-रायकावली का परिचय पूर्वसित भूमि में दिया जा 
चुका है। कवि ने यह भी सुविचार किया है कि उपन्यास पौराणिक मुक्ति प्रशासन 
सुनिय रहे हैं:

हारोंताकिम सुनिन प्रवाहना ।

और महाभागवत सुजाना

सुदर नर डूढ़ भागवत अरे
काव्यम् के हरि भक्ति चिन्ताक

भक्ति विशाल विलास विचारी

वानि अनेक अक्षु उधारी

सूरदु सुदर भक्ति प्रवाहना

करि परेश प्रभास जाना ।

ते हत उत्तीर्णा सम देतें

नाम माह-यह भेद न लेभें ॥

यह मक्कमाल की शैली पर लिखित रचना नहीं है । इसमें कविता की कल्पना 
का पुनरीतम स्मरण है । किन्तु विवाह करु में कुछ स्त्रियां वह इस प्राण का कल्पना-
वापसा और उनके विचार पदार्थ का ध्वनिक विचार है, अन्तम भूखुखु हक्तों में 
वाक्य उपन्यास पौराणिक वाक्य ऐतिहासिक भक्ति के नामोल्लेख हैं । अतः इस 
रचना की मक्कमाल की परम्परा में नहीं रहा जा सकता । यहाँ इसका सिद्धान्त विचारणा 
केवल सिद्ध होता है कि यहाँ इसका सूत्र भक्ति के शरीर दिशा के यशोगान है।

34- अथ युक्त प्रणालीः

रामदार, वर्तमान में युक्त प्रणाली एक हस्तलिखित प्राप्त है इसमें 
न तो कहीं लिपिकार का उल्लेख है और न लिपिकार का है । यहाँ तक कि
रचनिर्मिता ने अपना नामोलिले भी नहीं लिखा है। बल्कि इस रचना का रचनाकाल, लिपिकाल, रचनाकाल और लिपिकाल अध्याय है। यह ब्राह्मण पत्रों में लिखा एक लघु रचना है जिसके प्रति-पट्टे पर सात पंक्तियाँ हैं। वर्णपद्धति की दृष्टि से यह रामादुधृस्त और रामानुज की शिष्य परमपरा प्रस्तुत करती है। जिसके अन्त में निर्मित रश्रमान्त रूप संबद्ध के महत्त्व का नाम लिखा होने से यह निर्मित संबद्ध की शुष्क-प्राणालिका शात होती है हस्तें निर्मित है व्याख्यात तक ६०४ पौराणिक और शैतिहासिक आर्थिक और साधनों के नाम निहित हैं। अन्तिम नाम व्याख्यात होने से यह ब्राह्मण लिखा जा सकता है कि इस रचना के रचनिका सम्बन्ध: निर्मित संबन्ध की परमपरा में व्याख्यात जी रहे हैं सर्वां उनके परचाबू फिरी मंत्र ने उसकी रचना की हो। जी भी ही, इसके रचनाकाल और रचनाकाल के निर्माण में अन्तिम निर्माण पर निर्भर हैं नहीं पहुँचा जा सकता। हस्तें रामादुधृस्त और रामानुज जी की एक विशाल शिष्य परमपरा प्राप्त होती है जो नामादुधृस्त फूल मकरान और उसकी परमपरा रचनाओं में प्रचार नहीं होती। इस दृष्टि से यह रचना अपने निर्मित स्थान रहती है। प्रस्तुत सौशर्यामूर्ति के परिशिष्ट में यह समृद्ध रचना भी जा रही है।

इसकी एक धर्मशाल्य प्रति मो २० दयालिकाल, बड़ीदा के हिंदी - विभागीय-संग्रह में भी सारखिल है जिसके प्रतिलिपिकार की रघुनाथ तथा प्रतिलिपिकाल ६५-६६ की है। किंतु यह अर्हताल होती है और हस्तें नामादुधृत की तक की परमपरा के ५५ वर्षों के नामोलिले है। इन मात्रों के तुलनात्मक अनुशालन से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस प्रति में नामादुधृत की तक की गुण धारणा होती है। जब कि पूर्वकालीन धाराओं में निर्मित किया जा चुका है जिसका की नामादुधृत का जीवन-काल किरदार की शात की अन्तिम दस तक अनुसन्धान है, जब यह प्राणालिका का रचनाकाल नामादुधृत की जीवन के बुध समय सकारात्मक रहता होगा। यह परमपरा यह प्रकार है:-

- कृत्रिम - तब - विरल - व्यापर - वाहिन - वृक्ष - वाज - द्रव्य - प्राणिक - बीज - भाव - महात्मा - श्री श्रीरामानुज - महात्मी - वाल्लुकाश - उजासरुधिर - वृक्षकृपुषं सी - छुटु - ग्राम - दूरी - मार - जीव - सूक्ष्म - दूरी - वायु - दूरी - चाँद - दूरी -
उत्तराधिकारिक मलागाल मारतेंद्र हरिसणन्दः

उत्तराधिकारिक मलागाल के अधिकार साधित मलागाल उत्तर मारतेंद्र हरिसणन्दः। कवि के शब्दों में यह नामांकित तत्त्व दास उत्तर मारतेंद्र हरिसणन्दः। तथा अनेक समय तक के अन्य बक्तियों को भी स्थापन किया है। अन्नदेवी के शुद्ध हरिसणन्दः के रचनाकाल से 9833 ई की माण्ड़ी मारतेंद्र द्वारा स्थापित किए गए अंग्रेजी के तत्त्व दास उत्तर मारतेंद्र हरिसणन्दः के बाद विभिन्न समय विवाहवास की परम्परा का उल्लेख किया गया है और 80 ज्ञानानक के प्रवाल माल के महाभाष्य वर्णन के पश्चात कवि ने प्रस्तुत प्रथा के महाभाष्य पर उसने अनुक्रम लिखा है। कवि ने स्वयं वर्णन के बाद मंगिकों का जीवन मिल बनाया रखा है। अनेक समय से इस पर इसका विवाह करना बना है। कवि के प्रवर्तित पोराणिक और कृष्टियाँ बालकों की तुलना 234 ई के इतिहास में बानी वाले मंगिकों के नाम से प्रकाश हेतु सिख, नार, शूक, विष्णुवास, विलमाल, वुल्लस निमार्दित, रामाजुज, बन्धु, सोपीवास, धर्मवाण, रण्यान, गीत, श्रोदायनंद, हरिवास, व्यास, हरिवास, धर्म�र्य, परमाजनवास, कुम्भवास, गोपीवास, नन्दवास, नन्दवास, मनिवास, इत्यादि को हमारे नामांकित विषय है।

गंगा, हरिवास, परमाजनवास, कुंभवास, गोपीवास, नन्दवास,
उचराई मध्यमा - भ्रूष्पवाच दोषों में लिखा गया है किसी ४४९ भ्रूष्प मौरी ६६ दोषके तथा जन्य दोषतों का एक हो दिया गया है। इस प्रकार हेंदों की कुल संख्या २२६ है। इस ग्रंथ की विकृतावशिष्टिनिलिका है:

(१) इसके नामांकितिवित मध्यमाल की लोकप्रियता का परिशोषण मिलता है।

(२) मध्यमाल की विषय मातृत्व मध्यमाल के जीवन की चमत्कारपूर्वक घटनाओं का साहित्यिक परिशोषण मिलता है।

(३) मायन्यर्षाव, वैलम मन्न्मार्ग और रायाल्लभम्न्न्मार्ग का तत्त्वांश प्रस्तुत करने में इस प्रकार वह सहायता प्राप्त होती है।

(४) इसमें साक्षरता मध्यमाल का भी सुननी स्थापना है जो नामांकित द्वारा प्राप्त उपेक्षित ही रहें है। इन मध्यमों के नाम हेंद स्वरूप जैसे ज्ञान, शेष नहीं, समीप, पीरचंद, निरक्षरास, कवी, लाल, खाम, तावेन, कृप्ताव, भर्तावी कवी।

(५) इसकी उत्तरास्त्रीय विशेषता यह है कि इसमें मध्यमाल की टीकाओं की परम्परा भी दी गई है जो हेंद प्रकार है——कृप्ताव कोंग, भ्रूष्पाव, मूलसाव, लीलाव, रुपाभाव, ज्ञानधम, उत्तरास्त्रीय, प्रतापमंतिक।

(६) अंतिम उत्तरास्त्रीय बात यह है कि इसमें पूर्वान्तरित केंद्रित वन्य मध्यमाल ती की मातृत्व मध्यमाल के श्रेष्ठ चारिक्ष के उपयोग में सामान्यायिक उदाहरण का चुटीकृत विषय गया है।

---

१ मारमें-कु मामले द्वारा मान, संबंधमोत्तनास, इलाहाबाद-मध्यमाल, पृष्ठ-२२६, वीडा संख्या ३८-४७।

२- वही, पृष्ठ २६५-२६६, इंद संख्या ६५६।

३- वही, पृष्ठ २६५, इंद संख्या ६५६।
मारतेन्द्र की ने उपर्युक्त जिन टीकाओं का उल्लेख किया है उसे दृष्टिगत करते हुए यह कहा जा सकता है कि उन्होंने ये टीकाएँ देशी थीं बायबा का क्रम हटकर प्रामाणिक सुनाया या सामाजिक प्रारूप हुए थे। किन्तु इसे रियाज में है कि इन टीकाओं में वे जुलदास, माजीदास, दुल्हनीलाल और उस्तीराम की टीकाएँ भर भरक्षा हैं, हाँ, उस्तीराम के मकमाल प्रदीपम में वरिष्ठ मकरे की नामांकन जो २४ निष्ठाओं में विभाजित है, उपकला जी ने मकमाल - मकबुलशुरुआतवादितक के क्रम में दिया है। क्योंकि इन साधनों का उपयोग प्रस्तुत व्याख्या के प्रवर्ती पुस्तकों में किया जायेगा।

इसके बावजूद भिंगिक मारतेन्द्र अपने निर्देशक कुर्पताय, श्रीमादवर और प्रलाप-सिंह की टीकाओं का विषयनालिक परिचय भी प्रवर्ती पुस्तकों में प्रस्तुत किया जाएगा।

इन टीकाओं के बावजूद ये कविता श्री मेनका भारतेन्द्र जो ने नहीं किया है। क्योंकि इन टीकाओं का परिचय भी प्रवर्ती पुस्तकों में व्याख्यान किया जायेगा।

37- प्राण: स्नान स्त्रोत— मारतेन्द्र हरिशचन्द्रः
परम्परा की वृत्ति से ये कवि नवीन नहीं है। कवि ने इसकी रचना मकमाल के आदर में शेष ही पर नहीं है।

36 - नवमर्माल - रायावरण नौताली:-

प्रस्तुत 'नवमर्माल' के रचयिता नौताली रायावरण जी हैं।

इस रचना का प्रथम अंशण संव 1643 विश में पप युगल के अभ्युदायन ग्रंथालय से प्रकाशित हुआ। पप में रचनाकला का उल्लेख कहीं भी नहीं है। किन्तु स्थाय रचनाकला के 'प्राज्ञ सुधर बनाता' नामक भूमिका लिखी है जिसका रचनाकला जी कृष्ण ज्ञन किथा 1643 विश में रचनास्थान रायावरण मंदिर, बुद्धनाथ है।

इसके यह निर्देशक निकलता है कि यह पप छो 1643 विश के छाया ही सफा पूरा लिखा गया होगा। गोर युद्धालम जी को 'रातिक मकमाल' के रचना की प्रेमणा गाय ही से प्राय हुईं यदि किन्तु पप के उपयुक्त से स्पष्ट है कि रातिक मकमाल के रचना के समय बाय बीत ही आय के रातिक मकमाल का रचनाकला लक्ष्म 1646 विश है।

6 - गोर युद्धालम जी रातिक मकमाल, गोर उपयुक्त, पुस १, प्रथम अंशण 1646 विश, प्रकाशक गोर जी पनन्त लाल जी, बिहारीपुरा, गोर जान।
हस मकःमाल के तीन दौँहों और ६९९ हःप्य व्याख्य खलं ६६४ कङ्कों में वर्णित मकःमाल की वस्त्रा १०६ है। अद्विताचार्य और चुदालास नागा को होइकर, जिनका कोवन नामवाद जी ने चित्रित है, शेष सभी मकःमाल नामापनिचित्र तक मकःमाल में नहीं चित्रित है। इसीलिए प्रथम के पुस्तुपर्यथ पर हसके कथतरित विचार का संकेत करते हए कहा गया है कि हस मकःमाल नामापनिचित्र मकःमाल के उपरकालिक पहलत्म प्रतिवर्गों के चरित्र क्षेत्र है। अतः हस मकःमाल वर्णित मकःमाल को दो शरीरांकों में विभाजित किया जा सकता है।

१) मकःमाल तथा कथि, (२) मकःमाल और लताकः।

(१) मकःमाल तथा कथि: - इसमें लगभग २८ प्रत्यक्ष कथियाँ की नामालिकी है जो हस प्राकृत है।

नानक, गौरवधिनिखं, चारणावद, वैशालिक, जिसीसी-काल, बाणनदय, जुन्वाननदय, केशवद, बिहारिकोँ। चालु, मलुक, रसनान, नानीवद, बिहारिवद, खुलानन्द, रहुमानद, नामा, प्रियावद, वैष्णवद, युवालीलाल, तुल्लोराम, प्रजासनिखं, वर्षराम, कृष्णाद, ललितकृत्विकृति, राघूरामिखं, गोपालवद, नारायणवद, स्वामी आदि। इस लेख में हे केशवद और बिहारिकोँ को मकःमाल की श्रेणी में माना जाना करने तक उपस्थित है, यह विचारस्थिति है क्योंकि वोनों की मकःमाल संबंधी उल्लिखित उनकी समस्त हतर रचनाओं की तुलना में अत्याधृत क्षम है। द्वितीय इसके कार्य में मकःमाल कथि की उस प्राणि के दर्शन नहीं होते जो चूर और तुल्ली हो परंपरा को रचनाओं का साधारण तत्त्व है।

(२) मकःमाल और लताकः: - उपरुक्त कथियाँ को होइकर शेष लगभग ५० मकःमाल ऐसे हैं जो नवनबली माल के रचनाकल तक मकःमाल में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। ये मकःमाल एक सम्प्रदाय-विचार से सम्बद्ध नहीं हैं प्रत्यक्ष उसे राधावलाम सम्प्रदाय, रावण सम्प्रदाय, रामायण-द सम्प्रदाय, चेतन्यमल, निरुपारत्म आदि के सम्बन्ध हैं।

हस ग्रंथ की कृतियों उल्लेखनीय वाते व्याख्यातिक प्रकारण हैं।

(३) प्रस्तुत ग्रंथ में मकःमाल का वर्णन जनजर्ति तथा लिखे गये ग्रंथों की परर्मता पर आधारित है जिसे लेकर ने हस प्रकार स्वीकार किया है —

'कोई कहा हूँ कुछ पूरी लिखीं ग्रंथ के माही।' १९

१०- गोतर राधाचरण - नवनबली माल,२४, लेख सं०६१०, प्रथम-संस्करण,६६४३ चिथ, प्रकाशक प्रभुदास वाराहल्य, मुहर!'
(2) - इसमें वचन चक्र काल-क्रमांकार नहीं है।

(3) - यह रचना सामालघोषक उपस्थितियाँ पर शायरित नहीं है व्याख्यायी इसमें चिन्तित वम्प्राश्रय के आद्याबियाँ और भी स्थायी नियम गाया है जिसका उद्देश्य उपर नियम जा चुका है।

(4) - यह मकरस्कार की परम्परा में लिखित एक स्वतंत्र ग्रंथ है जिसमें नामालगह चित्रित मकरस्का की दृष्टि शैली को ग्रहण किया गया है।

(5) - मार्तन्दु जी की ही भाषा इसके रचिताकर्ता ने भी मकरस्का के टीकाकारों का उद्देश्य किया है जिसके मकरस्का की रचनात्मकता का चित्र के रूप में लिखा है। इन टीकाकारों के नाम क्रमांक हैं:– प्रियावास, वैष्णववास, दुर्मिलोल, लक्षित्राय, प्रतापसिंह, हरिश्चंद्र और कुंवरवास। इस सूची में हरिचंद्र ने काफिला में नाम लिखा है कि गोराराध ने इसका उद्देश्य नामालगह की मकरस्का की टीका नहीं है बल्कि यह एक स्वतंत्र ग्रंथ है।

पुरातत्वीय पुस्तकों में श्रद्धालु वस्तुविज्ञानिक विशेषज्ञ से यह भी प्रकट है कि उच्चराग मकरस्का में प्रायः नामालगहित मकरस्का के बाद के मकरस्का का स्वरूप किया गया है। बत: उच्चराग मकरस्का को टीका कहना असह्य है। पुरातत्वीय पुस्तकों में मार्तन्दु जी ने मकरस्का की टीकाओं की जो परम्परा दी है उसमें केवलवास का नामीलेख नहीं है। केवलवास ने मकरस्का– महात्म्य का प्रणालिका किया रचित रचना परिचय पर इसी पुस्तकों में प्रस्तुत किया जाएगा। संबंध: मार्तन्दु जी उपकूल रचना से परिचित नहीं हैं, वन्ययथा वे प्रियावास जी के बाद हनुमा नमीलेख की बचना करते। जश्न टीकाकारों की नामालगह मार्तन्दु जी के वस्तुविज्ञान उद्देश्य साम्य रहकर है।

86- मकरनामालगह – कलम्ब्रान्द-

क्रिया कलम्ब्रान्द चित्रित प्रस्तुत मकरनामालगह की हस्तलिखित प्रति महाराजा स्वामीराव किल्लियालंका, बड़हेदा, के हिंदी विद्यार्थी हस्तलिखित ग्रंथ के संग्रहालय में इस दिन १२ पर शुरू होता है। इसका लिखितम २० अगस्त, १५६५, है। इसके शुरु नी पत्रों में ४४ दोहे और श्लोक चौबार हैं। रचनाकार ने मकरनामालगह के बाद में रचनाकार- शापक हनुम दिया है जो इस प्रकार है:-
उन्नीश हे सैकड़ू गये, यह क्रणण की सात।।
शास्त्र शाही कुँकण पव, कुवार दुर्पाल।।
ग्रंथ मकनांपाली, हृदिन पूरणा कीन।।
पुनि कै जिखो को जो पैठ दुसरे ग्रंथार सकीन।।

तद्मात्र इसका रचनाकाल ६५४ धि क्रि श्रावकभुक्षणार गणित है।
कव्वालिकाय की द्रुष्टि है इसमें लगभग २४४ मकनों का स्मरण मात्र किया गया है।
ये मकन पौराणिक और ऐतिहासिक दोनों प्रकार हैं। पौराणिक मकनों की
संख्या २६ है जिनके नाम इस प्रकार हैं:- श्रीकांति, वापिश, हव, मल्ल, रघु, राम,
यम, कुणाण, हृद, भारद्वार, ज्वलन्तर, कलंक, ज्व, विश्वकोव, प्रजल, बल, जन्म,
मम, मुरु, नर्म, दुर्मन, विखय, ज्य, शुकुदाद, सुकृष्ण और सुकीना। इनमें हैं:
हृद, खन्नार, कलंक और सुकृष्ण के अतिरिक्त त्रेय नामांकी मकनाल के हैं।
इसमें उल्लिखित ऐतिहासिक मकनों की संख्या २५२ है जिनमें २४ निष्टाओं में
विभाजित किया गया है। पौराणिक मकनों के स्मरण के बाद स्मृति कवि ने ऐतिहासिक
उल्लेख इस प्रकार किया है:-

प्रथु मृथु निष्टा विरचि, चुरचित गणित शुभम।
विलभ मायेनी ग्रंथ यह, चिर घरि चादर श्रुतम।।
एक एक के नाम का, बड़ा महात्म जान।
सब मकन के नाम यह, को फल सकत बलान है।।- पत्र संख्या ७।

रचयिता ने दोहे में निष्टा का नाम दिया है और कोपार ये मकनों की
नामांकी है। इस नियम का कवि ने बल्कि तक निर्वहित किया है किंतु इन निष्टाओं
के नाम प्रतापसिंह कूले मक्काल - मक्कालपुद्र - भी दी गई निष्टाओं के अनुक्रम में
है। यह श्रेष्ठी नामांकी नामांका के मक्काल के लिए गई है। इस लघू को
रचयिता ने भी ब्रजीकार करते ही कहा है कि:-

(क) - नामांकन में निकटस जो, मक्काल मितिन नाम।
वर्ष नाम तिखि ते जुटे, रचन ग्रंथे भागिराम।।- पत्र संख्या २।

(ख) - जिन्हे मक्काल में गारे - जिन्हें नाम बहुत हम लाशे।।- पत्र संख्या ७।

उपरोक्त निर्देशों से यह प्रकार है कि कवि की इस ग्रंथ के प्रणाल की...
पाठ हेतु पूर्ण यह हु बनाया; अन्य विषय तिहि से नहि लाया।
मंज़ानाम का सूरि प्रमाण; तिहि हें बपर भेंड नहि लाया।
दोहा चोपारङः हें बनाये बपर हंड वा माहि नहि लाये।

—पत्र उद्वेष्य ७

उपरुक्त 'विवेचन से यह निश्चर्त निकलता है कि प्रस्तुत मंज़ानामावली
केवल सूचीमात्र है जिन्में मंज़ान के जीवन से संबंधित किसी घटना का फूल का चित्रण
नहीं हुआ है किन्तु मंज़ान का कर्मोत्तर निष्ठावालें के शुकार कैलासिक फलति पर
किया गया है।

४५—मंज़ानाम महात्म्य — सिद्धिनाथ :—

लेकिन को यह प्रथें नगरी प्रवासिरणी सबा कार्यालय, वाराणसी में प्राप्त
हुआ। वहाँ रचितार्थ सिद्धिनाथ है। यह ग्रंथ नवलकिशोर के प्रस्ताव से १८४० ई।
में प्रकाशित है मंज़ानाम महात्म्य के पौर्णिक सारस्करण में पुष्प ९ वां ३० तक प्रकाश
हुआ है। अन्तःशास्त्र के शाखार पर इसका रचनाकाल १८६६-६७ विि है। ग्रंथ में रचितार्था
ने वपना पारिष्ठ घनांकारी क्रम में हस प्रकाशित हैः—

“भारताज गोत्र सिद्धिनाथ के भवसंस्कार
पणन्त निदेशन से गांडीन जानिये।
तापु सुल लालेराम तान्त्र बालक्राम नाम
tा सुल व्यालराम धेरे पिता मानिये।
सिद्धिनाथ नाम मय दित्तोर गाऊँ ठांग
षेलवारे पिता जो बेगी को बहानिये।
श्री समेट महाराजास्वाद युक पद को—

—बिन्दु कंड के स्वरूप सब सुल माति है।—पृष्ठ २०२

१। उनके सिर यथासंह केवल श्रृंग हरिवार।
मंज़ानाम महात्म्य यह है तीन-हो अवश्य॥—सिद्धिनाथ—महात्म्य महात्म्य, पृष्ठ २०
वर्णित राधावल्लभ महन्माल - प्रियादास श्रीलक्ष

श्रीलक्ष राधावल्लभ महन्माल के रचिता चौबीसौर निवासी प्रियादास श्रीलक्ष हैं। इस ग्रंथ में भाषा अर्थ भी राधावल्लभी सम्प्रदाय के संवादी रचिक महाद्वारों की जीवनी संदर्भ में ही गई है। जब इसे 'वृजतु जन्म' विषयकालक ने तालिका के नाम दे भी बधिरित किया जाता है। इस ग्रंथ की रचना के लिये लेकर वे अनेक ग्रंथों का संग्रह किया है। ग्रंथ की धूमिका में स्पष्ट कहा गया है कि 'रासिकन्यावासः', वनन्यामाल, राशिक वनन्य-माल माथ भूखिन जी रचित, हितमालिका, हितराशिक्र द्वितीय पंक्ति युगलवास नामक निवासी कुटुंब हजारुड़ी व्यंगुर न्याय से ग्रंथों का सारांश लेकर यह पूर्ण निर्माण की गई है। यह एक वर्तमान का आर्य करती है। परम्परा ग्रंथ में झलक गुप्त ५६४ हैं। इसका रचनाकाल सनौ२५६४ ऋषिय में ब्राह्मण मास की एकांक सौ है। लेकर के बनावर इसकी उद्घटन में वोलंग वर्णों का सभ्य लगा है। उपर्युक्त ग्रंथों की १- प्रियादास श्रीलक्ष विषयक राधावल्लभ महन्माल-प्रियादास पृष्ठ ६

२- संस्कृत उन्नीसौर श्रीलक्ष श्रीदिवताभावल्लभ महन्मालविषयक पृष्ठ ६

तिथि राख स्वरुप धर्म कूल, स्वप्न ग्रंथ परशुराम।, —वहीं, गृह संबंध ५३२। ३- वृत्तां जगत्य स्वतंत्र फर्र, वोलंग वर्ण ग्रंथ प्राप्त कर।।, —वहीं, गृह ५३२।
सहायता के उल्लेख तथा इन सौंदर्य कवियों के दीर्घकालों को देखते हुए इस निष्कर्ष पर सहन ही पड़ता जा सकता है कि शेख ने प्राप्त और आप्त प्रमाणों का अवशेषित रचना को यथासाध्य ग्रामार्थित करने का यत्न किया है।

इसका वर्णनिपत्तण महत्त्व का चरित्र बताया है। इसमें सुन्दर 235 मकरान का चरित्र बताया है। नाद परिकल्पकों के चरित्रों के अन्तगत शैली ने विलासार्थ के 24, जीवनद्रुत के 14, जी कृष्णद्रुत के 10, गोपीनाथ के 6, मोहनद्रुत के 5, रामचंद्र दास के 7, नागरकल्याण के 2, वादिराजकों के 3, जी रामदास जी के 3, गोस्वामी कृष्णनाथ के 15, विलासदास के 9, गोस्वामी जुलाल के 9, हरिलाल जी के 3, जुलाल जी के 5, हप्तल जी के 6, बालकृष्णनाथ जी के 3, विक्रीरताल जी के 3, राधाकृष्ण जी के 3, गोपिनाथ शर्मा के शिष्य अनन्द - जी, भक्तल जी के 4, वामनदिवसकृष्णनाथ के 3, गोविन्ददास के दो और जिलाल के तीन शिष्यों का चरित्र विहित गया है। गुरु के शब्दों के 36 पुस्तकों में इनके शिष्यों के चरित्रों का जीवन और वाणिज्यिक प्रभाव के जीवन के अन्तराल करार वाले अस्तित्व, बलुआ के लालित ग्राम, बलुआ के लाल मार्ग, लाल मार्ग के ताराचन्द्र मार्ग, नीनुलाल (बंके), गोविन्ददास (बंके), बंडरे हेमत की (बंके) और बाबा राधाकृष्ण राम की जीवन चरित्र विहित गया है। इन चरित्रों में उनके स्थिरतापूर्वक, नस्लवाहन, व्यस्त, प्रशासनिक सत्मता, कर्ममें वाहन, व्यस्त, अन्तर्गत राठौर और चुणिंदकांश का जीवन-चरित्र नाभाविदित मकान के म्युर्विता है जिन्दु से जीवन-चरित्र के प्रकृति कल्पना में वर्तमान मकमान के महत्त्व नहीं सिखी तथा शिष्यों के अन्तराल के अनुसार कल्पना में उनका मकमान में उल्लेख न होना स्वाभाविक था। तथौ तार यह है कि नाभाविद जी ने मकमान के रचना कितनी सामाजिक कृतिकृतियों के वातावरण पर नहीं की थी जिन्दु श्रीहिंदराधाराजमल मकमान में केवल राधाकृष्ण-सम्प्रदाय के पक्ष की अपमानण्ड़ विविधता है। इस शिल्पी विविधता है जिसने वह सम्प्रदाय के वातावरण, उनकी स्तरीय परम्परा तथा व्यक्ति श्रेणियों का सहायत्व श्रवण उनका चरित्रविश्लेषण, सम्प्रदाय का हृदय रूपस्तुल करने का था। जो भी हो, यह गुरु राधाकृष्ण - सम्प्रदाय के अन्तर्गत, शिष्यों के वर्तमान शहीद किया होता है। इस कृति की जन्म
विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

(२) यह ग्रंथ गघ-पघ मिशित माण्डल में लिखा-होने से पाठकों के लिए वास्तविक है और मकरें के जीवन को सुस्पष्ट बताने के लिए रचनाकार ने यथेष्ठतत्त्व उद्देश्य भी प्रस्तुत किये हैं।

(१) ऐसा कि पहले कहा जा चुका है कि यहाँ राधाकृष्ण सम्प्रदाय का समाप्ति प्रस्तुत करने में सर्वाधिक वहाँता प्राप्त होती है किन्तु इसमें प्राप्त होने वाली दृष्टिकोण नहीं; प्रामाणिक है। रचनाकार ने मकरें का जीवन प्रस्तुत करने में ज्ञानपति, प्रणय, नवायस्थ, गुण, रचनात्मक, जीवन की अलगकर-बलकर घटनाएँ, सम्प्रदायिक दृष्टिकोण भाव को यथास्थिति दिया है।

इस बुद्धि से यह एक जीवन चरिताभ्यास ग्रंथ है: यथार्थ जीवनविश्वास विक्षिप्त विद्वान तुझे नहीं देख सके।

4२- मकरें- मकरनामिक, प्रमाण मागे,- श्रीस्वामी मोहेंद्रायाजी:-

प्रस्तुत मकरनामिकों के तौर पर श्री स्वामी मोहेंद्रायाजी हैं।
इसका प्रमाण सहस्त्र वर्ष १६५९ चरो में श्री भावकुशल बाण, रामपुरा, रवाठी (हरियाणा) से प्रकाशित हुआ। यह मकरनामिक श्री का प्रमाण मागे है जिसके २४६ पृष्ठों में मकरें का जीवन कृता निष्ठाओं के बनाता वर्णित है। इसमें केवल धार्मिक, मातृभारतीक, वर्तमान निष्ठा, अवस्थानिष्ठा, कृत्य निष्ठा, गृहनिष्ठा, वेदांतक निष्ठा है। इसकी हुमायूँ में यह कहा गया है कि इस कलाकार के साथ किए मकरें की अज्ञात माध्यमिक ही पर आश्चर्य वायन है। इस कलाकारी मार्ग के बारे में कुछ बातें को प्रश्न करने के लिए परम पूजा श्री स्वामी मोहेंद्रायाजी ने ' मकरनामिका' नामक यह परम पूज्य श्री मुकुंद कानेकर रचा। यह ग्रंथ वो या तीन भागों में समाप्त होता। इस ग्रंथ में २४ निष्ठाओं में वे सात निष्ठाएं और इन निष्ठाओं के मकरें की कथाएं वर्णित हैं। इसके उद्देश्य ने महादुर्ग वाराणसी में महत्व के भोगनाबंद से प्रस्तुत ग्रंथ के बन्ध माण्डल के संवाच में भाग के लिए निष्ठाओं के मकरें की कथाएं वर्णित हैं। इस प्रकार यह ग्रंथ मुख्यतः जो गणों-पण दोनों में मिलित है। रचनाकार ने मकरें का परिचय हम्पी या बोहा में देते हैं उनका नाम-नाथक की संवाद-शैली में उनके साधृंगत निर्माण
को विस्तार सहित दिया है। यदि-तब वीके, उपविलक्षण, स्थायनियता वादि संस्कृत के हनुमान का उपयोग भी नहीं है।

वर्ण-विवाह की उल्लेखित से यह ग्रंथ में कुल ३३ मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। निषिद्धान्तों की नामाकरण 'माणिक्यप्रदीप' और 'मणिक्यप्रदीप प्रकाशिका टीका' पर आधारित है। ऐतिहासिक ग्रंथ में नाटक मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। हां, इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है। इत्यादि मकरों का वीरनृत्य वर्णित है।

इस ग्रंथ की उल्लेखित विशेषता यह है कि प्रत्येक निषेध में उसी निषेध के मकर की कथा है जिसके नामानुसार विशिष्ट प्रकाश, युक्तान्त ग्रंथों के साथ प्रस्तुत करते हुए प्रमाण-पुस्तक भी बनाया गया है।

४४- रासिक मकरमाल - गोस्वामी यशुनाथलाल"
प्रस्तुत ग्रंथ के ३० पृष्टों में ६९० हर्षपद, पांच दोहे तथा एक संक्ल्प है। संक्ल्प हैं रामायणके का पुनीत-स्वरूप है। ५ दोहे में वायुचायां
तथा चरालेख के मक्खियों के चरागाह में कवि ने 'रशिक मक्खाल' की पुष्पास्पिति
अर्पित की है। शेष हर्षपदों में लगभग १७५ मक्खियों और कवियों का जीवन चरित-
वर्णित है यथाप्रय हमें हुए मक्खियों का अन्य मक्खि के साथ नायकत्वमात्र किया गया
है। ये सभी मक्खि ऐतिहासिक हैं। इनमें हैं २७ मक्खि कवियों की नामांकी
नामांकितित मक्खाल में है शेष मक्खि कवि के समकालीन और ग्रंथ के रचनाकाल
तक स्वामित्वप्राप्त है। 'रशिक मक्खाल' के मक्खियों को वर्णिय में राख जा सकता हैः
(१) मक्खि कवि, और (२) साधारण तथा हतर मक्खिः

(१) मक्खि-कविः - इसमें वर्णित कवियों की नामांकी इस प्रकार हैः जयेश, बलभाषार, रामानुजस्वामी, श्रीमुदृत, विश्वनारायण, हरितादि
स्वामी, गोपालभट, रूप, सनातन, जीव, प्रभोधन्यस्वरस्वती, कविराज कृष्णनाथ, विलासन, रविनाथवास, यास, हरितादि
देवचार्य, ज्ञानेश्वरप्रसु, नामादास, राजशंकराचार्य, ज्ञानेश्वरप्रसु, नामादास, रामाचार्य, यज्ञ, चाँद्रकण, बहुविकास, विहारीलाल
माताकर, गोपालभ, चाँद्रकण, गोपालभ, चाँद्रकण, बहुविकास, विहारीलाल
भरी, हरितादि, चक्रवती, चक्रवती, मीरा, विहारीलाल, चुराव, ज्ञानात्मक, चक्रवती, मीरा, विहारीलाल
वाकार्यालाटी, गोष्ठामी बमुकादास, नारायणस्वामी, गोपालभ, चाँद्रकण, बहुविकास, विहारीलाल
केशवदेश, सुचिकृता, मुक्तिकृता, चक्रवती, प्राणमूलों, गोष्ठामी
गोपालभ, रामचंद्रचंदरलाल, माजीवाल, बुद्धत्साक, गोपालभ, विहारीलाल, विहारीलाल
विहारीलाल, बुद्धत्साक, गोपालभ, विहारीलाल, विहारीलाल
सुमति और रसिकों को। वस्तु इन कवियों का संख्या लगभग ६२ है। रचनाकाल ने
इन सभी कवियों का परिष्कार नहीं दिया है; बहुत कवि का नामों के नाम है।
(२) साधारण तथा हतर मक्खिः
- उपर्युक्त लगभग ६५२ कवियों के वरिष्ठ शेष लगभग १०३ मक्खि है। ये मक्खि
शतों अपने सम्पुर्ण के बनका मक्खि हैं बत्त्व इनका स्वरूप इस रचना में किया गया है।
इस प्रकार की कविता उल्लेखनीय विशेषता है निम्नलिखित हैः
(१) कवि जयेश-चंद्रकण है वर्णित उनके श्रीमान प्रस्तुत कविशे नाम प्रस्तुत वर्णि
किया है, तदोपरान्त अन्य भाषाओं का स्वरूप है।
(२)- यह ग्रंथ वाम्प्रवाचिक टूटकियोग वर वायारित नहीं है, विषय इसमें वर्णित मंत्रों को रचना श्रीप्रकाश में रचा गया है। इसमें विषय सम्पादणों से बंधक मंत्रों की नामांकित मिली है। इन सम्पादकों के नाम इस प्रकार हैः-

श्रीमती विष्णु सम्पादक, रामचंद्र सम्पादक, रामानुज सम्पादक, ज्ञान-प्रति-मार्ग, बैतलक सम्पादक, गान्धि-सम्पादक, राधावल्लभ सम्पादक, निम्बार कला सम्पादक, गान्धि।

उपर्युक्त

(३)- सम्पादकों को ही इसमें कलिप सन्त-कवियों का जीवन सूद भी है। उदाहरणार्थ --- नानक, बाबा, वरणादास और गूँ गोविन्ददास है।

(४)- इस ग्रंथ में ऐसे अनेक कवियों के वरिष्ठ भी प्रकाशित होते हैं जिनका विवरण वाक्यात्मक अर्थस्वत के हवाले ग्रंथों में प्राप्त नहीं मिलता। उदाहरणार्थ --- कृष्णदास, शहीददास, रामचंद्रद्वारकाचरण, अनिलश्री।

(५)- ग्रंथ प्रकाशांतरम विषय में है जिसके लिए कवि ने नामावास आंि की हर्ष-वोहा शैली को गृहण किया है।

(६)- अन्य उल्लेखित वात यह है कि यह नामावास विविध महत्त्व की खूब श्री द्वारा स्थापित ग्रंथ है जो महक्कमाल की परम्परा की विश्वास की गति प्रदान करता है।

45- बड़ा महक्कमाल - राहसिंह वरमार रत्नेश

प्रस्तुत 'बड़ा महक्कमाल' के लेखक श्री राहसिंह वरमार रत्नेश है पिन्हो विश्वजीवन (महर) के निवासी हैं। इस ग्रंथ में लेखक ने अपने जीवन पर कहीं प्रकाश द्वारा है और न ही रचनाकाल का कठिन उल्लेख है। इस महक्कमाल का प्रकाशन पुस्तकमंडिर, महरा से हुआ है। इस पुस्तक में इसके प्रकाशन काल का भी निर्देश है। ग्रंथ का भाषा नाम 'श्रीमक्कविद्याकली बड़ी' है।

हस्तक ए सं १६३ में पुस्तकमंडिर में २६ मंत्रों की काय्यां दी गई हैं। हस्तकें में
1२ मंत्र महक्कमाल में वर्णित हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं: लक्ष्मीदास, घना, चेन, पीपा, नामदेव, इदास, कौर, मीराजार्जी, प्रमनिच, श्रीरामक, उर्मिला और
क्षाराहि। इनके बतिलिंगत्र कौनादासी, नामादास, गिरिपराजा, तुकाराम, गोरान्दहरि, सुनाम भाई, मस्तराम, राधाराम, वामारी माँ, अमिताभासी, बलरामदास, गणपति, तुलसी राजपूत, गणितदास नामक मराठी मंगलम में नहीं 
किया। स्पष्ट ही इनमें कुछ मंगल मंगलम से दूरकर्ता है और कुछ परवर्ती। इन मंगलों के कर्णन के लिए रचितिता ने दोहा - चीपाई शेली को अपनाया है। 
रचनाओं इन्हें का कोई विचार नहीं मिलता।

इस ग्रंथ की उपलब्धि विशेषताओं निम्नलिखित हैं:-

(१) - हस्तमें श्रीमान गांधीराम इनप्रिकोण की नहीं अनुसार नया है।

(२) - इस ग्रंथ में नामादास के जीवन की कृतियों महत्वपूर्ण घटनायें पर प्रकाश पड़ता है किंतु उल्लेख पूर्ववर्ती पृष्ठों में किया जा चुका है।

(३) - इसमें जीवनी के स्वतंत्र उपलब्ध होते हैं। तुलसीदास के कर्णन में रचितिता ने उनके जन्म-स्वास्ति, ज्ञान, साधन, पिता, इनका अपर नाम, जीवन की 
घटनाएँ, गुज, मंत्र, ग्रंथ, दिव्यकाल वार्ता का कर्णन लगभग २२ पृष्ठों भरे 
किया है। ऐतिहासिक प्राचीन सुनावाहों का परिवेशणा परवर्ती बच्चाओं में 
किया जायेगा।

(४) - मन्त्रिम उत्तराधिकारी बात यह है कि कृष्ण ने दर्शाए ने मराठा और कृतियों 
का उदारता से कर्ण ने किया है किंतु नाम इस प्रकार हैः - नामदेव, तुकाराम, गोरान्दहरि, सुनामारी, दादा, तुलसी राजपूत।

५६ - मंगलम - विश्वराम :-

प्रस्तुत मंगलम के लेख मंगलम विश्वराम केशवच कुमार है। इसका 
प्रकाशन सन १६५४ में अनुवाद हुए हिंदी, थाली हे हुए। ग्रंथ में रक्षाकार पर कोई 
निर्देश नहीं है और न लेख रक्षाकार ने अपने जीवन पर ही कुछ जिद नहीं है। बताया 
इसके रक्षाकार और रक्षाकार विश्वास में हुए नहीं कहा जा सकता। इस ग्रंथ में 
कुछ पृष्ठ वस्त्रा २० हैं जिनमें वाल्मीकि हरिहर, चन्द्र पंकल, विजयदीपन नसारी की-दुनिया, 
नसारी खेत का चिल्लाह, नसारी का मात, हनुमान मुक्त, सेना, वज्रसारी मुक्त, राजा-बंधक 
और बामोद्र की रोचक कथाएँ हैं। तत्र: इस मंगलम में कुल इन मंगलों के जीवन की 
कथाऐं वितरित हैं। वाल्मीकि हरिहर की कथा ५९ हिंदी में, चन्द्रमुक्त के वर्णन में
65 हज़रत निखारक का वर्णन 33 हज़रतों में, नरसी द्वीप, नरसी गुलाम का विवाह, नरसी का भार त्र्युषण के पुरा ५३,४७२ और ५५६ हज़रतों में, हज़रताबाद का वर्णन ३५ हज़रतों में, शता नाई का वर्णन २७ हज़रतों में, २६ हज़रतों में जावाभीद वर्ण का वर्णन और रंका-बंका की कथा सहित नामदेव का वर्णन १३० हज़रतों में लिखा गया है। इस प्रथा के हज़रतों के जीवन के रूप में सविंधा कोई भी नैवीन तत्परता के शास्त्र में नहीं माना। अतः यह युद्ध श्रद्धालु पहलू नहीं है तथापि, हसके अनुशंसन के जिन उन्तरीनी निस्करणों पर पहुँचा जा सकता है वे इस प्रस्ताव है:-

(1) - हज़रत विष्णु घटनास्त्र पूर्वकाली की रचनाओं पर भाषारित प्रतीत होती हैं।
(2) - एक घटनास्त्र प्रभाकर की गर्व और गौरीतम्य सैनिक में प्रस्तुत की गई है।
(3) - हज़रत मंगल का शरीर ने आधुनिक में लिखा है वह सांस्कृतिक हज़रत नहीं कहा जा सकता। क्योंकि कथा ने किती सांस्कृतिक पहचान का सुसंगणना नहीं किया है। हसके प्रतीत हज़रत में भी लीन पद है। प्रतीत पद भी वो चरण ५६,२६ के चिराग से और कहीं ५६,३६ और ५७,२६ के चिराग से दिये गए हैं।

त - टीकाओं और अनुवाद

6- मक्खाबाल भक्ति साहित्यविद्वाणीकारः प्रियादासः-

"मजक्खाबाल भक्ति साहित्यविद्वाणीकारः पुस्त्रः के रचित प्रियादास तथा उनकी अन्य चार रचनाओं के संबंध में पूर्वकाली पृष्ठों में उनकी एतत्तीतिक सौभाग्य मात्यवकार महत्व-पूर्वकाली, पाठ का विश्लेषण करते समय विशेष प्रति लिखा जा चुका है। प्रियादास जी की प्रकृति और प्रतिष्ठा वस्तुः उनकी हज़रत मक्खाबाल की मक्खाबाल भक्ति साहित्यविद्वाणीकार नामक विषय टीका के कारण है, जिसे कथा ने स्वयं प्रेरित होकर लिखा। यह "प्रश्रण अध्यात्म" के सम्बन्धी थी। इसके रचनाकाल सं०५५६ विना ५४ में फारलू भक्ति साहित्यविद्वाणीकार की कृपा किये द्वितीय से इस प्रथा में ६३५ कविता-

6- "महास्मु कृप्पा वैधान नल्लेश्वर" भू के चरण को आधार नगर पोहोचे उसमा गए। भू तात्कालिक टीका से भार भार वह चार कित्ते की विशेष चर्चा को नुमाहियों--प्रियादास-मक्खाबाल भक्ति साहित्यविद्वाणीकारः कृपालयम्

2- "संवेदना प्रसिद्ध दक्षात्मक उपन्यास फारलू पारद पंक्ति कित्ते के" (३) वहाँ, खतिज संख्या ६३५।

(१) यह मकर्न की सर्वश्रेष्ठ टोकी है जो ज्ञानपत्र में हैं और उनके बाद भेज देकर तक तक हंदी है।

(२) इसके कक्षमालकर गौरवमण्डित नामाविरि के जीवन पर उल्लेखीय तथ्यों पर प्रभाव पड़ता है किन्हें दृष्टिकोण में प्रभावित निर्देशित किया जा चुका है।

(३) टीकाकार ने इस ग्रंथ में कितने सामाजिक दृष्टिकोण को नहीं अपनाया है।

(४) मकर्न के जीवन के वर्ग में बावर ने अपने समय तक की प्रवर्तित कथाओं का उल्लेख करते ही मकर्न के जीवन की चमत्कारपूर्व्र घटनाओं पर प्रकाश दिलाया था। निष्का यह उल्लेख नामाविरि की ने अपने मकर्न में नहीं चिकिता है।
2- मकनामाली - श्री बुन्दावनदासः-

प्रस्तुत ‘मकनामाली’ के लेखक श्री बुन्दावनदास की है।
इसका प्रकाशन बाबा कृपामार्ग, कुम्बरावर, मधुरा ने सं 2006 वि.में किया।
इसका अन्य नाम ‘वैष्णवन्दना’ भी है। स्वयं लेखक ने इसका रचनाकाल कहीं भी नहीं दिया है। लेखक के विषय में भी कोई विशेष बात जान नहीं है।
इनकी केवल दीन रचनाएँ ही मिली: प्रमणकिंचिन्द्रका, विलाप-कुमारसिंही और मकनामाली हीं व वैष्णवन्दना, जोकि बाबा कृपामार्ग जी द्वारा प्रकाशित हैं। 
इनमें से हमारे ब्रह्मचर्य की परिचय में केवल मकनामाली ही स्वतंत्र है।
बाबा कृपामार्ग ने मकनामाली की हस्तिन रचना माना है। 
श्री बुन्दावनदास के नामकरण ‘प्रमणकिंचिन्द्रका’ का रचनाकाल सं. 1863 हैं और 
‘विलाप-कुमारसिंही’ का वर्ष 1864 वि. में है अतः मकनामाली व 
वैष्णवन्दना का रचनाकाल भी सं 1864 वि. के शास्त्रात्मा माना जा सकता 
है। 
बाबा कृपामार्ग इस प्रकार के वहाँ को प्रकाशित करते हुए लिखा है कि 
‘वैष्णवसमाज में यहं वितवन है कि वैष्णवन्दना निलवा पाठ करने से श्री 
प्रदुषण सार्वजनिक भिस्त होता है और यदि मूल में कोई महत्वपूर्ण भी 
घटित हो गया, तो वह भी डारो ही जा पाता है। इस कारण इसके इसके 
‘वैष्णव- 
बन्दना’ गौरीय वैष्णवाध्य का कठिनाि तथा निलवा पाठ की वजह हो गई है। 
श्री बुन्दावनदास का इस प्रकाश्य में वैष्णव बन्दना लिखने का स्वतंत्र कारण
वद्वद्वायनस्य वेष्प्राय समाज का निरर्थ ही है। यह मननामाली
की भाषा में विद्वते "वेष्प्राय वन्दना" का ज्ञान का त्योहार उत्पा
ख्य है।

इस मननामाली के कुल १६ पृष्ठों में १५८ लघु है। लेखक ने
वौछा और चौराटा इन दो दलों का ज्ञान किया है। सबै ग्रंथ जो कुल ६२
चौराटा है और शेष ४४ लघु ५२१२ हैं। यह ग्रंथ चौतन्यमहाप्रसु और उनके
परिक्रमणों की मानलाचाराद्वय कल्याणा से बांध होता है। इसमें मकरों का
नामोलेख उक्त है। उनके जीवन व साहित्य पर कवि ने इस भी नहीं कहा है।
लगभग ७० मकरों के नाम इस मननामाली में दिये गये हैं। कवि के
निम्नलिखित कथन से प्रदर्शित होता है कि उसने इन्हें कालज्वास्त्र रचने का प्रयास
किया है और वह उसमें पूर्णतः सफल नहीं हुआ है——

केवल ये नाम पून दुल्लिन के पर रहे।
कलकुक सिरे क्रम से गह कलकुक रङे क्रम मंगे। —पृष्ठ १८६, दोहार १६४४।

इस ग्रंथ के बड़ी से निम्नलिखित विशेषताओं प्रकाश में वात हैं—

(१) — मकरमाल में कृष्णणाथ, लोकार, नित्यानंद, धन्यसतन, रघुराय
गोर्षकरी, गोपाल मदु, जीव गोर्षकरी, पूर्वाचारिजिनो, गंगाधर मदु, नामक गोर्षकरीम धन्यसतन का परिचय अथवा नामोलेख है किन्तु इस वन्दना में
उनके मानसिंहस्य उन्न प्रादेशिक लघु लगभग ४० मकरों के वन्दनाल्यक नामोलेख हैं।

(२) — मकरमाल के कर्षण में नामादास की जिस व्यापकता और सामाजिक
नियमावता या उद्यागर का परिचय मिलता है वह इस रचना में नहीं मिलता
क्योंकि पूजा किंवा प्रसाद कालिका जा चुका है कि इसमें केवल गोर्षकरी
वन्दनावह सम्प्रदाय के संबंधित मकरों का ही समृद्धि किया गया है।

(३) — अन्तिम उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें मकरों के संबंधित उन व्यक्तियों
की ही वन्दना की गई है जो कि चौतन्य महाप्रसु के जीवन के संबंधित हैं,
मन के ये उत्तम सम्प्रदाय के बुद्धायो न रहे हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं—
चौतन्य की माता श्री, पिता जाननाथ भ्रू, युव निधेशक, गोर्षकरी, अंतर
श्री, तेजच (पतनी), विष्णुप्रिया, पूजानयी, पार्श्वद सुमुद हत्याति।
प्रायः पैलय सम्प्रदाय की श्रेष्ठ अन्य अनेक रचनाओं में इन व्यक्तियों की वंदनाये गई हैं १ । जिसके ज्ञात होता है कि कवि ने उसी परम्परा का राजन किया है ।

२- महादेव की महादेव गुणचित्रणगीतिका - वालकराम

महादेव की महादेव गुणचित्रणगीतिका के रचयिता श्री वालकराम ने । इसकी इतिहासिक प्रति दृष्टान्त के श्रीरामचुंद्र में श्री अंगवलश्रेष्ठ जी के संगीतकार में सुरंगित है जिसमें ज्ञात "५८० पत्र हैं । रचनाकार द्वारा रचित हसके रचनाकार को लापक हुन्द हर्ष प्राप्त है:--

"अति ज्ञि राम मधुः सिंह थापः

हुष्ण हारमा सुग दीनी की हंसवार्यः

महादेव चिन्तनी चो टोला श्वसिध होतः

समत द्विनिर वरण ज्ञिन्धकानीः

फालूण भाषा पर बुलत सों एकत्री

उपलब्ध किस्ता दिन योम पुत्र शाह्यः

मौले पुनःद धाम मार्मरीचे वालकराम

महादेवकारी नामा की प्रवामम गाइये।"।२४५।-पत्रावृत्तिः

वदनारायण द्वारा रचनाकाल (द्विनिर कथाधि २४८-२५२) संस्कृतै १५३३ चित्र

की फालूण भाषा पुलित एकादशी है। टीकाकार मैत्रत्परिक्षित निर्देशसिद्ध ग्रंथ है जिसमे:--

"नारायण अंश धारा हंदरा परम्पति राज

लत्ती परम्य के रामांतुण प्रविष्टकाय है।

लत्त परम्पति राम मानन्द लत्ती पीन्हार सिद्ध

श्री पराकार की प्रत्याक्षी भी संतायान है।

१- उदाहरणमात्र देवकी—गीतग्रंथदास शृवं गीतग्रंथदास शृवं गीतग्रंथदास शृवं गीतग्रंथदास शृवं

इंद्रलाल ताटक, प्रियावाद कृत चाहीयती तथा 'भवन्य मोर्दिनी'।

ताही की बालकराम तास प्रेम जाकी बे पृष्ठ
पृष्ठ की प्रहलाद दास मिष्टराम हैं।
मिष्टराम की क्रिया सी बालकराम
रक्षी टीका मक्कदामुगाचित्रीकी चित्ता है। ॥ ॥ ॥ चतुर संसूराण ॥

इसके साथ होता है कि बालकराम रामानंद की शिष्य परमपरा में इस प्रकार गाते हैं—रामानंद-कृष्णादास पप्पारी-सतदास-बालकराम-पृष्ठ-प्रहलादवास-मिष्टराम-बालकराम। हैं। मोतिलाल मनारिया का मत है कि वस्तुतः बालकराम जी की यह एक स्वतंत्र रचना है, टीका नहीं। परन्तु उपर्युक्त उद्देश्य से यह स्पष्ट है कि बालकराम ने मक्कमाल पर मक्कदामुगाचित्री टीका का प्रणयन किया है। रचना के चम्पू शुद्धीलिंग एवं परिवर्तन से इस निर्देशार्थ पर पहुँची जा सकता है कि हैं। मनारिया का उपचार कथन प्राचीनकम्मार है। वस्तुतः यह टीका है।

उदाहरण के लिये यहाँ नामालक के मक्कमाल के कूल हैं और उसकी बालकराम कूल टीका को प्रस्तुत किया जा रहा है:—

मक्कमाल—रामानंद की दास प्राण मुखदत जाने।
बर्च सीयाराम और कहु उर नहीं बाने।
चुंच सा प्रीति स्वामि के शाशु भयारी।
किनीत निपन्नर रहत होत कहु नहीं न्यो।
बीर हर्मल बल रहस प्रम मर।
रामदास 'परताप ले सैम गुलाहे' केसर। ॥ ॥ ॥

मक्कदामुगाचित्रीकी टीका—
कस्मौर नहीं मौम माइ। खम खू की नहीं भाषा रसाधि।
बिन रक्षाय आक्रोसी राजु। मोलि मायल बहु हल बाजु।
बान छुबल नागत वपरापु। जोते राम उपासक बाजु।
ज्यों हक पुरभी नारी होई। पति बिन भान खुल नहीं खोई।
उम अशुल लक्ष नहीं प्रीति हिं। राम उपासक की बुद्ध नीति हिं।

——————————–—

१० मोतिलाल मनारिया-राजस्थान में हिंदी के इस्तेमालकित प्रथम की सौजन्य, प्रथम माग, ५०६, प्रथम संस्करण, १६४२ हैं। ५० हिंदी विषयािपोठ, उदयपुर।
बन्धन फन्य इन गुलिंग उपाकर। तीताराम चरित रति राती।
भे तब मचिरिदं देख सिकाना। रामदास देरे मन माना।
⇒⇒⇒⇒⇒⇒
प्रभु यह वसुधा उही मन माना। गीर नमोह लगत सुहावा।
उनहें की पुंजे झव देषो। सम स्वामी के बाहर लेंयो।

बालकारण विद्विविभक मकमाल की बुश्रिका टीका की एक प्रति बममेर के रामबाणा में दुरालित है जिसके सिद्धान्त श्री राम नारायण तोलाराम का सिद्धान्त सं ६४३० पिंढ़ है। एन्डुविवाणक निर्देश प्रेषण में यह प्रकाश किता है:—

'हरि श्री मदु-मकमाल गुणार्थकरकार वालकारणा विचार-याम्स्तोवर रचना कुंद।' युक्त उसे समाप्त कर चरणार्थि नामार्थि-तसलत रचनावरुि। ६५३। 'हरि श्री मकमाला विचित्रनीतिकायिय संस्पर्धासु। संवत ६४३०। मिति:—५ शुद्धि ७ वार हुकुम
लिखित व्यास रात्रिगी श्री राम चिन्ह नार यदी पौधी साबू राम
नारायण तोलाराम री है वाक्य पाठकमारी श्री रल्लु। ओँच्च्चाणमस्तु।
इम चलवू।' प्रेषण ३२२।

उपर्कुक दोन्र प्रक्षिपि में नामादास जूत मकमाल का मूलपत्त भी किया
गया है। बुद्धावन में सुरालित प्रति में ४५० पत्र, प्रतिपाद शक्यवरी ६२ और ६०५
रचनावरुि है जिसके अधिक क्रित्र में बुध पत्रों की हिंद संख्या ३२२ है जिनमें प्रतियुग शक्य
शक्यवरी ६६ है। टीकाकार ने टीका ६०५ रचनावरुि में की है। परलो पना गार्डें वोमों
में कोई अन्तर नहीं है। प्रतियुग विज्ञ संव्यास की प्रति के शाखार पर निर्णय
का रहा है। यह पत्र कद टीका में टीकाकार ने योगरा, चौपार, धोषा, गीतिक हैं,
मधोह, पद्मनारो, भीमह, मुक्मिमा, पक्षाद, चाटरार और चंपक इननों का प्रभाव किया
है। गुणार्थि में वस्त्र भावार में मधोह हिंद में है।

वाच्य-विचार के शाखार पर इस प्रथे की गिम्यन्निकित उल्लोकिय विश्वासार्थ है:—
(१) टीकाकार ने मकमाल के प्रायः उन सबी मकमों के जीतम पर भी प्रकाश होता
है जिसका नामादास श्री में नामोल्लक बाबा किया है।
(2) - टीकाकार ने अपने समय तक समाज में प्रचलित मन्त्रों के जीवन को प्रस्तावित करना भी किया है किसी का वर्णन मिक्रसभोगिनी टीका में नहीं भिड़ा। इन घटनाओं के प्रामाणिकता का परिदृश्य परद्रशी अभ्यास में किया जायेगा।

(3) - टीका के वार्षिक 684 देवांग में टीकाकार ने मकमाल का निरूपण, मकमाल के विश्वासी वर्णन, मक्खी की श्रृंगार वर्णन और नामाजी की आवाजाह्य आदि का तत्काल हेतु करना किया है। इस टीका के नामादान की जीवन चित्रण महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित होती है किसी उल्लेख पूर्ववर्ती अभ्यासों में किया जा चुका है।

(4) - यह टीका प्रशासन क्षेत्र मिक्रसभोगिनी टीका के बादशंप पर लिखा नहीं है। टीकाकार ने संस्कृत के लिखित श्रद्धांजलि का ज्यादा किया है, परन्तु राजस्विकास की वोइ-वोइवाद के बज़ैं की बांधने होते हैं।

5. मकमाल कृष्टान्त - कैथावादास
----------------------------------------

मकमाल का कृष्टान्त के आधार पर इलाके के प्राचीन विद्वानों में मकमाल का कृष्टान्त नामक ग्रंथ की एक हस्तलिखित प्रति ग्रंथ संख्या 325 पर दूरपित है + जिसके लिए वे उपभोग करते हैं। जन्म स्थान के आधार पर इसका रचनात्मक संस्करण 684 देवांग शताब्दी में ब्रह्मार्च्छादी पुराणिक रचित है। इस ग्रंथ में मक्खी के श्रृंगार की निर्देशित रूप से नहीं निकायी जा सकती। समस्त ग्रंथ में हर्ष संस्कृत विद्याधार

9. हैदर की मकमाल नामाश्वी क्षेत्र प्रशासनकृत टीका का कृष्टान्त कैथावादास, 684 देवांग वेद्याधार नामक रूप से कीवर्ती रचित है। श्री श्री श्री राम पत्रकार कैथावादास नामक तिलित काशी नवहार वाम्याण्य इतिहास श्री रामचंद्रमूर्ति हर्ष संस्कृत के पूरा होने पर हर्ष संस्कृत का नहीं है।

-- मकमाल कृष्टान्त - कैथावादास, पत्र सं 226
प्रस्तुत ग्रंथ में मकरों का वर्णन मकरस्वरूपतित्वका के बनुकर में किया गया है। किन्तु रचनाकार ने किमीचाँगा, सिवारतित्व, श्रीरंग, सुरेशदेव, श्यानदेव, रामदास, बेस्त वाणी, माधवदास, वदस्तिलविपतु, गौरिनिक्षापी, प्रतापस्वाजपतिः, बींचा, रचनाकार नामक "मकरों का वर्णन नहीं" किया है। मकरमाल के शेष मकरों पर रचनाकार ने दृष्टान्त लिये हैं जिससे मकरमाल और मकरस्वरूपतित्वका में कहीं गयी बातों का स्वरूपकथा हो जाता है। तलीक ने प्रस्तुत ग्रंथ में जो दृष्टान्त लिये हैं "ग्रंथ स्वरूपमास तथा हिन्दी-साहित्य-ग्रंथों" से लिए गये हैं तथा दृष्टान्त में उनकी व्याख्या भी दी गयी है। इसी उल्लेखनीय बात यह है कि मकरमाल और प्रियदास के मकरमाल की मकरस्वरूपतित्वका के दृष्टान्त के पूर्व उपस्थितक रूप में रखा गया है। उदाहरणार्थः

युधिष्ठिर श्रीमान्—कौशिक में राजस्व रहे। कैसी को वर्श भाग।
जाति को चमारा। न कथा जुन महती नौह ग्रन्थाकारकुदितः ना कृतिकोपरा है। डॉर्डरिकारिश्चन्तिनिविश्वासनामकः बचार सचिवे समाचारायुजः। प्रसु चरस्वाल को पात्र जौहर लिखी। जयास्र स्वरूपमास वहाँ भागभक्ति। खामे प्यारी। भक्ति। नरेण्यमिति संयोगोऽपि वर्णनानियम अवराणस्य। नन्दारायणस्य योगस्य वेदार्थम्। नवविष्णुस्तत्त्वम् गो यथा मकरस्वरूपतित्वः।
जातिप्राप्ति ते बड़हे हैं। जाति पात्रि गुणोत्तर वर्ण द्रव्य हरि को मने तो हरि का हों। अर्केरुक्षरस्विलालिफः चुनाती केष्मावो जाति हृदी।
वर्णकारों पानां श्रीमान्यनिधि चित्रता योरांति योनि परिवर्त्यां दुस्थम्। नवविष्णुस्तत्त्वम्। गैल गहे बात। कहीं एक काँडा फिरता रहा कांडा में एक कांडा फिरता देखा देशी सोहें स्त्री के कहा जो परोक्ष सों कहा जाने फलार्थन कहा फल नाकी गुड़ा में ते कांडा निकल हैं ये तो को क्रोणत पक्ते का उदाहर है। वाले कौं जो चमारा का पानी पीया। गह गह ल्याणी।
हेम का राजस्थान देशिय वृहदस्वरूप ते व्याख्या दिखी तव विश्व हृदी ने नारायण कौं दिया। यूरो प्रभाती का शादर विषया बाते साथा कटा गया।
वात माहित। रामनीयमाः का उनां बड़ी ही। सब संत महतों दूसरी जन शाय।
युरो विषम ब्याहै। लोग कौं जी गुरु जैसी हों जो विषम मकर निरोधणों के लाहे बड़ा बचाक ह्यारे उचित है। वैषय जैसी चालिस जी गुरु के तार्क ज्ञानां की ने विषम ने हों। — पत्र संख्या १७५ - १७६
प्रस्तुत उदरणा से निम्नलिखित निष्कर्षाएँ पर पढ़ौता जा सकता है:-

(1) - प्रियावास जी ने दुराविदनी में संबंधित छोटे कवितापत्रों में, उनके वैष्णववाद जी ने "जाति को भगवान" (कविता 503), "फैलायें" (कविता 504), "गर जो त्यागी" (कविता 505) वाच्य पदों की उपस्थिति के स्वरूप में बताया है।

(2) - वैष्णववाद के द्वारा इत्यादि के लिए कविर की उक्ति "जाति पाति जूह नहीं कोई, हरिया को भी को हरिया की हार है" को इस रूप में प्रस्तुत किया है - "जाति पाति जूहा मध्य कोई हरिया को मध्य हरिया का हार है।"

(3) - इस उदरणा से यह भी प्रकट है कि वैष्णववाद जी ने लड़ी बोतल के बाद में एवं तीनों क्रियाकालों का प्रयोग किया है। कहना न होगा कि प्रस्तुत गृह के रचनाफल सं5 6442 चित्र के वास-पास लड़ी बोतल का प्रयोग भी होता रहा है।

उदाहरणार्थ - दरिका होई, "फैलान वात, फिरता रहा, चमरा का पति पीया, गुरु भेदा होई आदि वाच्य पद।

(4) - वनिम उल्लेखित वात यह है कि वैष्णववाद जी ने दुस्मातों को पंक्ति मात्र और प्रियावास की मकरसबूटियी टीका के आधार पर किया है।

5- मकरमाल टीका - चुरुवादः -

श्री चुरुवाद कूट "मकरमाल की टीका" रायवदास प्रणित मकरमाल पर लिखक स्पष्टतः टीका है। चुरुवाद की वादक्ष्यियों थे। टीकाकार ने, व्रतियों में मैला-चरण में निरंजन देव को प्रणाम करते के बाद व्रत व्यवस्था, चुरुवाद, निरंजनदास, दास रामदास, दास राम, दास राम और वैष्णववाद का स्मृति करते ही स्वयं को सदेराज जो शिष्य माना है। होने गुरु परम्परा का वर्ण चुरुवाद जी ने टीका के हिंद सं5 633 में भी किया है। चुरुवाद जी का श्रीराम जी प्रेरण और उनकी वन्म रचनाएँ क्षणों हैं।

टीकाकार के कुङ्कुम मकरमाल की टीका का रचनाफल सं5 1853 चित की

6- रायवदास - मकरमाल - प्रकट चुरुवाद कूट टीका, गुण5 6, हिंद 6, प्रणाम - संस्करण, 2021 चित, प्रकाशक रामदास प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।
माधवपाल में कृष्णपाल की चुलबुली दिन मंगलवार है। इस हड़ के बाद मनहर हड़ में इस टीका का प्रतिलिपि किया गया है। इस टीका की प्रतिलिपि संद. १६५० विं. में वेशाल मास के कृष्णपाल की तृतीया को झिंझटना (राजस्थान) में लिखी गयी। प्रतिलिपिकार ने गोकुलदास जी ने चुरुदास जी के शिष्य नंदराम के शिष्य थे।

टीकाकार ने बीच के उदार हेड दलों के गुणगान को इस टीका का उद्देश्य बनाया है। टीकाकार ने यह भी कहा है कि नामादास के मंगलपाल पर मनहर हड़ में लिखी प्रियादास की टीका को देखकर यह टीका हड़वाल हटे में लिखी गयी है।

इसलिए प्रकट है कि चुरुदास ने यह टीका लिखी तथा प्रियादास कुल मकरराजवंशी-टीका के बाद हुए वरन अपने सामान को रखा था। यह बुध के वर्षों में इस निर्देश का संरक्षण का लिंग-महिलाओं निर्देश किया है, जिसमें। परिचय में विचारित-पूर्वी विशेषज्ञों के अर्थ-प्रति किया वायुग्रह नहीं है। इस टीका में हड़वाल हड़ों के अनुसार वाली-दोला और मंगलपाल हड़ की भी मिलते हैं। टीका के प्रारंभिक संरक्षण में हड़वाल हड़ों की संख्या ६३५ ही गयी हैं जिनमें इसी संरक्षण के परिचय २ में चुरुदास कुल टीका के ६४ हड़वाल हड़, २४ बोपार सुरम, ३४ शंखी, ५ हुत्या और ४ मनहर हड़ है।

इस टीका का योग ६३ है इस प्रकार टीका के बड़े हड़ों की संख्या ६३५ + ६३ ग्रंथांक ६६८ होती है।

इस टीका का प्रतिपाद्य रायवदास कुल मंगलपाल में निर्धारित होने की व्याख्या है। जब और पूर्वी प्रवृत्तियों में विशिष्ट विधि के प्रकट है कि रायवदास जी ने लगभग ४४४ हड़ों में ४४४. एतिहासिक मकरण का वर्णन किया क्रमों हैं जिसनु चुरुदास जी ने हड़वाल हड़ों से लगभग ६५० एतिहासिक मकरण की टीका नहीं लिखी है। इस टीका की इस उल्लेखनीय विशेषता होती है।

(२) टीकाकार ने एतिहासिक मकरण के वर्णन से पूर्व के मकरण का वर्णन विशिष्ट
tथा निर्धारित किया है।
(३) चुरुदास जी ने तारों और सिद्धों से संरक्षित हड़ों की टीका नहीं है।

--
२- रायवदास-मंगलपाल, ब्रह्मचर्यात्मक टीका, बुध २०२५ विं. में निर्धारित पक्षीयों।

- सैद्धांतिक शब्द थे गोपाल रहित किन्तु फ्रीक-संग्रह।

- धार्मिक उद्देश्य होते हैं यह टिप्पणी चुरुदास पुस्तक है। इस १५२५, हड़ ५० वर्ष ५३ ।

- तथा, पृष्ठ २४५, हड़ ६० ।
(3) - दादू, सुन्दर दास ख्यात और ज्ञात लपको की कौन हुज़ूर, खबीर, 
दादू और निरंजनी माँ के की भी सिखा - प्रशिक्षण के कारण भी चुहराल 
ने तलाशकर एक भी टिका बन्द नहीं दिखा है। टीकाकार दादू फूसी 
संप्रदाय की शिक्षा के निषेध थे। हालांकि वे जात होता है यक श्री अनुपने 
सम्प्रदाय के ग्रांति उदारीक थे। नतय उन्होंने अपने सम्प्रदाय का इतिहास प्रस्तु 
नहीं किया है।

(4) - शैली को दृष्टि से चुहराल ने प्रियावास की की शैली से अपनाया है। 
प्रियावास की ने भक्तिसबोधितात्मक का भारती पर टीकाकार के मंगलकाँड के 
ध्य या पाला है। इसके बाद क्रमशः टिकी का स्वेच्छा कर्मन, पुरुषभाव कर्मन, 
पुरुषभाववर्तन, लघु भ्रान्त, नामाभूत का कर्मन और मंगलालकव्रम कर्मन 
रिहा है। चुहराल की ने भी राजवर्धान कूट मंगल द्वारा टिकी करने के पूर्व 
टीकाकार का मंगलकाँड, टिकी स्वेच्छा-कर्मन, पुरुषभाव कर्मन, पुरुषभाव 
- पुरुषभाववर्तन, लघु भ्रान्त, राजवर्धान की को कर्मन और श्री मंगलाल स्वेच्छा 
कर्मन रिहा है। यदि ज्ञ मंगलालकव्रम रिहा दी ध्य के ध्ये है। अन्तर 
केंद्र वजन है और भी चुहराल की ने नामाभूत के कर्मने के स्थान पर राजवर्ध 
द्वारा श्री को कर्मन रिहा है। इसका कारण यह है कि प्रियावास की ने 
नामाभूत की के मंगलाल की टिकी निश्चित जबकि चुहराल की ने राजवर्धान 
कूट मंगल की।

(5) - मंगल के जीवन से संबंधित जिन घटनाओं का कर्मन प्रियावास की ने मंगल 
द्वारा टिकी में दिखा है, उन्हीं घटनाओं का चुहराल की ने चिकना किया है, 
परसु नामाभूतज्ञ मंगल के जन्म के जन्म के बत्तिन्कर राजवर्धान कूट मंगल 
में प्राचीन राजवर्धान की टिकी चुहराल की ने की है उनके देविकांसिद 
-क घटनाओं का उल्लेख किया है किंतु यह कर्मन प्रामाणिकता बन गया है !
अतए ये घटनाओं तथ्य के बारे में निकटता करी जा सकती है।

(6) - द्वारा टिकी के समाजात्मक वामात्मक और वास्तविक परिवर्तनों पर प्रकाश 
प्रदान है जिनका निर्माण पर्यावरण अवधारणा में सिखा जायेगा।
(७)- अंतिम उल्लेखनीय बात यह है कि यह टीका महिलास्वास्थ्यी पीता की ही भूमिका उत्तर और बोधराम्य है जिसमें प्रमाणात्मकता और गत्यात्मकता के दर्शन होते हैं।

७- महत्माल स्टिप्पणा - तालिका :-

राजस्थान प्रांच्छिक विश्व ग्रांथा, जोण्डर के हस्तलिखित ग्रंथ सहायता में तालिका विचित्र 'महत्माल स्टिप्पणा' नाम ग्रंथ क्रमांक २६७०८ पर दर्शित है। इस प्रति का स्थिरिकार लंब १८७६ विक १५ है जिसका निर्देश इसके प्रति पत्र पर हस प्रकार भिक्ता है:-

इति श्री महत्माल की महिलास्वास्थ्यी टीका संदेशम्। संवत। १८७६। िविषयं: विभाग बुलत पदे वारसानं रूप मेलनु। श्री।। नामपाठि मध्ये औषधि साध हरीदासों निरंजन नी स्वामी जी श्री श्री श्री अद्वैतानं।। जी दिला स्वयं स्वामी जी श्री श्री संदेश जी दिला स्वयं श्री मानवाध जी दिला स्वयं बैलीडास लित्तेये।।— पत्र संख्या १७४।

वहुवार इसके लिंगकार के तलिकार जी हैं। इस १७४ पत्र के ग्रंथ में नामाध्यक्ष कुल महत्माल और उसकी महिलास्वास्थ्यी टीका पर संकट और हिंदी दोनों में टिप्पणियाँ है जिन्हें 'शैली' 'कहा गया है। इसमें प्रतिलोक महिलाओं का बुधित्व विधान नहीं है जिसका कारण पुव्वके ऊपर-नीचे तथा दूरदूर- वांछित चारों और टिप्पणियाँ' यिती छूँगे हैं और मध्य दुर तथा उसकी टीका लिखित है। ये टिप्पणियाँ 'शैली', 'कविता और दोहा' हेतु ये हैं। 'रायकिता' ने अपने यहा को प्रमाण-सूत्त्त बनाने के साथ स्थान राणा, जीया, जमनाराणा, विश्वदराणा, अर्धवर्णा, मगना, वामनाराणा आदि पौराणिक ग्रंथों के उद्धरण प्रस्तुत किये हैं। उद्धरणार्थम् नामाध्यक्ष कुल महत्माल के हस्तकं तल्या ७८ (केसनमदूट) पर जी टिप्पणियाँ हैं वह इस प्रकार है:-

'न हृद्यानां जव नरस के सुख तो वेदशाल है जिसकी मौन कृति पद्म जी है पाप ताप निमोग ताप विहार, रक्षोपाय के फल मौग नवारे इस्ट जीव तित को जा जी सोमा जो गार्न पिता तित की हुण स्मृतिको वीर्यान यह हुई.
के ती घूम स्कूट प्रकार व मफक्सस्वादित्ती टीका के ऋचित संहारा ९३ की भी व्याख्या यहाँ प्रस्तुत है--

' की ल जी पूरी दृ कोनेक्स की तरी पालक वांत ते वायी इन नीची तीनों बाल अमक नीर में कि वह क्रान्ति ने निकले क्रान्ति कही पालक की हरि बींव कहां ते वायी कहां जायां वह काहूँ में निहृते करी यह नीची तह शिकाराई ।

एकादश मादद बनन्दि प्राणिनां प्राण वार्शानां लगता।

मापिक् गुणां प्रत्यक्षाएवं कम्पवारणां। भाषानुसार: काविक्षारां जन्मापि पूजथे हुँ। देवानामपिरणां वे पूज्य हन कविक्रम।। च जायते

मेव स्थिन मृत्यु जो की मृत्यु-मति सो तो तो परम मन्त्र पायी तारां मकां

विधि पर निर्देश गुयालसम्पदारापरी वास्त की दिघा है पर उपमे पीपर नाम

कहां पर कर्मांदेषक कहै कहै। जिन जन प्राण भूई की जीता। में। उपमे

दौष्ट्ट न कोई कहां तो कुछ। के पावा पुनर्न फल हरिपुजन को रहन। जयं

कल करने पुरुषीश्च प्रकार कहां का दोभू क्रोण में वाही वाही सो जो परम

महाविद्यापरी कुलम चंद्र ध्वनि ना रेवाना कोई श्रेष्ठ लोके परवाना

भक्ति हरिजी दरसज हीरो जी जूहियां तप व्रण सर्व हन्मण तो हर नाही

गांगाराम कल जुरां ध प्रत्यक्ष मकां धार लांग।।। प्रत्यक्ष ३।।

उनकी उदारणां में प्रकट है कि कवि ने मकारल के इष्ट्यां कथना उल्लेख

प्रख्यातास कूल टीम के कविता के वास्त की स्वाक्ष चारन एवं उसे विकल स्वर्ण ग्रंथों के

व्यक्ति र पर श्रमण करने के लिखे इस ग्रंथ का प्रश्न किया है। रचना की प्रतिविधि,

वीर कृतिकार का बलात प्रस्तुत प्रभावित विषयों के लेख विभाव की व्याख्या तारी के

दृष्टिकोण से इस रचना का अपना निष्क महत्व है। वन्न में एक उल्लेखीय बल यह

भी है कि इस रचना से मकारल के जीवन पर कोई प्रतिकित नहीं पड़ता, केवल उनके 'कविता

को उजार बनाने के लिए दृष्टान्त और टिप्पणियों

मकारल भी मकारल के टीका के दृष्टि हस्ताक्षरित प्रस्तुत है।
मकरमाल शीर गंगा-रावनोदितीया की गुड हस्तलिखित प्रतिमा
ग्रंथांक ६५४५, ६५४५ पर जोधपुर के उपयुक्त संग्रहालय में सुरक्षित है। ग्रंथांक
६५४५ के प्रतिलिपिकार शीर लालदास है तथा इसकी प्रति उसकी प्रतिलिपिकार
होती है। इन दोनों प्रतिमाओं में कुल के परमाणु 'मकरमाल दूषण गाथे विख्याती,
कविता ' मकरमाल में नायन विख्याती कविता ' और ' नामाजी की स्तुति '-
विकास से बना हुद्द किया है जो प्रतिलिपिकार कारप मिलते है। ये हर इस प्रकार
है:—

२२२

कृतिका विख्यात रामनाथ कुणाथ जु की
हां जो लगाई हाँ जानी की करु है।
कामी जों तयों रहे स्वास्थ के माहि वैह
समय की मिहिमा जैह ताही जैह लाल है।
कंडक को जैह मारी जैह कों मारकांटी
निम्न ही कों पाठी पाय कुम भूम में परद् है।
चरणानुतुल हीं नर्सीति वक्रिति जाके
मकरमाल लाल तंक शान पुरी है। १११।

मकरमाल में लायने विख्याती कविता—

निनून बदून माहि में बदु जाने नाहिं
एक ही लक्ष्मी भाव माहि को रि बालाको।
समय को सेवे सीता चरालुमुल सेवे
तम मन धन देवे माला तुलक बनाकां।
काजु भीन बाल एक प्रभु को विस्वास बदरा
दासन को लाह होय शेखी नवालाकां।
ओ विश्व होय जामे कहा नन नारी
तामें को मकरमाल माहि नामास्वामी लाकां ला। १२।

नामाजी की स्तुति:—

नमो नमो द्वारास्वम नमो की जानास्वामी।
चूँ लिध देव द्वारा कालिन्ध अंतर्जाती।
यही विवरण ग्रंथ संख्या २९५५ के पत्र संख्या १०५ पर स्थापित हुआ है। इसका लिपिग्रंथ ६६७२ नं ६ है। इस विवरण से नामाधार जी की निधन काल-नीति, मकमाल का महत्व और नामाधार जी के क्षणिक-स्वातंत्र्य प्रकाश प्रदान करता है।

८- मकमाल की चचनका टीका - सेवाविधान:-

प्रस्तुत 'मकमाल की चचनका टीका' के टीकाकार जी सेवाविधान हैं। यह मकमाल और मकरिवालक टीका की टीका है जो हस्तसंपाकित है। लेखक को इस टीका की हस्तसंपाकित प्रति श्री राजथानमार्द, पेलिकारेड, दवियाड़ा (राजस्थान) के वर्तमान पुजारी श्री दुर्गराम जी महरू के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

टीका में लिपिकार को कहीं उल्लेख नहीं है लेकिन मेंडर के पुजारी श्री दुर्गराम जी महरू से लात सुना कि इसके लिपिकार उनके पितामह श्री कल्लराममहादेव जी सेवाविधान जी के शिष्य थे। शोध की दृष्टि से हिंदी साहित्य-काल में यह टीका एक नवीनकालिक ग्रंथ है। दस टीका के पत्रों पर ६५२ तक संक्षेप की गयी है। नारायण पाँच पत्रों और आठवाँ एक पत्र पर कोई जल्दी विधान नहीं है। टीका पत्र संख्या २५५७ नहीं है। यह लिपिकार की बुद्धि है ज्योतिष प्रागातुसंधान वे पत्र में त्रूम नहीं दूसरा है। बत्त: इस टीका में पत्रों की संख्या ४४७ है। पत्रों पर पंक्तियों की संख्या का सम्पूर्ण विधान नहीं है। फिर उन पत्र में अधिक पंक्तियों है तो फिर में कम। काली स्वार ही...
से लिखित यह प्रति में लाल स्वाही के विराम सिंहचंद का ब्रह्म है। इस टीका का रचनाकाल दोनो १६६२ वि.स. के वर्षों का मास का १२ मासि इस निःपिना है। यह गिरिश (गिरिसुर) राजस्थान में राजा अभिषिंद जी के संरचना मंदिर में बनायी गयी। टीकाकार वासिवादा के निवासी गोस्वामी ब्राह्मणि का शिक्षा और नागर जाति का चेतन ज्ञान था। वाद में राजा अभिषिंद ने गिरिसुर (गिरिसुर) में इन्हें टीका रचना के निश्चित कुला लिखा था।

इस टीका का वणित-विषय इस प्रकार हैः

१. ग्रंथ के बारें में प्राचीन हैं जिनमें टीकाकार ने टीका लिखने का उत्साह किया है। ये कविता टीका लिखने के ६३ दिनों के बाद होना चाहिए।

२. यह संस्कृत एवं अङ्क १६ कविताओं में वृद्धावन नाम परिवार अष्टक का वर्णन है।

३. यह वाद टीकाकार ने ६६ दिनों में महामाल की चन्द्राटीका करनेके कारणों का उल्लेख किया है लेकिन मार्ग निर्देशन राजा अभिषिंद ने किया। ये दोहे ग्रंथ के बारें में होने चाहिए फिर स्वायं टीकाकार ने इस प्रकार कहा हैः

"भव दी महामाल की चन्द्राटीका ब्राह्म के वाद ब्राह्मारि।

नीचे लिखे हैं ताक़ पीढ़े यह नव कविता लिखि चाहिएः"

४. इन ग्रंथों के दोहे ६ कविताओं हैं जिनमें इन ६ कविता ग्रंथ के पत्र संख्या ४४०-४४५ पर मी हैं। ६ शास्त्र है लिपिकार ने यहाँ बुद्ध से हाक़ किया लिख दिये हैं लेकिन यह सर्वें एक कविता ३ परिच्छेन्द्रों में नहीं हैं। इस बुद्ध की

लिपिकार ने स्वायं स्वार्थी करते हुए कहा हैः

५. शहर गिरिसुर में राजा अभिषिंद जून के हृदय चन्द्राटीका मंदिर में चन्द्राटीका बनी है। नूनी शत द्वारा सार तीयत हो उस मास कार्तिक में पौष्यो मूर्ति सभी मनो मुक्त मन मनी है।

"पत्र सं4४०, कविता सं६२

६. सूरे कुरुक्षेत्र में जब यह राष्ट्र वल्लभ जी के हृदय मंदिर में चन्द्राटीका बनी है। नूनी शत का शतृय सार उस मास कार्तिक में पौष्यो मूर्ति सभी मनो मुक्त मन मनी है।

"पत्र सं4४०, कविता सं६२"
यह कविता पीछे दूर लीखी है इसने हारा मूल के लिंग है: अब यामे कोई कविता नयों दूर होकर देते लगायो है हति है।

लिपिकार ने यहाँ तक के टीका के पत्रों पर कोई वंथ विचार नहीं किया है।

(५)- बागानी ४३६ पत्रों में महत्माल और मक्किरस्योधिनीकी की वस क्रिका दी गयी है। इस क्रिका क्रिका में मक्किरस्योधिनीकी के कवियों की संख्या ६२५ दी गयी है जो गलत है। इसे लिपिकार ने पहले भी मूल को मानते हुए लिखा है कि "बच मुला ।। ऐसं २५४।। वह टीका के १६३६।। यह प्रकार बादु दे लिखते बताए है। बालाने कोई दौड़ गया है। परंतु टीका के कवित तो है बहाना मप है। वामेद्यारे बाँक बदलित है। सो बागानी से शेयरा लीखा है।"

कहुं तो यह है कि मक्किरस्योधिनीकी के लिंग १२ क्रिका के शब्द टीकाकार ने क्रिका क्रिका में कवित-टीकाओं की संख्या गलत दे रखी है जिससे अन्तिम संख्या बढ़ को गयी है।

(६)- पत्र संख्या ४३७ पर अमेठिय का सुयूकपत दोहों में वर्धित है।

(७)- पत्र सं १५७ पर ही भारत के एकदम संक्षेप में श्रीकृष्ण के सुब से वर्धित मक्किर-महत्मा को टीकाकार ने एक स्रोत और क्रिका ३ कवियों में कहा है। फिरके पहला स्प्ल से दोहे में दशा मक्किर का निरूपण हुआ है।

(८)- टीका के पत्र सं ४४०-४४२ पर महत्माल की क्रिका क्रिका के फल स्वतंत्र विद्वान विचार १२ कविय और दो होनेहै। यहाँ कविता संख्या २ में टीका का रचनात्मक और टीकाकार के विचार-व्याख्या का उल्लेख है। जन हैं में महत्माल का महत्व में वर्धित है।

(९)- टीका ग्रंथ के अंतिम पत्र पर,(पत्र पर कोई वंथ विचार नहीं है), टीकाकार ने “वृन्दावन वास काव्यो तह वार्ती “ करनी“ के लिये एक दोहा और ४ कविता का चयन किया है। स्पष्ट ही टीकाकार बहु वस्त्र के लिये वृन्दावन भी रहा है।

इस टीका ग्रंथ की कविता उल्लेखनीय विचारात्मक निम्नलिखित है।
(1) - वचनका टीका में मकमाल के बच्चों की टीका है। यह स्मरणीय है कि प्रियादास जी ने मकमा सवालिनीटीका में कुछ कहनों की टीकाएं होनी दी हैं किन्तु इसे सर्वाधिक टीका कहा जा सकता है। हजारों ही नहीं, कथन ने प्रियादास जी की मकमा सवालिनीटीका के कविताओं की गाथ में व्याख्या भी दी है।

(2) - यह टीका रजनाध्यात्मक गय में है। रजनाध्यात्मक में टीका को सुगम करने की आवश्यकता अपील की जिसे प्राप्त था तो ऐसे स्तर टीकाकार ने स्वीकार किया है।

(3) - इस टीका में टीकाकार ने कुछ मकमा के जीवन की बन्दताज्वूल जिन्दगी में प्रस्तुत की है जो मकमा सवालिनीटीका में वर्णित नहीं है।

(4) - टीकाकार ने नामामास के जीवन पर कुछ महत्वपूर्ण बताएं भी है जिनका उल्लेख पूर्वनिर्देश व्याख्या में किया जा चुका है।

(5) - टीकाकार ने किशोर सामर्थ्यवादिक दृष्टिकोण का नहीं अपनाया है वरन्तु वह राधावलस्मान्द्र नामाजी का बनाकर था।

(6) - इस टीका की एक उल्लेखनीय बात यह है कि क्रीड़ाभास्त में वर्णित नववर जिन्हें के मकमा का निर्माणित किया गया है इस नववर मकमा के अविकलरित द्वारा वर्णित नववर मकमा का उल्लेख भी किया गया है इस दशक मकमा के निर्माण में टीकाकार ने एक-एक मकमा के मकमार को प्रस्तुत किया है। यह स्मरणीय है कि दशक मकमा का विकास का प्राण नियम नामाजी ने भी किया था।

कृति में, यह टीका एक नवविभिन्न गति ग्रह है तथा साहित्य के दौर में यह टीकाकार एक नवविभिन्न साहित्यकार है। मकमाल की परम्परा में इस टीका का...
एक महत्वपूर्ण स्थान है। अनुसंधान को सीधे में सेवाप्रदाय की अन्य रचनाः 
श्री गुरुकुल वेद्यावृत्ती की प्राप्त हुई है। यह जैत्य हैं, प्रतिष्ठित निष्क्रिया में श्री कालिग्राम मुद्रित है। यथार्थ यह रचना हमारे किसी की परिवर्तन नहीं वासी तथापि इसका रचनाकाल सं० १६८५ वि० के शासितमात्र की, क्षणी दिन सौंपतर है तथा लिथोग्राफ सं० १६३६ वि० की माय सुरी ९ इंकार है। बस्तु मूलमाल की वानकारिका का प्रतिस्थापित काल सं० १६३६ वि० के तत्त्वा अदृश्य है।

8- राजस्त्र प्रकाश महाप्रभु की टीका- जानकी राजस्त्र शासन:-

श्री जीवारा राम ज्ञानेश्वर कुलं राजस्त्र प्रकाश महाप्रभु पर प्रस्तुत टीका लिखी गयी है जिसके द्वारा श्री जीवाराम वार्तकेवर उपनाम जानकी राजस्त्र-शासन की है। स्तंभ टीकाकार ने इसके राजस्त्र नाम का मिलाया निःछिन्न लिखा है। टीकाकार श्री जानकी राजस्त्रकारण श्री महान्त जीवाराम ज्ञानेश्वर के शिष्य थे। टीकाकार ने इसें शास्त्रुमार्य नहीं दिया है। यह टीका रचना की वासु इन्हें गपने गुरु से प्राप्त हुई हैं। तिन्हे सं० १६४६ वि० शासन माल के सूक्ष्म पत्र की विपरीत दिन सौंपतर को दस टीका के जनन की द्रष्टा उर में उद्यमन है। टीका के बनन में इसका स्वाभाविक काल सं० १६४५ वि० दिया गया है।

9- समय श्रीकृष्ण वर्तक पद ॥ नब शासन नव रात ॥

चंदवार तिथिति वर्षमौ ॥ गुण गाये वर्षमौ ।।१६३ ॥
हृदय श्री गुण सतक वेद्यावृत्ती ॥ दोहा स्वाभाविक मूलमाल स्वमान श्री राजधानीमय नमः ॥ श्री गुणमधुन के दास वल्लभार लन्तितां। समुक्षांु श्री। श्री। श्री। राधा। राधाकृष्ण। राधा। राधा। राधा। राधा। राधा। संवत १६५६ नात मात्र तुझी ६ हुई।

-वेदाविक दास-श्रीकृष्ण सतक वेद्यावृत्ती-पद सं० ५४-२५(वर्षकालक्षणहस्तिलकी)

10-जानकी राजस्त्रकारण-राजस्त्रप्रकाशमहाप्रभु की श्रीसुधीपितकीका,पृ० १९५,ह्यद सं० ६६३,तुलुङ्ग स्तंभकारण,सं० १६५५,प्रकाशक लघुमारिका नवोध्य।

- वल्लभ, पृ० ९, हंदू, २।

- वल्लभ, पृ० १२५, ह्यद ६६४।

- समय उनिस्मत उपदेश मात्र श्रृंग साधन पक्षपात नष्टानी गनाह है।

- राजस्त्र विस्तृत विषयों उपलब्ध श्रीप्रमुख लघुलितालं की विचार इनका उर में जारी है। राजस्त्र नरसुधी के पारदर्श श्रीसुधीराजस्त्र श्रीसुधीपितकी समाप्ति कर पाए है। जनक देवलय राजस्त्रकारण पदकलम में राजस्त्र प्रकाश महाप्रभु वर्षपात है। ६६४।

- हृदय श्री जानकी राजस्त्रकारण कुलं राजस्त्र श्रीशुधीपितकी चमचप्प संवत १६५५।
वर्धमा - बिष्णु की वृद्धि से यह रसिक प्रकाश मंकमाल की टीका है। रसिक - प्रकाश-मंकमाल का निविद्धन प्रस्तुत व्याख्या के पूर्वाइतिहारी पुस्तकों में निम्नलिखित है; यह टीका मनाहर कविताओं में छिपी गयी है। जी अगरजन नान्हरा ने इस टीका में ६९६ कविताओं के उल्लेख किया है। लेकिन तीन कविताओं के उल्लेख नहीं किये गए। टीका के वाक्यांश में ग्रंथकार का स्पष्ट वर्णन, अंग प्रमाण और संलग्नारण के उल्लेख नहीं किये गये। टीका के बाराम में ग्रंथकार का स्थानीय वर्णन, अंग प्रमाण और संलग्नारण के उल्लेख नहीं किये गये। बदन्ति का तीन कविताओं को होकर केवल कविता के उल्लेख में रसिक प्रकाशमंकमाल में वर्णित कविता की विस्तृत टीका है। टीकाकार ने रसिक प्रकाश मंकमाल के लाभ ७०-७४ कविताओं की टीका नहीं की है। केवल कुछ ऐसी कविताओं की टीका भी सिद्ध है जिनके तीनों युगलकृत्रिम को नूतन रूप से खुल नहीं कहा है। इन कविताओं के नाम स्वामी रामानन्द, स्वामी प्रम प्रकाश, स्वामी चरणदास, पूर्वरिद्वार और तानवदास हैं।

प्रस्तुत टीकाकार की उल्लेखनीय विशेषज्ञताएँ निम्नलिखित हैं:

(१) प्रस्तुत मंकमाल के जीवन चौंच को प्रस्तुत करने के लिए टीकाकार ने प्रस्तुत विशेष चित्रकला का सहारा लिया है।

(२) इस टीका के रसिक प्रकाश मंकमाल के महत्त्व पर प्रकाश प्रदान है। टीकाकार ने कहा है कि जो रसिक प्रकाश मंकमाल को गाता है वह रसिक समाज में प्रभावी प्राप्त करता है?

(३) इस टीका में प्राचीन युगलकृत्रिम के जीवनचर्चा के साथ मंकमाल के मुख्य ६४ कविताओं का उल्लेख भी किया गया है।

---

6- राजपथ, बुधवार तिथि २२, कारकर्म सम्पादक, नामकान, २०२१, प्रकाश वर्ष २०२१, प्रकाशन राजस्थान ग्राम विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

2- जैन, पृ. ६, हंद-४
(४)- इस्मे भावायों की शिष्य परम्परा का वर्णन की गई गाया है जो ख़ुलासा जी के एक हद में सम्बन्ध नहीं था।

(५)- इसकी आन्तिम उल्लेखनीय वात यह है कि इस्मे मक़री का वर्णन औरनाकृत सविस्तार मिलता है तथा राष्ट्रीय सम्प्रदाय के वनक काय्य - रचनाओं की नमाजी इस टूका से प्राप्त होती है। अतः इसके वातार मूर्ति छोड़ना कि विषय तथा उनकी बाब तक ग्राम: उपेक्षित रचनाएँ प्रकाश में वाली है।

८०- मक़राब - प्रतापसिंह:-

मक़राब की परम्परा में लिखित ब्रह्म प्रताप सिंह कूट मक़राब एक विशेष उल्लेखनीय प्रयोग है। जिसका नाम मक़राब मक़राब है। मक़राब २२वाँ संस्करण में १६५२ साल में बुकार ग्रेस, चुकियों, खबरों से प्रकाशित हुआ। मक़राब रचनात्मक सं० १६५२ वि. १०१६ है। यह 'मक़राबप्रदीपन' (दुलितराम) का माध्यम है -- जिसकी प्रताप सिंह का उल्लेख स्वयं प्रेमिक है इस प्रकाश किया है:

‘इ बह यह पौरी मक़राब कहलाउलिफ जिस प्रकाश देवनागरी में माध्यम हूँ को लिखा जाता है मक़राब मुकाबला है कि प्रथम ऐसे चित्र की यह चाह हृदे कि प्रतापसिंह के महाकाव्य के बल महानति व गीता व नारदपरारता तथा गौतमलालिका हत्यारिणी प्रवेश का संघ करके पौरी बनाते वह भूल है लोक भाव में इत्यादि प्रवेश का संघ करके पौरी बनाते अर्थात् विचार व अप्रमाण व सातिक व सातिक व प्रशिक्षार्थी व स्वातिक हत्यारिणी के संघ करके कितने चित्र व इस परिप्रेक्ष्य में प्रवेश रहे तब संघ उन्नीस वो स्वयं १६५३ साल में बुकक प्रेमिक के अन्य प्रकाश में प्रकाशित ग्राम में जो प्रसादयाम में दुलितराम प्रकाशक है तब वे रायवर्तम लाल साहिब बिन्दौला छूट रहे हैं। उन्हीं सभ्य उपेक्षित-प्रतापसिंह नामक प्रवेशों रहने वाले ज्वलावाही के जो नेताकार्ण दे सा मिला वाले शहर के रहने वाले लाला दुलितराम ने जो पौरी रंगे वे तब भी करके मक़राब प्रदीपन नाम स्वयं प्रकाशित है जिसकी लिखी हुई। यह उन्हें संघ करके प्रदीपन व प्रमाण ने जो पौरी रंगे वे तब भी करके मक़राब प्रदीपन नाम इस्तीफे को प्राप्त हुआ यह व वानस्ति चित्रों का प्राप्त हुआ यह व वाहान्त है।

---

६- प्रतापसिंह - मक़राब - दूत गुप्तिक, श्रीरघु देवनागरी में माध्यम होने का कारणन् -- पृ. १२}
197

लक्ष्यावृत मानवशास्त्र कर्ते मनोवैज्ञानिक पदार्थ को प्राप्त कर दिया व लाता उचित-राम के प्रेम व परिष्कार की बहुत सबूत थे ही नहीं ही सबकी सबूत थी काल उल्लेख व वेदांत का सुविचार लिया तब तब वह ममिलाइया थी यदि इस पोषी को देवनारायण में मात्रान्तर यथाक्रम तथा न कर वहित नहीं पाया है उन वर्ष मात्र पक्षों को जननयक ही वो दोषा - दोषा लिखे 2 तीसरे वर्षा संवत ६२९ नों तक शुभक रूपस शुल पृष्ठावर्त को किस युक्त स्थानी व मात्र पक्षों की कुपा से यह मक्कामाल को प्रेम वर्ष सम्भव है व समाप्त हुआ।

वर्ष-सीकाय की दृष्टि से इस प्रेम में बर्मांत २५६ पक्षों का जीवन -
मृत है जिन्हें २४ निष्ठाओं में वर्मांत करके प्रस्तुत किया गया है। प्रेम के बारे में 'मानवाज्ञान व भावृत व नाम की ममिला, श्री युक्त की ममिला, भावृतमन्डित के मशिनों व तख्त, भावृत मक्षिका की ममिला, श्री मक्षमाल की रचना का कारण, नामार्थ का परिचय तथा मक्षमाल के दीक्षकार का व्रतान्त, मक्षमाल की ममिला व रक्षात वर्मांत का किया गया है। इसी प्रकार २४ निष्ठाओं के बाद 'अन्य प्रयोजन की ललन्त' श्रीराम के लगभग ४५ पृष्ठों में प्रस्तुत मक्षमाल के मात्रान्तर की सम्मानित, भावृतमन्डित की ममिला व वर्मांत भावृतमन्डित के निरूपणी लोगों का वर्णन, युक्त का स्तंभ व वृतान्त, निदएपासाभ व भक्तिसाभ की परस्पर विशेषता, जिपुलाभ व अन्य, स्वरूपण, भावृत के अविकार होने का हक, जुगन व जुगन की लाख व हानि, निष्ठाओं की श्रद्धा व नाम पदार्थ व भावृत मक्षिका से प्रविष्ट बर्मांत है।

उपलब्ध २४ निष्ठाओं की नाम इस प्रकार हैं:-
भाविनिश्चिन्ता, भार्याविक विष्टाल, भाष्ठरिताल व तत्त्वानिष्ठाल, भावण महात्म्य निष्ठाल, भावनिश्चिन्ता, भाष्ठरिताल निष्ठाल, युक्तनिश्चिन्ता, प्रकाशित विष्टाल, तीलानुक्रपा निष्ठाल, विष व विशुद्ध निष्ठाल, प्रतिनिश्चित, महाप्रारंभिकाल, मात्रामहिमाल निष्ठाल, मात्रामहिमाल निष्ठाल, भावनाम महामहिमालिनिष्ठाल, वैद्य-भक्तिसाहित्य की महिमानिश्चित, शास्त्रिक व वैद्यकितिक निष्ठाल, साहित्याविक निष्ठाल, ज्ञान व मात्रामहिमाल व प्रेम निष्ठाल। हर निष्ठाओं में बर्मांत २५६ पक्षों को दो कार्य में विभक्त किया जा सकता है —(१) पौराणिक मक्ष व (२) वैद्यकितिक मक्ष।
(1) पूरा कानूनः प्रतापसिंह कुरू मकमाल में पूरा कानूनः की घोषना नामांकित, मकमाल की भविष्यत, नहीं मिलती। फिर भी, इसमें लगभग 65 पूरा कानूनः मकमाल का जीवन वृद्धि वर्णित है। इन सभी मकमाल का उल्लेख नामांकित की ने 'मकमाल' में लिखा है।

(2) ऐतिहासिक कानूनः इसमें वर्णित एकु दत्र ऐतिहासिक कानूनः की संख्या लगभग 984 है। इनामू 'मकमाल प्रदीपन' और प्रस्तुत मकमाल के तुलनात्मक परिदृश्य के साथ यह दोनों निर्देशात्मक निर्देशात्मक है कि इन ऐसे मकमाल का विवरण प्रस्तुत मकमाल में लिखा है जिसका उल्लेख कुलदीरा की ने 'मकमाल प्रदीपन' में नहीं लिखा है। इन मकमाल के नाम उनकी निष्ठा के कलाकार निम्नलिखित हैं:

(1) धर्मकृपानिष्ठ - हरिदास
(2) साहित्यविद्वान निष्ठा - महानदास, कृष्णदास और हरिदास
(3) श्रीरामविद्वान निष्ठा - श्रीराम श्रीराम
(4) चौराहियाँ निष्ठा - रायबाबू
(5) सीमाबांधनिष्ठा - कुलदीरा
(6) वृहदनिष्ठा - कुलदीरा

ऐतिहासिक कानूनः की दो उपकरणः में रत्न जो कहना है - कवि और हतर मकमाल। इसमें लगभग 65 प्रकारः का जीवन वृद्धि दिया गया है जबकि कवि: 620 हतर मकमाल विविध सम्प्रदायों के अनुसार है। इसकी प्रकाशन उल्लेखित वात तो यह है कि नामांकित की ने संस्कृत वर्ण का स्मरण नहीं किया है किन्तु प्रतापसिंह की ने इनका जीवन वृद्धि प्रस्तुत किया है।

मकमाल - मकमाल कल्पना की कलिप विशेषताओं निम्नलिखित हैं:

(1) यह लक्ष्मीचन्द्र ग्रंथ में लिखी गई है।
(2) ग्रंथकार ने 'ग्रंथ के ग्रंथ में' श्रीरामविद्वान जयदेव श्रीरामविद्वान का स्मरण किया है जिसके स्पष्ट है कि राजसिंह रायचार्य-सम्प्रदाय का ब्रत्य मकमाल था।
(3)- ग्रंथकार ने मकमालकार नामादास जी के जीवन विश्वायक हुए सूत्र प्रस्तुत किया है। हिमा उल्लेख यथास्थान वृद्धि व अभाव में किया जा चुका है।

(4)- इसमें मकमल के दौरे में प्रचलित विनियम वस्त्रों के मकरण को स्थापन किया गया है तथा उनका वर्णन उनकी निष्ठा के बाहर दिखा गया है।

(5)- लेकिन चारा वस्त्रों को पृथक पृथक नहीं माना है और एक ही कठा है

(6)- इस मकमाल में हुए मकरण के जन्मकाल, जन्मस्थान, सामर्थ्याक्षर स्थान, रचनाओं लिखने के नाम रेखा गये हैं किसी उनका धातिक और सामर्थ्याक्षर महत्त्व का परिचय मिल जाता है।

(7)- इस रचना के स्वरूपी उल्लेखित विशेषताओं यह है कि इसमें लिखा है की शिष्य परम्परा की प्रस्तुति की गयी है जिसके उनके काल नियोजन में प्रवृत्त वहातला निकलती है।

69- मकमाल : मकमाल हरिमक्षिकाका टीका - व्यायाम भिन्न

ग्रंथकार ने ' मकमाल ' और ' मकमाल-हरिमक्षिका -

प्रकाशिका ' नामक दो स्वतःत्र ग्रंथ लिखे । ' हरिमक्षिका ' की धूमिका में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ' हरिमक्षिका ' ते पुर्व सो १८४०
चिो में मकमाल की रचना की लिखी में दोहे, चौपाई बादि हंदों में २१ निष्ठाओं
की गई हैं। ग्रंथ भी तक प्रकाशित और व्याख्या है। धूमिका में यह भी कहा गया
है कि इसकी पाठुलिपि कमबर्ड प्रेस में है। लेकिन जबुज़हारा ने उन्हें प्रेस से पत्र -

8- प्रतापसिद्ध - मकमाल, पृष्ठ ४७५।

२- ".... संवत १८४० में भी यही वार्तक मकमाल को दोहे - चौपाई और
कई हंदों में सिंहर २५ निष्ठाओं में पूर्ण कर लिखा परसु अभी तक
यह ग्रंथ प्रकाश नहीं हुआ, कमबर्ड प्रेस में मौजूद है।"

--३० व्यायाम प्राप्ति बिन्न - मकमाल हरिमक्षिका प्रकाशिका टीका,
मृ २७, संस्कृत सन १५५९ चिो, प्रकाशक वैंकेटचर प्रेः, बनकर
व्यवहार किया जिसे शात दूषा कि उसकी पाण्डुलिपि भी नहं अपार्थेय है।
श्री ग्यरचन्द्र नाथके ने स्वाधीन मकंभाल हरि मक्खी प्रकाशिका टीकाके रचितोत्तम खेती निवासी दासादुस दरियपन्नम रामादुवास उपनाम हरियर जाति काव्यस्त नहं हरि टीका को विद्वरूप करके पड़ फिंद ने लदिये लेखनवर श्रेय से सं ६५५५ वि० में प्रकाशित की थी।

श्री ज्वाला प्रसाद मक्खी जाति के हिसाब तथा राणण्यों के निकट सुरावस-बाद के निवासी थे। मकंभाल हरिमक्खी-प्रकाशिका की रचना श्री गंगाविष्णु दासा मोहन ने पर की गयी थी। इसका रचनाकाल अन्तःसाधन के तहत संवत् ६५५५ वि० है जो इस प्रकाश है:-

संबूत स्र श्र श्र मध्य विपु, साधुकस्त पत्र श्रान।
हरि वासर मंगल विक्रम, पूर्ण महो सुलबन।

इस दौहे में श्र श्र श्र मध्य प्रस्तुत ग्रंथ के रचनाकाल का संकेत देते है। इन शब्दों का वर्णक्रम: इस प्रकाश है: शर-बाण वर्णारूः ५, शर = ५। श्रंक = ६ और विपु = चन्द्र वर्णारूः १। 'ब्राह्मण पुरुष वासर मोहन गीत:-' के सुनार यह संय संव ६५५५ वि० ठहरता है। आत: मकंभाल हरिमक्खी-प्रकाशिका का रचनाकाल संवत् ६५५५ वि० के मध्य मार्ग के शुल्क वहा का रविवर है।

हरिमक्खी-प्रकाशिका मकंभाल की गया में लिखा टीका है जिसमें मकंभाल के मंकाट का २४ निष्ठाओं में कविताव मिश्रित गया है। इन निष्ठाओं के नाम क्रम: इस प्रकाश है:- प्रथम स्याहीनिष्ठा, मागवत वर्ण प्रचारण निष्ठा, प्रवचना, दासु-वाणिज्यनिष्ठा, अवसंग महामन्त्रनिष्ठा, प्रकाशक वर्ण की संग्रहनिष्ठा, भीषण व मेण्ड का वाणिज्य निष्ठा, गुण महिमा के विनाऊँ निष्ठा, प्रवचन और शर्म विग्रह में निष्ठा, दुतावान निष्ठा, श्रान और वाहिका का वाणिज्य निष्ठा,

1- राजावन, मकंभाल - ६५५५ वि०, दूल्हन श्री कारचक्करहटा प्रथम संस्कृत, संवत् २०२१ वि०, प्रकाशिका राजस्थान प्रत्यय शोध प्रविद्यांन, जोधपुर।
2- ज्वाला प्रसाद मक्खी - मकंभाल हरिमक्खी प्रकाशिका टीका, पृष्ठ ३६६, दोहा संख्या ३६
लक्षीराम कुल "मफिड्रीप" में भी २४ निष्टाओं में दी मण्डन का करिकारण किया गया है। ज्ञानात्य परिवर्तन वे यह निष्टाओं निकलता है कि इन निष्टाओं के नामों में दोनों ग्रंथों में कोई अंतर नहीं है। कुल मण्डन हरि मफिड्रीप टीका में वर्तमान ऐसे मण्डन का भी जीवन वृद्धि दिया है जो कुल मण्डनप्रीदीप में नहीं मिलता। निष्टा के अनुसार इन मण्डनों के नाम इस प्रकार हैं:-

(१) धर्मकर्म निष्टा - हरिदास
(२) बालोवाणिष्टा - ठाकुर मवानदास, कृष्णदास और हरिदास
(३) कीर्तन की प्रेमकाविनिष्टा - वृद्धनिगम, कविवालामिश्र, श्रीकृष्णदास, मवानदास
(४) कृष्ण - श्रीराम श्रीराम निष्टा - माधवदास
(५) उपयोग और लोहाड़ महिमा निष्टा - उग्रेन

बसुदू कुल मण्डन हरि मफिड्रीप टीका में कुल २६० मण्डन का जीवन वृद्धि ६४७ पुस्तकों में दिया गया है। इस ग्रंथ की उत्तीर्णीय धार्मिक प्रकार है:-

(१) यह नामाविरित मण्डन हरि मफिड्रीप कुल मफिड्रीप बोलिनिष्टा की गण-शिकार है जिसमें टीकाकार ने मण्डन के जन्मकाल, निवास-स्थान, जीवन की अवैधिक घटनाओं, रहतालों और विचार का अध्यात्म उल्लेख है।
(२) इसमें कुल बाणायात्रियों की युग परम्परा व वेशुक्त प्रस्तुत किया गया है जिसके सम्बन्धायाचित्र का इतिहास जानने में प्रयोग सहायता मिलती है।
(3)- हमें बन्य मक्खलार में अर्थात मक्खलार में अर्निका अतुलित है जिसका उस्लप घुलकती हुई में किया जा चुका है।

(4)- टीकाकार ने मक्खलार के जीवन कुछ को अर्निका प्रभावशाली बनाने के लिए उल्लेखित "रामचरितमानस" के निष्ठाकरण निष्ठाहार रचनाओं के उद्देश्य हैं। हमें अर्निका टीकाकार ने मक्खलार में अर्थात मक्खलार की रचनाओं के भी उद्देश्य प्रस्तुत किये हैं।

(5)- अंततः उल्लेख की हाल यह है कि टीकाकार ने महाभारत के लिए 24 निष्ठाकरण को महत्वपूर्ण मानता है क्योंकि यही निष्ठा के शक्तार महत्त्व करने के बख़्शा मीठा हो जाता है।

62- मक्खलार पिपलिका - मक्खलार:-

नारी प्रकाशारिणी नमः, साराणारिणी के कुमारेण 2751.676 पर ' मक्खलार - पिपलिका ' तामृकुण्डु दुर्मिलात है यतिके लेर मक्खलार है। यह 280 पवित्र में लिखित व पत्रलाल है। इसकी रचना कलापुर में तंत्र 1.662 विभा के भागी बदी तीन को मुहहु। मक्खलार व्यवहार विशेषताओं के शिष्य थे। रचनाकार और अपने गुरु का वर्णन रचनाकार ने यह ग्रंथ के पत्रांक 280 पर यह प्रकाश किया है:-

केशनारिणी मुख पर ध्या करो तव कोय। मक्खलार वर गुरु देवार शाक्त जय। श्री गुरु केशनारिणी की कृपा की विकाय। शिष्य बनायो अपने में लिखो क्वाय। श्री मक्खलार पिपलिका वहित सम्प्रदायमुकु तीराम जी ज्ञाप सुहाम श्रवणमु।

जहाँ गुरु तिर्मितीरिव सजन लेख हृदयार।
हुँ मान रहता कैः लिपिबद्ध व्यक्त हृदय ईशार।
शहर कलापुर जाति प्रेमकथा अक नाम।
दान गुरुकुल प्रेमसागुरु तीरामाराम।
पह गुरु तिर्मिति सुनो चार वरन मे कोय।
तीरामाराम प्रसाद मे रामकथा वर हृदय।
राव लागर नाम विष्णुन दर समीप निवासनम्।
लिखत भुज्जलानन्द भन्दार्यम्। पूजा प्रति।। श्रम
भित्ति मादी बढ़ी १ सो १६६२ विक्रमी।

कर्म-विधाय की दृष्टि से हमें नामाविशिष्ट मकामाल और प्रियादास
कृत मकरस्वरूपिनी टीका को उद्वृत करने हुए उन पर तिपःणारी लिखी गयी है।
किंतु काँस्य लघुकरामचित्रमाल, कविताकली शायद से उल्लासरण करने के बाथ
अपने वर्णन को पुष्ट बनाने के लिए संक्षिप्त तथा पौराणिक ग्रंथों के प्रमाणों भी
प्रस्तुत किये है।

इस टीका में १९५५ अनुसूची है। अतः यह मकामाल और मकि-
शिवकृत मकरस्वरूपिनी टीका पर लिखित जुड़े अनुसूची सहित पंक्तिदार टीका है।

६३- मकामाल- मकरस्वरूपावलितक- श्री सीताराम शरणा भापायनावली-रूपकला।

प्रस्तुत " मकरस्वरूपावलितक " के रचयिता श्री सीताराम शरणा
भापायन अनुसार। रूपकला भी है। रूपकला भी ने नामाविशिष्ट मकामाल और
प्रियादास कृत मकरस्वरूपिनी टीका के पर वार्षिक तिलक लिखा है। इस
ग्रंथ का प्रमाण संस्करण सो १७४६ वि० में बाह्री के बादु बलदेव नारायण वकील ने
शीघ्र चित्रों में प्रकाशित कराया। अभिलेख संस्करण सो १७४७ वि० और सो १६५२
वि० में नकल किए गए, लक्षण से प्रकाशित हुए। श्री रूपकला की श्रीवास्तव
काल्यन सुंदरी तपस्वी राम शीतारामीय कालस्थ के बातम्ब जो जिनका जन्म सन् १७४०
है। में हुआ और सन् १६५२ में कैरांग धारण का क्षेत्रमय में रहने लगे। इन्होंने
" मकरस्वरूपावलितक " के अंतिक ज० ग्रंथों का प्रामाण्य किया जो नवमी
किवा किवा, लक्षण से लक्षण यज्ञ चित्र चित्र, वार्षिकपुरी वें प्रकाशित हुए हैं।

" मकामाल मकरस्वरूपावलितक " भी लक्षिकार ने मकामाल और
प्रियादास कृत मकरस्वरूपिनी टीका के पर वार्षिक तिलक दिये हैं जिनमें घटना
के जीवन का समकालीन घटनाओं का उल्लेख की गयी है। ये घटनाएँ

८- रूपकला- मकामाल मकरस्वरूपावलितक, पृ० ६६२
रूपक्ला - मक्कमाल-मक्किसुधास्वादिक, पृ० ६६०।
(1)- रुपकाला ने इस टीका में मकरण के जीवन की महत्वपूर्ण बुनियादी दी है जिसके मकरण के ईंटिकासिक परिवर्तन में पदार्थवाद सहयोगी मिलती है।

(2)- इसमें मकरण के दौर में सशक्तिकारता सहित प्राणवधारण के आवाहन के अधिकतम का विज्ञापन भी व्यक्त करने में तिलकार ने अपनी तंत्रज्ञता दिखायी है।

(3)- नामादान का ने जीवन-विश्वास तथ्यों को प्रस्तुत करने में तिलकार ने अपनी तंत्रज्ञता दिखायी है।

(4)- टीकाकार ने मकरण के जन्मवात, उपस्थितिकाल, गूढ़, रचनावृत्ति, निधनकाल बृहदे पर प्रामाणिक सुनिहार दी है जिसके यह पुस्तक जीवन की कृति में रचना जा सकता है। इसका समुचित परिवर्तन परबर की विशेषता का विवाद है।

(5)- प्रियादास की जिन मकरण की टीका करने में मौन रहे हैं, उनपर भी रुपकाला ने अपनी तंत्रज्ञता दिखायी है।

(6)- विभिन्न उल्लेखीय वात यह है कि इस पुस्तक में मकरण की परम्परागत यथायोग्य तथ्यों की सूची भी मिलती है जो मूल्यांकन है। इस प्रकार यह लेखक की शौकियत का व्याख्या उपस्थित करता है। इस प्रकार यह मकरण तथा उनकी परम्परा सहित इनके महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रकाश में लाने वाला ग्रंथ है।

६८- श्रीमकमल - मरक्तसारियनी व्यासकाः - व्यासकार - श्रीरामकृष्णदेव गर्गः-

प्रस्तुत ग्रंथ 'श्री मकरणाल' में नामादान कुल मकरण की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए तिलकार ने 'मकरणकार्तिक' गृहु सत्य में दी गई है जिसपर श्री रामकृष्णदेव गर्ग ने व्यास (ग्रंथ) लिखा है। इसका प्रथम संस्करण 2017 वि.से परेरामरुरी (सलमावार) की श्री नवो मात्र श्री निम्बाकार्य-चार्य और श्री ज्ञानदास साहित्य अकार्य भी तिलकारक द्वारा प्रकाशित हुआ। जिसके प्रधान सम्पादक श्रीवर्त्ती-वल्लभराम, वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ, श्री वृन्दावनश्री भी। इस मकरण की व्यासका का नाम श्री मकरसारियनी नाथाराम टीका का और रचनाकार वि.से 2016 की फाल्गुन सुधी रामारी रक्षाबिष्ट है।

यह ग्रंथ '६६० पृष्ठ' में है लेकिन इसके बाद श्री वैष्णवदास कुल मकरण-महात्म्य (पूरा) प्रकाशित है। यह के बारें में २० पुस्तकें रेखितका में प्रधान सम्पादक अनुदाता: मेहराबली अग्रवाल

६- श्री रामकृष्णदेव्यार - श्रीमकमल - प्रज्ञ ६४९।
ने मक्षिमाहिमा, नामादास जी से पूर्व इंडी रचनाकारों की वाणिज्यों में मक्षि - महिमा, नामादास जी का परिचय रच जी कृत, मक्षिमाल की टीका निपुणियाँ, अनुवाद, भंड में विद्या, रचनाकार बाबादे विचारों पर विचारन प्रस्तुत किया है।

हीरे डूबिया में पूर्व उद्योगकर जी शायद, हिंदी निपुणी, निश्चिन्त, नामादास जी, वायरा ने मक्षिमाल और उसके टीककार पर उद्देश्य में प्रकाश डाला है।

तद्नुसरण श्री माधवादास जी ने मक्षिमाल - रामचुंब - रामानंद ' श्रीरामकुंज लेख लिखा है जिसमें रामचुंब और रामानंद के सम्राट की अभिव्यक्ति सिद्ध की गयी है।

ग्रंथ के पृष्ठ से ६४५ से ६६० तक विस्तार वादि के बाकी पर मक्षिमाल वाहित्य विचारों प्रस्तुत किया गया है जो विभिन्न महत्वपूर्ण है।

वर्ण-विचार की दृष्टि से इसकी कल्पना उल्लेखनीय विशेषताएँ निम्न लिखित हैं :-

(१) - ग्रंथ के मालिकरण में श्री मिश्राकार्य जी का स्थान स्पष्ट किया गया है, जिससे स्पष्ट है कि व्याकरणान्त श्री मिश्राकार्य सम्राट का गुरू है।

(२) - टीककार ने टीका के वन्तुल विचित्र पौराणिक तथा वहाँ ग्रंथ से उद्देश्य प्रस्तुत होते हैं।

(३) - इस ग्रंथ में वर्तमान श्री भावाल जी कृत मक्षिमाल और बालकार विचारित ख़ुशुन नामादास भी भावाल आदरित किया गया है।

(४) - श्रीरामकुंज इक्षियां - श्री मक्षिमाल मक्षिमाल वाहित्य, पृष्ठ ६, कृति विा श्री भावाल और बालकार विचारित
पूर्ववर्ती पृष्ठों में मंडलाल तथा उसकी हिंदी काब्य में मिलने वाली परम्परा ये सम्बन्धित रचनाओं का जो संदर्भ पूर्वपुरुष प्रस्तुत किया है उसके विष्केषण द्वारा इस परम्परा की रचनाओं की विश्लेषण कल्पना तथा शैली दोनों ही दृष्टिकोण से देखने पर इन रचनाओं के विविध रूप प्रकाश में दाँत है जो कि संरक्षण में इस प्रकाश हैः

कृपया प्रकाश की ये रचनाएँ है जो कि मौलिक है और उनमें नामांकन का मंडलाल की वर्तमान-शैली का पूर्वकाल वर्तमान लिखा गया है। ऐसी रचनाओं में सम्बन्धित मंडल अथवा साथ के योजना की शिल्पी एक या एकाधिक विशेषताओं को सृजन किया गया है और उपलब्ध संशोधन में सामाजिक वागहिंसा संकीर्णता को नहीं अपनाया गया है। ऐसी रचनाओं की वृहत हर प्रकाश हैः

(०) मंदन-नामांकन - इववाद
(१) राजकवाद
(२) युक्तियाँ
(३) मंडलमाल - इववाद
(४) मंडलविदाली - जंगवाद
(५) मंडलमाल - ज्ञवाद
(६) मंडकानिदाए - वैधाविदम
(७) मंडल पक्सवी - समाबर
(८) मंडल विदाली - हरवाद
(९) मंडल विदाली - दरवाद
(६०)- महामाल - चालवाल
(६१)- महामाल महात्मा - केस्वाववास
(६२)- रावीक निकोलास - साधुकरण
(६३)- महामाल महात्मा - माकवादा
(६४)- महामाल रार्डिकाली - महाराजा रघुराजसिंह
(६५)- उच्चरचित्र - रघुराजसिंह
(६६)- उच्चरांग - महामाल — मार्टेन्हु हर्शचंद्र
(६७)- महामाल का दृष्टान्त - केस्वाववास
(६८)- नामग्रंथमाल - राजावरण गोसवानी
(६९)- महामाल महात्मा - केस्वाववास विदिनाथ
(७०)- महाराण्यिनी - स्वामी मोही बाबा
(७१)- बेह पीमाल - रस्सेल
(७२)- महामाल-किशोराम।

क्रियात्मक कोटा में आने वाली रचनाओं के हैं जिनमें नामांकों द्वारा प्रतिष्ठित
विश्वसनीय उद्देश्य-निर्देश उद्देश्य-निर्देशक बनाना का ती तैयार है जिन्हें
बहुत सुविदा मान कर हैं। सम-वास्तविक परिस्थितियों तथा विचारों में
सीख तथा नामांकों के द्वारा भी ही तृप्ति पर किस रूप में प्रकाशित नहीं
किंतु इनकी अपनी एक विशेष उपयोगिता तथा सहायता है। प्रियावर ृक्त
महामाल निर्मिती में ती नामांकार के "महामाल" के मानक की नामशालिका
है, किंतु अंतर रचनाओं में अंक होते रहनें के नाम बात हैं। यह कहने की
वास्तविक नहीं, कि ये प्रकाशकों नामा के परवर्ती काल की है, यूरोप के
दौरः-कालीन भारतीय साहित्य परम्परा के बनसीलेन के क्षेत्र में किफी के किफी रूप में
सहायक थी हो सकती है। इसके विश्वसनीय मनोहरकार की ृक्त 'समप्रताचधर
cहोनी की रचनाओं में मानने के संप्रताचधर की कारणी का कारणी का
सकता है और इस कारण यह समप्रताचधर की प्रमाण-चूँकि परम्परा के
बनसीलेन में प्रमाण-चूँकि सहयोगी सिद्ध हो सकती है। इस कोटा में आने
वाली रचनाओं निम्नलिखित हैं:—
(1) - सम्प्रदाय वैधिक - मनोहरदास
(2) - मकरमाल - जगन
(3) - मकरमाल - भैन
(4) - मकरसूरिणी - बिप्यावास
(5) - मकर नामाली - बुद-दरवास
(6) - फित रक्षक नामाली - चन्द्रलाल
(7) - मकरन के नामशाला - बरीवास
(8) - मकरमाल - परसराम
(9) - मकर नामाली - भगवत राजक
(10) - मकरमाल - रायवाद
(11) - चार सम्प्रदाय कार्नी-मालवाल
(12) - बलद विष्णुलौल - दालवाल
(13) - प्रातः स्तम्भमाल पाठ - मारवेंदु हरिशचंद्र
(14) - प्रातः स्तम्भ तोषिन - मारवेंदु हरिशचंद्र
(15) - मकर नामाली - बलभद्रनाथ

ग- विस्तृत प्रकार की ऐसी रचनाओं की इस परम्परा में मिलती है, किन्तु रचनात्मक उपरोक्त रचनाओं के अभाव में, ऐसी रचनाओं का क्रम-बदल परम्परा के अनुसार नहीं मिलता है। ऐसी रचनाओं के नामालवाल की द्वारा प्रतिष्ठित सम्प्रदायार्थ - विनिमय में उपर उठाकर सभी मकर - साधन के यथागठण का उद्देश्य 'दृष्टिकोण' नहीं मिलता है। एक दृष्टिकोण होता है जिसका नामकरण का क्रम-बदल परम्परा के अनुसार १८०४ में अयोध्या-कुर्मि प्रस्तुत बायडः १८०६ की प्रस्तुतिकोण होने के कारण एक विश्लेषण अथवा संदर्भित विकास का उनमें अभाव है। कृतदेव कृषिविद्यालय की विशेष भव्यता जगदिष्टकर्म सामीति की और वेदार्थ तत्कालीन वक्ता वक्तव्य नहीं है। विश्व-दरवास के दृष्टिकोण से ऐसी रचनाओं के नामालवाल की द्वारा प्रतिष्ठित बायडः की विवरण जैसे प्रकार का है। इस वर्ण में बताते वाली रचनाएं इस प्रकार हैं:-

(१) - राजक भव्य माल - मालवाल विप्यावास
(1) - राक्षस वनन्य - उचमदास
(2) - राक्षस परिष्वी - उचमदास
(3) - वन्नपकार - जनलाल
(4) - राक्षस राक्षसकार - जीवाराम खुलपिराय
(5) - शीर्षिकाधावलम मक्खली - ध्रुवदास शुक्ल
(6) - श्री राक्षस मक्खली - गोस्वामी यजुनानवलम

उपरिनिर्दिष्ट वैधिक रचनाओं के रचना-श्रेणी एवं दृष्टिकोण-पेश से प्रकाश में आय-वाले विविध रूपों के अनुसार चौहां कर्में में आय-वाली रचनाओं मक्खली माल की टीकाओं तथा व्याख्याओं हैं। यह उल्लेखनीय है कि इन सब में ध्रुवदास भी की मक्खली दृष्टिकोणी टीकाका सर्व प्राचीन तथा सार्थिक विश्लेषण हैं और इतर टीकाकारों ने उन्हें को वास्तविक रूप में बपने समय रक्षण उपलब्ध कराने का निर्दिष्ट लक्ष्य रखा है। इन रचनाओं के नाम निम्नलिखित हैं:

(6) - मक्खलीमक्खली दृष्टिकोणी - ध्रुवदास
(7) - राधाकृष्ण मक्खली - अष्ठाकोष दशरथ
(3) - मक्खली शास्त्रियों - लालदास
(4) - राक्षस प्रकाश-मक्खली दृष्टिकोणी - अनंतर राक्षस
(5) - मक्खली की रचना - तैवानवर्दनमस्तिक
(6) - मक्खली मक्खली - बालकराम
(7) - मक्खली धर्मिक प्रकाशिका टीका - ज्योतिर्मयान भक्त
(8) - मक्खली मक्खली - प्रताप शिंह
(6) - मक्खली मक्खली - धर्मस्वाधिकारिक - रूपलाल
(10) - मक्खली मक्खली प्रारम्भिक व्याख्या - राममुख्यान्दियार

इसी रचनाओं में नामादास के वास्तव की कर्त्तव्यशिष्टता दिखाई है। इनकी उल्लेखनीय विशेषता यह है कि ये टीकाकार अथवा व्याख्याता के चरित्र का सम्मान उद्घाटन करते हैं, जो सर्वजनिक तथा वास्तविक रूप से कार्यवाहक जीवन के विविध पदों को भी प्रकाश में लाते हैं। इसी रचनाओं से प्राप्त होने वाले द्वितीयता, क्षारीर तथा कार्यवाहिक योगदान परम्परा
की महत्वपूर्ण निषिद्ध कही जा सकती है।

च- प्रत्येक के में अनुवादों को लिखा जा सकता है। प्रस्तुत वाक्य में 'महत्माल' के हर साइट माध्यम में लिखी गयी अनुवादों को नहीं लिखा गया है। अनुवादक बने हुए की सीमाओं को देखकर इस कार्य के प्रवक्ता के अनुसार लिखा जा सकता है जिसका निषिद्ध हर साइट माध्यम के मौलिक महत्माल वे हिन्दी में अनुवाद किया गया हो। इस वार्ता में उन्हें वाली के एक ही रचना लेकर को प्राप्त हो लेंगे हैं और वह है बाहुल्य शास्त्रियों के द्वारा, हालांकि मौलिक चेतता का हिन्दी अनुवाद। क्या कि पहले कहा जा सका है कि नामांकन साहित्य में महत्माल के हर साइट माध्यमों में अनेक अनुवाद छिपे हैं। इन वाक्यों के वर्तमान समय का साहित्यिक संदर्भों से मदद ही, उत्तर को है। हालांकि महत्माल की वशवाड़ी परम्परा में सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में बात है कि इस चौक द्वारा अनुवादक का हिन्दी में हर साइट माध्यम के अनुवाद छिपे हैं, तत्काल महत्व न हो। किन्तु महत्माल की वशवाड़ी परम्परा में सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में बात है कि इस चौक पर अनुवादक के हिन्दी में हर साइट माध्यम के अनुवाद छिपे हैं किन्तु यह अपनी परम्परा उन माध्यमों का रचना के हिन्दी में पहुँच लाती है और परस्पर साहित्यिक अनुरूप अनुवादक को प्रभावित करती है। बच्चे न होगा कि ऐसी रचनाओं से हर तथ्य को रचना उपस्थित करती है कि भारतीय माध्यमों का निविद्ध साहित्य निषिद्ध प्रकार देखता माध्यम -तक एकता को प्रभावित करते हैं में समर्थ हो सकता है।

उल्लेखित रचनाओं का अध्ययन प्रस्तुत करते समय उन्हें प्राप्त होने वाले लेखों को पूर्ववर्ती प्रस्तुतों के अनुसार यथार्थवाद हृदियों लिखा जा सकता है। किन्तु हर के राय ही हम ने है। परस्पर साहित्यिक अनुरूप अनुवादक का निषिद्ध प्रकार का है। जिन्हें प्रकाशित करते से हर परम्परा की रचनाओं की जीवन प्रकाशित की होती है और इन रचनाओं के अध्ययन में प्राप्त होने वाले अन्य निषिद्ध प्रकार का है।

(३)- परम्परा की वालिकाओं के द्वारा हुए ये रचनाओं मस्तिकाल वे लेकर भाषा के उपबत्ति हैं। रीतिकाल के दरबारी वालिकाओं के बीच जब शृंगार प्रत्यावर्तन का सृजन हो रहा था,उन समय भी महत्माल की परम्परा में वाली पुस्तक रचनाओं का संस्तुत यह प्रभावित करता है कि मस्तिकाल वे लेकर वालिकाकाल तक के
हिन्दी काव्य में मथिमाला की अन्तःसतिला किसी न किसी रूप में सत्य प्रवाहित रही है। इस दीर्घकाल की मच्छरापनी में निश्चित रूप से मथिमाला की परम्परा के वर्तमान भाव बाले अनेक ग्रंथों का प्रणाली हुआ जिनमें से अनेक तो विनिष्ट और आलमप्राय हो चुके हैं। बहुत ऐसी रचनायें हैं जिनकी चुनना-मात्र प्राप्त होती हैं किन्तु जूला स्थान पर भाव वस्तुपत्थ हैं जिनकी सूक्ष्म पूर्वकाली पृष्ठाँ भी डूंग जा चुकी हैं। इनके विपरीत, ऐसी अनेक रचनाओं के भौतिक सुंदरावनापूर्वी पृष्ठाँ भी डोंग जा चुकी हैं। इनके विनिष्टकाली अनेक रचनाओं के व्याप्तिक का सम्बन्धावना का यूरा-दूरा जल मिलता है जिनकी न टो कोई चुनना मिलती है और न देखना जी देखने में खारी हैं। इतना सब होते हुए भी, इस परम्परा में जिन्हें वाला इसने रचनायें अपने व्याप्तिक के तत्त्व हमारे समक्ष हैं जैकि मथिमाला की बख्शी और व्यापक परम्परा को प्रभावित करती हैं।

(2) - इनमें सात उनके वाले उनके यशोराम-मात्र के शादा पर उच्चकेतिया के काव्य का निर्माण संबंध नहीं, यह वो मार्षिक-मात्र के शादा पर होता है।

विनायक की दुर्घटना से मथिमाला और हसनी परम्परा में जब किसी को होड़कर उच्चकेतिया के काव्य प्रकाश के व्याप्तिक भी होते। अधिक खुफ़खुफ़, मनोहरनाथ, प्रियाराम, भावांतरक, राधाराम, न्यायराज रघुराजसिंह, कुलदिव्य, महानन्द-हरिरंजन, सुधानन्दम ापूर्व तथ्य मथिमालकारों का काव्य के कषाप ग्रामित को स्वाभाविक है। विनयपुर इनमें सात काव्य ग्रामित नहीं हैं वाले काव्य देशी, वाली स्वाभाविक भार्य के बादार पर इनके काव्य का मुख्यालय किया जा सकता है जो हमारे परवतार अभाव का विवेक होगा। निस्त्रांवह इस परम्परा का काव्य मानव-भौति और विनिष्टते के नामस्त्र में बाल के साथ उच्चकेतिया का प्राप्त भी हुआ है। स्पष्ट हो यह इन्हीं से विवरणत अनेक विनिष्टताओं को वाद के सम्बन्ध होने से कवि और मकर-साहित्य के महत्त्वाद्धि का विद्यालय का प्राप्त भी हुआ है। इस दुर्घटना से परम्परा की रचनाओं का निवेश महत्त्व है। यहाँ नहीं, इस परम्परा में प्राप्त होने वाली ग्रंथ की रचनायें वाहित्य में यथा महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं जैकि उसमें ग्रंथ का विस्तारण रूप मिलता है।

(3) - मथिमाला की परम्परा में इस रचनायें की नहीं हैं जिन्हें जीवनी ग्रंथों की कोटि
में रचा जा सकता है क्योंकि इनमें जीवनी साहित्य की प्रमुखता को नगाने का प्रमाण मिला गया है। इनमें श्रीनाथ जी की कथा (वृन्दावनदास) मंकमाला रामप्रसादकृति - रघुराजसिद्ध, मधुकिंविनाद (बोधासिद्ध), श्रीहिंदुराध्यायमंकमाला (प्रमाणादश शूल), हल्दारद रचनाविनों के नाम उल्लेखित हैं। यथार्थ मंकमाल केवल मंकानी के जीवन की फलिता ग्रस्त करता है परन्तु उसके परवर शाा जीवनी साहित्य के शील के दर्शन होने के कारण हिंदी साहित्य में इसके एक नया मोड मिलता है। यह पूर्वकाल विकास से प्रकट है कि इन मंकानी मंकानी-साहित्य का चरित्र वरिष्ठ है जिसका उद्देश्य सर्वप्रथम ज्ञाता में इन मंकानी के प्रति अभाव, निष्ठा, विश्वास उत्पन्न करना चाहिए है। साथ ही इनके महत्त्व ने मंकानी का प्रभाव प्राप्त हो चुका है।

(४) -
पूर्वकाल विकास में मंकमाल और उसकी परम्परा में वधिकत मंकानी - साहित्यों और कवियों की एक विस्तृत नामकालीन मिलती है जिसके ब्रह्मार हिंदी साहित्य काल में नैस ऐसे कवि प्रकाश में आते हैं जिनका विकास हिंदी साहित्य की गुणों में उपलब्ध नहीं होता। इन कवियों के नाम नायक, सुखान्त, वदान्त, निपट निरंजन, पर्वतदास, रायचन्द्रहरिवंशी, दुर्गावत शास्त्री, रामचंद्रहरि, नारायणपुरी रविकेन्द्र, जनवाजीकोशीरस, उमापी, बिसारसरास, देवदास, जीवन रामसाह, नृसिंधार, कैवराम, रामभ्रजासरास, उदित - प्रकाश, श्यामदास, उर्फलिटा, श्यामसाहित्य रामचुंडर, नंदलाल रामचुंडर और ताहिली प्रकाश हैं जिनके जीवन काव्य-रचनाओं शादि के पत्राय में परम्परा कब्राय में विचार से विचार किया जाता है।

(५) -
वन्द में यह कहा जा सकता है कि मंकमाल और उसकी परम्परा में रचनाओं के मंकानी के जीवन के प्रमुख तत्त्व व्यदार, ज्ञातम शादि पर प्रकाश पड़ता है जिसके प्रति उनके लिए उनके जीवन के मुक्तां की प्रतिष्ठा होती है। मैंने दी शादि के उपर भरोसा किया कि महत्व ने रचनाओं का प्रकाश प्राप्त होता है। आत्म स्वयं मानविकी का विस्तार साहित्य का जीवन जा सकता है। क्या कहा जा सकता है कि महत्वपूर्ण शाख की बहुत महत्वपूर्ण है व्यापक कारणों शादि का भी मंकानी के कारण उदाहरण होने की
अनेक घटनाओं का विवरण इन मक्खली में मिलता है। इसलिए, उत्तर के बारे में मक्खि का भाषण था। यही कारण है कि हृदें मदनगोपाल गुप्त ने एस युग की चेतना को ध्यानभीत होना सिद्ध किया है।

क्षण कि उपर निष्पक्ष क्षण जा हुआ है कि इस परम्परा में विषय मजे वे चरित्रों का भारतीय धर्म-वाणिज्य के हस्तियों के इतिहास के दृष्टिकोण से अपना निजी महत्व है, शत्रु हर परम्परा की कृतियों के विविध पदार्थों का अभ्रोभि करते समय सर्व-प्रथम उद्देश्य ईतिहासिक पद्धति पर विचार कर लेना उपलब्ध होगा।

9- हृदें मदनगोपाल गुप्त – मध्यकालीन हिंदी साहित्य तथा भारतीय संस्कृति और समाज (अनुक्रियाप्रद)